आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

रक्षक

छ:माही पत्रिका, अंक-10 (अक्टूबर, 2020 से मार्च, 2021)

कीटनाशक, फंगसनाशक, शाकनाशी, बीज, उर्वरक, बॉयो पेस्टिसाइड्स, सूक्ष्म पोषक तत्व

हि इ लि
समृद्धि हेतु सुरक्षा

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(पूर्व में हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड)

(भारत सरकार का उद्यम)

इंडिया केम 2021 के दौरान ''वैश्विक कृषि रसायन उद्योग पर सम्मेलन'' में माननीय श्री पुरूषोत्तम रूपाला, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार का स्वागत करते हिल (इंडिया) लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री एस.पी. मोहन्ती। माननीय मंत्री महोदय द्वारा 'कृषि रसायनों के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग' पर किसानों को शिक्षित करने की ओर हिल के प्रयासों की सराहना की गई।

रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग, भारत सरकार एवं फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री (फिक्की) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इंडिया केम 2021–11वीं द्विवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी एवं सम्मेलन में हिल (इंडिया) लिमिटेड के स्टॉल का उद्घाटन करते श्री सदानंद गौड़ा, तत्कालिक माननीय रसायन और उर्वरक मंत्री, भारत सरकार।

रक्षक

छ:माही पत्रिका, अंक – 10 अक्टूबर 2020 – मार्च 2021 तक

मुख्य संरक्षक

डॉ. एस.पी. मोहन्ती
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

संरक्षक

श्री एस. चट्टोपाध्याय
निदेशक (वित्त)

संपादक

श्री अजीत कुमार

परामर्श समिति

श्री पी.सी. सिंह
श्री शशांक चतुर्वेदी
श्री एम.एस. अनिल
श्री अनिल यादव
श्री राजेन्द्र थापर
श्री अनिल सूद

सहयोग

श्री ओम प्रकाश साह
श्री अनुभव कुमार

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से.....	2
संदेश – निदेशक (वित्त)	3
संपादकीय	4
भारतीय परिप्रेक्ष्य में फसल विविधीकरण	5
अनुशासनिक जांच और कार्यवाही...	10
विपणन के महत्व को जानें और समझें	11
लीन विनिर्माणन और अपशिष्ट का प्रकार	13
देश की आत्मा है हिंदी	16
हिन्दी : संघर्ष की कहानी	20
भारत में वर्चुअल कोर्ट का भविष्य	22
एमसीए 21 संस्करण 3.0 : डिजिटल कॉर्पोरेट अनुपालन पोर्टल	25
वस्तु एवं सेवा कर 2021: कड़े नियम हुए आसान	27
बजट 2021 आय कर: बजट के बाद की 10 बातें	28
एस.ए.पी. – ई.आर.पी. की भूमिका	29
क्या है इंटरनेट? जानिए इंटरनेट कैसे काम करता है	32
पर्यावरण और मानव	34
संतुलित विकास – संतुलित प्रकृति	36
तुलसी	38
मोबाइल गेम और वीडियो गेम के दुष्परिणाम और सावधानियाँ	39
कमज़ोर पाचन शक्ति के कारण एवं उपचार	42
आनंदोहम् : मैं ही आनन्द हूँ	43
आत्मवलोकन	44
मन रे काहे न धीर धरे	45
अप्प दीपो भव : (Be your own light)/असली सुंदरता	46
कोरोना	47
संक्रमण का खतरा	49
कोरोना के विरूद्ध टीकाकरण	50
कोरोना वॉरियर्स	51
चंद शब्द सुनहरी यादों के नाम	52
ज़िंदगी / नारी / माँ तेरी ममता की छाँव	53
ओम की महिमा / किस्मत की बात / चलो तो सही...	54
आदमी की औकात	55
हिन्दी का थोड़ा आनंद लीजिये.....मुस्कुरायें....	56
समय का बदलाव	57
बचपन	58
प्यारी माँ, न्यारी माँ / जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं	59
तुझे जीना होगा / जब जीवन में मुसीबत आये	60
बीज उत्पादन में हिल (इंडिया) लिमिटेड के योगदान के संबंध में अन्य संगठनों द्वारा की गई विशेष समीक्षा/टिप्पणियां	61
उपलब्धि	62
हिल (इंडिया) लिमिटेड सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2020	63
हिल (इंडिया) लिमिटेड गणतंत्र दिवस समारोह	64
साम्प्रदायिक सद्भाव / देशीय सुरक्षा दिवस	65
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह	66
हिल (इंडिया) लिमिटेड उद्योगमंडल यूनिट में विश्व हिंदी दिवस 2021 का आयोजन	67
हिल में राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं संगोष्ठी	68
नराकास के तत्वावधान में आयोजित दोहा पाठ प्रतियोगिता	69
राजभाषा निरीक्षण	71
सेवानिवृत्ति/स्वेच्छा सेवानिवृत्ति	74
हिल (इंडिया) लिमिटेड परिवार में शामिल होने पर निम्नलिखित नए कार्मिको का स्वागत है।	75
आपकी पाती	76

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। अत: पत्रिका में निहित रचनाओं के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड प्रबंधन उत्तरदायी नहीं है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से.....

हिल छ:माही गृह पत्रिका 'रक्षक' का 10वाँ अंक अपने सुधी पाठकों को सौंपते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का ही नहीं बल्कि देश को एक सूत्र में पिरोने का भी सशक्त माध्यम है। इस पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करने के साथ–साथ कंपनी के कार्यकलापों, योजनाओं, उपलब्धियों और कारोबार संबंधी नवीनतम जानकारी के अतिरिक्त अन्य उपयोगी जनहित विशेषकर किसानों के लाभ के लिए महत्वपूर्ण सामग्री पाठकों को उपलब्ध करवाने का प्रयास करते हैं। यह हर्ष का विषय है कि पत्रिका अपने उद्देश्य का सफलता पूर्वक पालन कर रही है।

आप सभी जानते है कि हिल (इंडिया) लिमिटेड जन स्वास्थ्य एवं कृषि समुदाय के लिए तीनों अर्थात कृषि रसायन, बीज और उर्वरक की पूर्ण बास्केट प्रदान करता है। जन स्वास्थ्य के संबंध में मैने पिछले अंक में अपने संदेश में उल्लेख किया था कि कंपनी ने यूनिडो के सहयोग से ''डी.डी.टी. के विकल्प का विकास एवं संवर्धन'' परियोजना के अंतगर्त रसायनी यूनिट में लंबे समय तक चलने वाली कीटनाशक युक्त मच्छरदानी (एल.एल.आई.एन.) के विनिर्माणिन के लिए पूर्ण संयंत्र की स्थापना की है। इसके लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड को माननीय श्री मनसुख मांडविया, मंत्री, रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार से प्रोडक्ट इनोवेटर ऑफ द इयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया । साथ ही साथ कंपनी यूनिडो के सहयोग से नीम आधारित उत्पादों के लिए भी कार्य कर रही है, जो जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में उपयोग में लिए जाएगें।

देश के विभिन्न क्षेत्रों में हिल द्वारा समय–समय पर किसानों के लिए ''एकीकृत कीट प्रबंधन एवं कीटनाशकों के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर'' प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं, जिससे कृषक और कृषक कर्मियों का जीवन सुरक्षित रखा जा सके। इस प्रशिक्षण में यह भी बताया जाता है कि किस प्रकार अविवेकपूर्ण एवं अधिक मात्रा में कीटनाशकों का प्रयोग न केवल भूमि को अपितु भूमिगत जल, पशु, पक्षियों को भी नुकसान पहुँचाता है तथा वायुमंडल को भी प्रदूषित करता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को देश के विभिन्न प्रदेशों में और अधिक किसानों को लाभान्वित करने के लिए व्यापक संख्या में इस वर्ष भी जारी रखा जायेगा। इसी प्रकार, बीज उत्पादन और वितरण में हिल (इंडिया) लिमिटेड को और अधिक मात्रा में बीज उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहन भारत सरकार द्वारा दिया जा रहा है जिससे दलहन और तिलहन के उत्पादन में वृद्धि होगी और देश आत्मनिर्भर बनेगा। आशा करता हूँ कि आप सभी के सहयोग से हम इस नए दायित्व को निभाने में सक्षम होंगे।

कीटों से फसलों की सुरक्षा के लिए मैलाथियान (तकनीकी) का उत्पादन चल रहा है और टिड्डी नियंत्रण कार्यक्रम के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड कृषि मंत्रालय के संपर्क में है ताकि समय पर नियंत्रण कार्य प्रारंभ किया जा सके। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के निर्देशानुसार भारत–ईरान जी–टू–जी के अंतर्गत हिल द्वारा ईरान को 50 मी0ट0 मैलाथियान की भी आपूर्ति की गयी है। जिससे ईरान टिड्डी नियंत्रण में सफल रहा है।

भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया है। तदनुसार भारत सरकार द्वारा मंत्रालयों, कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए राजभाषा नियम, अधिनियम बनाए गये हैं। जिसका पालन करने के लिए हम सभी लोग कृत संकल्प हैं। जिसके फलस्वरूप प्रधान कार्यालय के साथ–साथ सभी अधीनस्थ यूनिटों में भी राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है।

यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि हिल (इंडिया) लिमिटेड को राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए गत तीन वर्षों से लगातार राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार से गौरवमयी कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया है।

हिन्दी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने एवं हिन्दी के प्रचार–प्रसार में पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। मुझे आशा है कि पत्रिका में निहित विषयों से संबंधित जानकारी सुधी पाठकों के लिए उपयोगी एवं रूचिकर सिद्ध होगी।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं सदैव आपके साथ हैं।

एस.पी.मोहन्ती

(एस.पी. मोहन्ती)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

समृद्धि हेतु सुरक्षा

संदेश

रक्षक पत्रिका का नवीनतम अंक आपको सौंपते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि प्रेरणा और प्रोत्साहन के माध्यम से राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार अनवरत बढ़ता रहे। रक्षक पत्रिका एक ऐसा मंच है जो कार्मिकों की सृजनशीलता को उजागर करता है। कंपनी की गतिविधियों को जनसधारण तक पहुंचाने में भी रक्षक अपनी भूमिका निभाने में सफलता प्राप्त कर रही है।

आज पूरे भारतवर्ष में हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में जन–जन की भाषा बन गई है जो भारतवासियों को एकसूत्र में जोड़ती है। हमें हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए सहज, सुबोध और सरल हिन्दी को अपनाना होगा इसलिए हम सभी का कर्तव्य हो जाता है कि हम कार्यालय के कार्य में सरल और आम बोलचाल के शब्दों का अधिक प्रयोग करें। हिन्दी का विकास ही देश का विकास है।

हिल (इंडिया) लिमिटेड ने टिड्डी नियंत्रण कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कोविड –19 वैश्विक महामारी के दौरान उत्पन्न हुई टिड्डी आपदा के नियंत्रण में हिल के प्रयास की कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा सराहना की गई है। हमारा प्रयास है कि फसलों की कीटों से रक्षा करने के लिए पेस्टिसाइड्स, अच्छी पैदवार के लिए गुणवत्तावान बीज और पैदवार को बढ़ाने के लिए उर्वरक की जानकारी सरल भाषा में इस पत्रिका के माध्यम से अपने कार्मिकों के साथ–साथ सभी पाठकों को उपलब्ध कराई जा सके।

कंपनी ने जन स्वास्थ्य क्षेत्र के अंतर्गत यूनिडो के साथ ''डी.डी.टी. के विकल्प का विकास एवं संवर्धन'' परियोजना के अंतर्गत रसायनी यूनिट में लंबे समय तक चलने वाली कीटनाशक युक्त मच्छरदानी (एल.एल.आई.एन.) के विनिर्माणन के लिए पूर्ण संयंत्र की स्थापना की है। इसके साथ ही हिल एल.एल.आई.एन. का विनिर्माणन करने वाला सार्वजनिक क्षेत्र का एक मात्र उपक्रम बन गया है । इस श्रृखंला में कंपनी यूनिडो के सहयोग से नीम आधारित उत्पादों के लिए भी कार्य कर रही है, जो जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में उपयोग में लिए जाएगें।

गृह पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य हिल परिवार के सभी सदस्यों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के साथ–साथ उनकी रचनात्मक प्रतिभा को बढ़ावा देना है। सृजनशील प्रतिभाओं के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम होने के अतिरिक्त पत्रिकाओं का राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान है।

हम राजभाषा, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कृतसंकल्प हैं। प्रधान कार्यालय के साथ–साथ सभी अधीनस्थ यूनिटों में भी राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि हमारी कंपनी को गत तीन वर्षों से लगातार राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार से राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए गौरवमयी कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से पाठकों को संगठन की गतिविधियों की जानकारी मिलने के साथ–साथ पाठकों को सुरूचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लेख पढ़ने का अवसर मिलेगा। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में ''रक्षक'' अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करें, यही मेरी हार्दिक कामना है।

(एस.चट्टोपाध्याय)
निदेशक (वित्त)

संपादकीय

गृह पत्रिका ''रक्षक'' का नया अंक पाठकों के समझ प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। पत्रिका में प्रकाशन हेतु उपयोगी लेख भेज कर पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए सभी लेखकों के सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। जैसा कि आप सभी जानते है कि आज हिन्दी विश्व स्तरीय भाषा के रूप में पहचान बना चुकी है। विश्व की सभी प्रसिद्ध दिग्गज कंपनियों ने व्यापार के दृष्टिकोण से भारतीय बाजार की समीक्षा के पश्चात् भारत में अपने उत्पादों की बिक्री हेतु हिन्दी को ही प्रचार का माध्यम बनाया है। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में अगर हम आगे बढ़ने के अपने सपने को सच करना चाहते हैं तब हमारा मार्ग प्रशस्त करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका राजभाषा हिन्दी ही निभा सकती है। किसी भी संगठन में पत्रिका के प्रकाशन से उस में कार्य करने वाले कार्मिकों को उस संगठन के क्रिया–कलापों की जानकारी मिलती है तथा जन सधारण तक संगठन की उपलब्धियां एवं कार्यपद्धति को पहुँचाने में भी पत्रिका की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

यह अंक रक्षक के पिछले अंकों से भिन्न है, क्योंकि प्रस्तुत अंक में कंपनी की गतिविधियों की जानकारी देने के साथ–साथ जनोपयोगी तकनीकी लेख जैसे भारतीय परिप्रेक्ष्य में फसल विविधीकरण, क्या है इंटरनेट ? जानिए इंटरनेट कैसे काम करता है, कोरोना के विरूद्ध टीकाकरण, भारत में वर्चुअल कोर्ट का भविष्य आदि जैसे विभिन्न विषयों को समिलित किया गया हैं। पत्रिका को रोचक बनाने के लिए कविताओं, संस्मरणों आदि का भी समावेश किया गया है। इस छःमाही में आयोजित संगोष्ठी, कार्यशाला एवं कीटनाशकों के विवेकपूर्ण उपयोग और एकीकृत कीट प्रबंधन पर दिए गए प्रशिक्षणों के चित्र प्रकाशित किए गए हैं।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। इसके बिना आज की पीढ़ी जीने की कल्पना भी नहीं कर सकती। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अंक से हमने सूचना प्रौद्योगिकी के एस.ए.पी – ई.आर.पी. पर एक नई श्रृंखला आरंभ की है, जिसके अंतर्गत आगामी प्रत्येक अंक में एस.ए.पी.–ई.आर.पी. पर पाठकों की जानकारी हेतु रचना प्रकाशित की जाएंगी।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के अनुपालनार्थ अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया जाता है। इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप कंपनी को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से कंपनी को पुरस्कारों से समानित किया गया है। भविष्य में भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग, प्रचार एवं प्रसार के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड सदैव सघन प्रयास करती रहेगी। अभी हाल ही में राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय तथा रसायन और उर्वरक मंत्रालय, रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग द्वारा कंपनी के निगमित कार्यालय का राजभाषा हिन्दी की प्रगति संबंधी निरीक्षण किया गया था। निरीक्षण अधिकारियों ने निरीक्षण के पश्चात् कार्यालय में हिन्दी के कार्यान्वयन की सराहना की।

रक्षक पत्रिका में निरंतर निखार आए इसके लिए सभी सुधी पाठकों से सुझावों की अपेक्षा है। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। हम आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए सदैव प्रयत्नशील हैं। आशा करता हूँ कि विगत अंको की तरह यह अंक भी आपके लिए रूचिकर एवं उपयोगी साबित होगा।

अजीत कुमार

(अजीत कुमार)
अधिकारी (राजभाषा)

कृषि प्रभाग

भारतीय परिप्रेक्ष्य में फसल विविधीकरण

प्रस्तुतकर्ता:-

डॉ. शंकर लाल जाट, डॉ. गीतिक गंभीर, डॉ. नवीन कुमार, डॉ. सुबी एस.बी., डॉ. चिक्कप्पा गंगाधर करजगी, अनुप कुमार,	}	भा.कृ.अनु.प-भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान दिल्ली इकाई, पूसा, नई दिल्ली
डॉ. सी. म. परिहार,	-	सस्य विज्ञान संभाग भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली
डॉ. साई दास	-	पूर्व डायरेक्टर, भा.कृ.अनु.प-भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान,

भारत में, खेती देश के लगभग 55% कार्यबल को रोजगार प्रदान करती है कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय और इस क्षेत्र को मजबूत करने से ग्रामीण क्षेत्रों को सशक्त बनाया जाएगा और शहरी क्षेत्रों में प्रवास को धीमा किया जाएगा। देश विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों से संपन्न है जो किसानों को बड़ी संख्या में कृषि वस्तुओं का उत्पादन करने में सक्षम बनाता है। यदि इस परिवर्तनशीलता को विविध फसलों के उत्पादन के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाए तो भारत न केवल आत्मनिर्भर बन रहा होगा। उदाहरण के लिए, उत्तर-पश्चिमी भारत में कम बारिश होती है, जो भूजल संसाधनों के आधार पर बड़े पैमाने पर चावल की खेती होती है। लंबे समय से यह अभ्यास पारिस्थितिकी और उस पर निर्भर जीवन को प्रभावित कर रहा है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब जैसे कम वर्षा वाले क्षेत्र (500-700 मिमी) से चावल जैसी पानी की खपत वाली फसलों को कम पानी की आवश्यकता वाली फसलों जैसे मक्का, तिलहन, दाल, बाजरा के साथ बदलने की आवश्यकता है। परंपरागत रूप से, चावल उत्तर पूर्व और दक्षिण भारत की तरह भारी वर्षा क्षेत्र (1200 मिमी ऊपर) की फसल है, जहां इसे गैर-पारंपरिक क्षेत्रों विशेष रूप से उत्तर-पश्चिम बेल्ट की तुलना में कम संसाधनों के साथ उत्पादित किया जा सकता है।

हालांकि, फसल विविधीकरण एकल-फसल प्रेरित आर्थिक और पारिस्थितिकी संकट का उत्तर है, जहां विभिन्न फसल पैटर्न के परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का कुशल उपयोग हो सकता है जैसे भूजल स्तर में सुधार, मिट्टी की कम लीचिंग जो मिट्टी के स्वास्थ्य में और सुधार करती है। फसल विविधीकरण एकल उत्पाद की बाजार भरमार के साथ-साथ अचानक जैविक और अजैविक तनावों और फसल के नुकसान के कारण कम लाभ के जोखिम को कम करता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि फसल निर्वाह करने वाले किसानों के लिए पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करती है और घरेलू कल्याण से संबंधित अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए बढ़ी हुई आय प्राप्त करने के लिए अधिशेष उपज को बेचने में सक्षम बनाती है। साथ ही, तार्किक रूप से अलग-अलग परिपक्वता वाली विविध फसलों को चुनने से फसल की सघनता बढ़ सकती है, खेती की लागत कम हो सकती है और मिट्टी को अगली फसल की तैयारी के लिए पर्याप्त समय मिल सकता है। फसल विविधता बढ़ाना एक संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) के प्रमुख स्तंभों में से एक है, जहां प्राकृतिक दुश्मनों की बढ़ी हुई विविधता कीट की आबादी को नियंत्रण में रखती है।

विभिन्न राज्यों के लिए फसल विविधीकरण मॉडल:

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र में गन्ना और कपास मुख्य रूप से उगाए जाते हैं जिन्हें क्रमश: बहुत अधिक पानी और कीटनाशकों की आवश्यकता होती है। महाराष्ट्र के गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में

पानी की कमी है। जल उत्पादकता और फसल सघनता बढ़ाने के लिए उन फसलों को उगाने की सिफारिश की जाती है जिनमें कम पानी की आवश्यकता होती है जैसे मक्का–गेहूं–मूंग या मक्का–सरसों–मूंग। महाराष्ट्र के कपास उत्पादक क्षेत्रों में मक्का–चना–उर्द या मक्का–चना–मूंग का पालन किया जा सकता है। इससे न केवल प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण होता है बल्कि कीटनाशकों का भार भी कम होता है।

हरियाणा, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश

इन क्षेत्रों में हाल के वर्षों में बिगड़ती मिट्टी के स्वास्थ्य, जमीन के ऊपर और जमीन के नीचे प्रदूषण के स्तर में वृद्धि और उच्च तीव्रता और अनुचित खेती प्रथाओं के कारण जल संसाधनों की कमी के बारे में चिंता बढ़ रही है। इन क्षेत्रों में त्वरित भूमि क्षरण, जल स्तर में गिरावट और यहां तक कि जल जमाव की विशेषता है। उचित भूमि और जल प्रबंधन नीतियां पर्यावरण क्षरण को कम करेंगी। क्षेत्रों और फसल पैटर्न के लिए उपयुक्त फसलों के चयन से जल स्तर और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है जिससे पर्यावरणीय गिरावट कम होगी। पश्चिमी यूपी, हरियाणा और पंजाब में मुख्य रूप से चावल–गेहूं और चावल–गेहूं–मूंग फसल प्रणाली का पालन किया जाता है। इन क्षेत्रों में चावल–गेहूं की फसल प्रणाली को कपास–देर से बोए गए गेहूं–मूंग या अरहर –देर से बोए गए गेहूं–मूंगबीन और चावल–गेहूं–मूंग को आसानी से बदला जा सकता है मक्का–गेहूं–मूंग–मूंग या मक्का, बाजरा–सरसों, मूंग द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

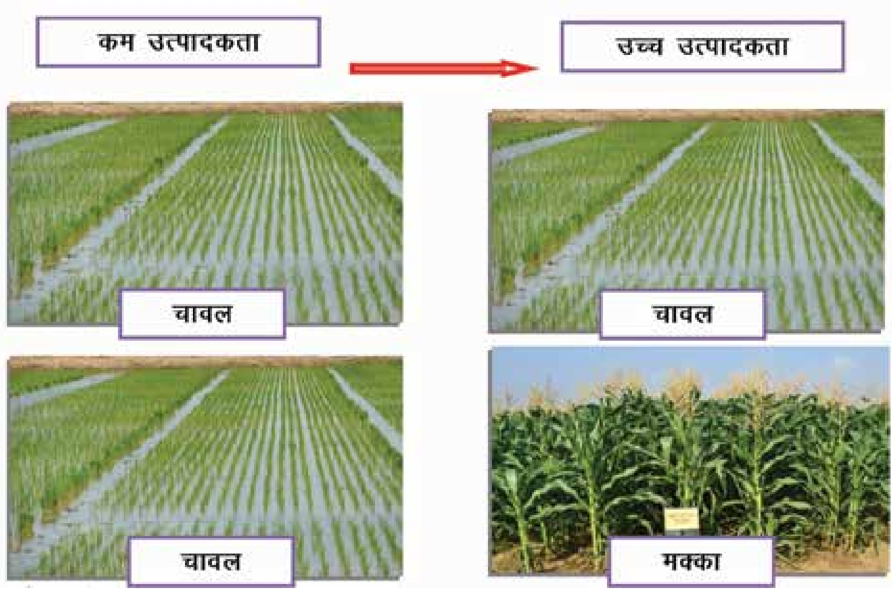

आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, ओडिशा

यह क्षेत्र समुद्री तट से निकटता, मध्यम से उच्च वर्षा की विशेषता है, जो उन्हें उच्च पानी की आवश्यकता वाली फसलों के लिए उपयुक्त स्थान बनाता है। इस क्षेत्र में फसल प्रणाली चावल–चावल है, जहां मुख्य

रूप से पिछली चावल की फसल से खरपतवार, कीट और रोग के बढ़ने के कारण सर्दियों के चावल की उत्पादकता कम होती है। यदि किसान चावल–मक्का लगाते हैं तो फसल विविधीकरण के साथ उच्च उत्पादकता प्राप्त की जा सकती है। इससे खेती की लागत कम हो सकती है, कीट और खरपतवार प्रबंधन के लिए रासायनिक भार कम हो सकता है, इस प्रकार लाभप्रदता और स्थिरता में वृद्धि हो सकती है।

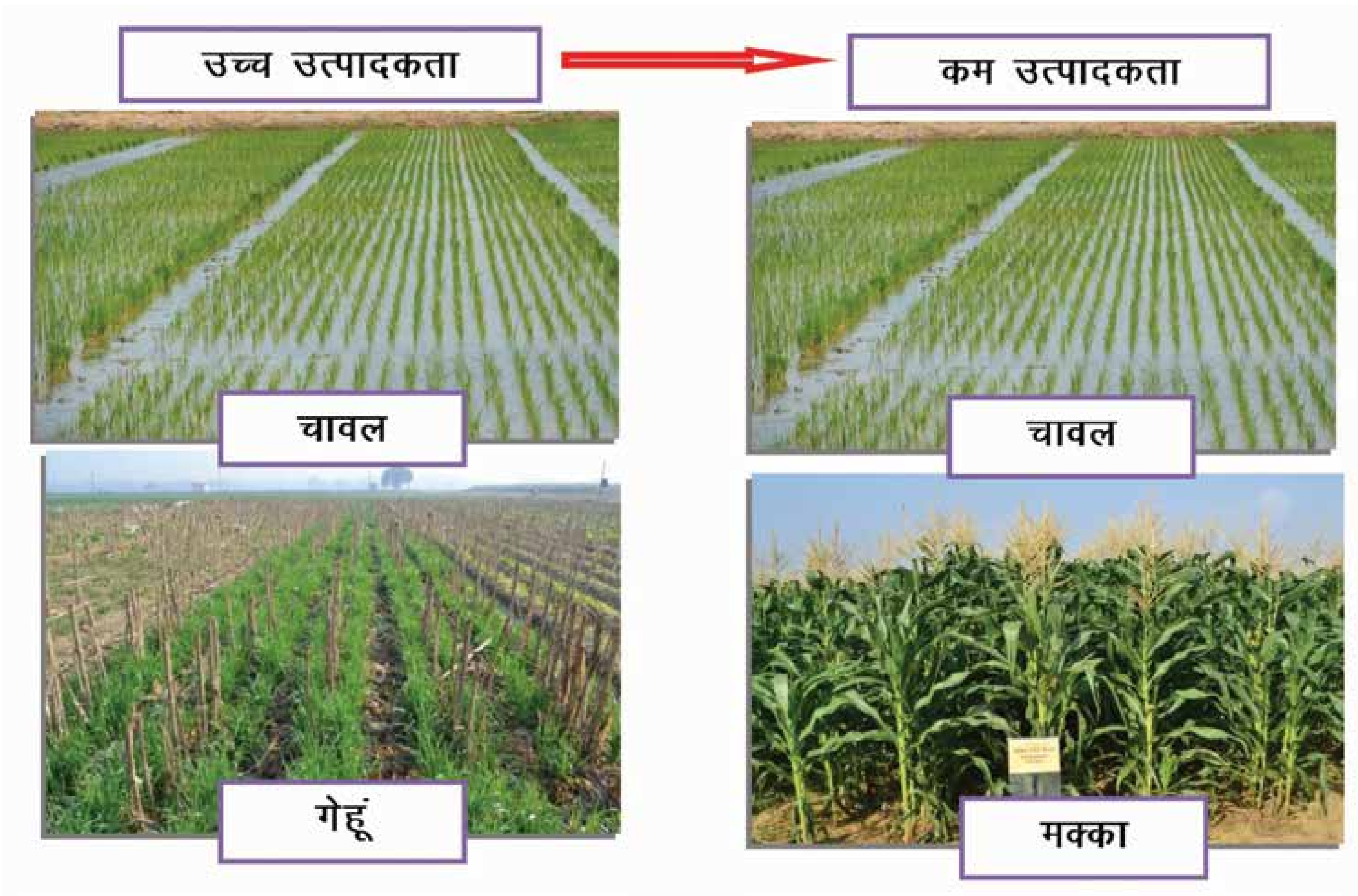

पूर्वी उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश

यह क्षेत्र सूखे, अचानक बारिश गिरने और बढ़ते तापमान जैसे जलवायु संबंधी अस्थिरता की विशेषता वाले हैं। इन क्षेत्रों में अपनाई जाने वाली फसल प्रणाली चावल–गेहूं है। लेकिन सर्दियों में बढ़ते तापमान और कम वर्षा के कारण गेहूं की उत्पादकता कम हो जाती है। यदि किसान चावल–मक्का बोते हैं तो प्रणाली की उत्पादकता में वृद्धि होगी क्योंकि मक्का तापमान बढ़ाने के लिए अधिक लचीला है।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में विविध कृषि–पारिस्थितिकी है। सोयाबीन मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के कुछ तराई क्षेत्रों में उगाया जाता है जो अक्सर वायरल रोगों से प्रभावित हो जाते है जिससे कम उत्पादकता होती है। सोयाबीन को आसानी से मक्का द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है जो जैविक और अजैविक तनाव के लिए अधिक लचीला है और फसल विविधीकरण की ओर भी ले जाता है।

परिनगरिय क्षेत्र में फसल विविधीकरण

परिनगरिय क्षेत्र ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच बफर जोन के रूप में कार्य करते हैं और शहरी और औद्योगिक क्षेत्रों के बीच स्थित कृषि भूमि द्वारा विशेषता। ये भूमि शहरी आबादी को भोजन और पोषण संबंधी सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके अलावा, अगर इन क्षेत्रों को विकसित किया जाता है, तो लंबी दरी की प्रोसोर्सिंग में परिवहन और कोल्ड स्टोरेज की लागत को कम किया जा सकता है। इन क्षेत्रों में प्रचलित पारंपरिक

फसल प्रणाली को शहरी मांग आधारित फसलों जैसे सब्जी फसलों द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है क्योंकि परिवहन प्रबंधनीय है जो कटाई के बाद प्रबंधन लागत को कम करता है। एक वर्ष में किसान मक्का (जून–अक्टूबर) के बाद मक्का पालक/बेबी कॉर्न (अक्टूबर–दिसंबर) और फिर प्याज/गर्मी फूलगोभी एक सब्जी फसल (जनवरी–अप्रैल) और फिर धनिया/पालक/मूली (मई–जून) जैसी विभिन्न फसलों के लिए जा सकता है। जो किसानों की आय में वृद्धि के साथ–साथ मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करेगा जिससे अंततः फसल की उपज में वृद्धि होगी।

फसल विविधीकरण के लाभ:

फसल विविधीकरण सामाजिक–आर्थिक और परिस्थितिकी मोर्चों में असंख्य लाभ रखता है:

1. **भविष्य की पीढ़ी के लिए प्राकृतिक संसाधनों की बचतः** विविध खेती के माध्यम से फसल चक्रों को अपनाकर भूमि, श्रम और पूंजी का बेहतर उपयोग, खेत और पारिवारिक श्रम के स्थिर रोजगार और उपकरणों के अधिक लाभदायक उपयोग को सुनिश्चित किया जा सकता है।
2. **जलवायु परिवर्तन की समस्या का संबोधनः** यह जोखिम कारक को कम करने में मदद करता है क्योंकि यह सुनिश्चित करता है कि अगर मौसम फसल उत्पादन के पक्ष में नहीं है तो किसान सभी संसाधनों को नहीं खोते हैं।
3. **प्रदूषण की जांच करने के लिएः** यह ऊर्जा और कृषि रसायनों के आदानों को कम कर सकता है, और मिट्टी की गुणवत्ता, जल प्रदूषण और यूट्रोफिकेशन, ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन, मिट्टी के क्षरण और जैव विविधता के नुकसान पर गहन कृषि के नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकता है।
4. **किसानों की आय में वृद्धिः** यह किसानों को बाजार में बिक्री के लिए अधिशेष उत्पादों को विकसित करने में सक्षम बनाता है और इस प्रकार घरेलू कल्याण से संबंधित अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए बढ़ी हुई आय प्राप्त करने में मदद करता है।
5. **खेती की लागत में कमीः** पारंपरिक खेती की तुलना में फसल का सही मिश्रण अकार्बनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, ऊर्जा और कटाई के

बाद प्रबंधन जैसे महंगे इनपुट को प्रतिस्थापित कर सकता है जो अंततः इसकी खेती की लागत को कम कर देता है। उदाहरण के लिए, दलहन के बाद अनाज की फसल को पिछली फलियां फसल द्वारा निर्धारित नाइट्रोजन से लाभ होता है।

6. **फसल गहनता में वृद्धिः** यह उत्पादन और बाजार से संबंधित जोखिमों को कम करके और विभिन्न उद्योगों के लिए अधिक से अधिक कच्चे माल का उत्पादन करके, नए बाजार के अवसर पैदा करके गहनता की सुविधा प्रदान करता है। इस फार्म के उप–उत्पादों का उचित उपयोग हो सकता है क्योंकि फसल उत्पादन के साथ मवेशी, मुर्गी, पक्षी आदि पाले जाते हैं।

7. **प्राकृतिक संसाधनों का कुशल उपयोगः** फसल का चयन प्राकृतिक साधनों जैसे पानी, मिट्टी की स्थिति, तापमान आदि की उपलब्धता के अनुसार होना चाहिए। उदाहरण के लिए कम वर्षा वाले क्षेत्र में चावल को मक्का/बाजरे से बदलना चाहिए। ताकि पानी जैसे शेष प्राकृतिक संसाधनों को राजस्थान जैसे अन्य कम सिंचित क्षेत्रों में प्रवाहित किया जा सके। एक पारंपरिक फसल प्रणाली के भीतर नाइट्रोजन–फिक्सिंग फसलों, जैसे फलियां, का परिचय, मिट्टी की स्थिति में सुधार कर सकता है, अन्य पौधों को वायुमंडलीय नाइट्रोजन उपलब्ध कराया जा सकता है, जिससे खनिज उर्वरकों की आवश्यकता को उनकी उच्च ऊर्जा लागत और गैर–नवीकरणीय संसाधन के उपयोग के साथ कम किया जा सकता है।

8. **मिट्टी, पशु और मानव स्वास्थ्य में सुधारः** फसल विविधीकरण पौधों की उत्पादकता, पौधे और स्वास्थ्य और पोषण मूल्य को बढ़ाता है। इसका परिणाम किसानों, जानवरों के लिए पोषण संबंधी लाभ हो सकता है। यह मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करता है और मिट्टी के कटाव को कम करता है क्योंकि पूरे वर्ष भूमि पर खेती की जाती है। बेहतर मृदा स्वास्थ्य स्वस्थ फसल का समर्थन करता है और रोगों, कीट जीवों और पर्यावरणीय तनाव के लिए फसल के लचीलेपन का निर्माण करता है।

9. **जैव विविधता में वृद्धि और जैविक तनाव में कमीः** विविध फसल प्रणाली अधिकांश पारिस्थितिकी तंत्र के लिए महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करती है। फसल विविधीकरण से समय और/या स्थान में अधिक आनुवंशिक और/या संरचनात्मक विविधता हो सकती है। विविधता जितनी अधिक होगी पारिस्थितिकी तंत्र संतुलन होगा, जहां फसल कीट प्राकृतिक रूप से प्रचुर मात्रा में और विविध प्राकृतिक शत्रुओं द्वारा नियंत्रित होते हैं। इसी तरह, विविध माइक्रोबियल विविधता एक विशेष रोगज़नक़ फसलों को बढ़ने और प्रभावित करने से रोकेगी। संरक्षण कृषि में उपयोग की जाने वाली मल्चिंग खरपतवार बीजों को अंकुरित होने से रोकती है।

10. **आर्थिक रूप से व्यवहार्य और पर्यावरणीय संधारणीय प्रणाली विकसित करनाः** उपयुक्त फसल का चयन मिट्टी के कायाकल्प और फसल स्थापना के लिए पर्याप्त समय देता है, यहां तक कि कीट के हमले के लिए समय भी कम करता है जिसके परिणामस्वरूप कुल फसल उत्पादकता में सुधार होता है, जिससे किसान की आय में और वृद्धि होती है। किसान के रूप में विभिन्न उद्योगों के लिए अधिक फीडर, चारा और कच्चा माल उत्पन्न करने में सक्षम। उपनगरीय क्षेत्र में फसल विविधीकरण से ग्रामीण–शहरी आबादी के लिए रोजगार में वृद्धि होती है।

11. **नए उत्पादों के साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचः** फसल विविधीकरण किसानों को नए उत्पादों, खाद्य और औषधीय पौधों के साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। पारंपरिक स्टेपल के मोनोकल्चर से विविधता लाने से विकासशील देशों के किसानों के लिए महत्वपूर्ण पोषण लाभ हो सकते हैं और खाद्य उत्पादन के मामले में एक देश को अधिक आत्मनिर्भर बनने में मदद मिल सकती है। यह खाद्य उत्पादन के मामले में अधिक आत्मनिर्भर बनने के इच्छुक देश या समुदाय का समर्थन कर सकता है। इस प्रकार, यह आयात में कमी ला सकता है और विभिन्न फसलों के लिए निर्यात को बढ़ा सकता है। विविधीकरण भी मूल्य जोखिम का प्रबंधन कर सकता है, इस धारणा पर कि सभी उत्पादों को एक ही समय में कम बाजार कीमतों का सामना नहीं करना पड़ेगा और किसान समुदाय की लाभप्रदता में वृद्धि होगी।

फसल विविधीकरण पर जोर देने में सरकार की भूमिका

फसल विविधीकरण के असंख्य लाभों को साकार करने के लिए, सरकार को केवल गेहूं और चावल के बजाय मक्का, बाजरा, जवार, तिलहन, दलहन, सब्जी जैसी फसलों की खरीद के संबंध में सुविधा या नई नीतियां बनानी चाहिए। ताकि किसान बिना सोचे समझे फसल विविधीकरण को बढ़ा सके। उदाहरण के लिए हरियाणा सरकार को जल ही जीवन योजना जिसमें सरकार ने 7000 रुपये प्रति एकड़ प्रोत्साहन दिया है। यहां तक कि सरकार ने नुकसान के जोखिम के खिलाफ बीमा कराने की सुविधा दी और एमएसपी पर उत्पादन की खरीद की है। इस तरह की सरकारी नीतियां बड़े पैमाने पर फसल विविधीकरण को बढ़ा सकती है। अगर पुरे देश लागु किया जाय तो आने वाले पीढियों के लिए हम स्वस्थ कृषि योग्य भूमि स्वच्छ जल तथा स्वस्थ वातावारण मिल सके।

अनुशासनिक जांच और कार्यवाही...

पी.सी. सिंह
मुख्य महाप्रबन्धक (मा.सं. एवं प्र.) एवं
मुख्य सतर्कता अधिकारी (अंशकालिक), निगमित कार्यालय

''प्राकृतिक जांच का उद्देश्य न्याय को सुरक्षित रखना है या इसे नकारात्मक ढंग से कहें तो न्याय की हत्या को रोकना है। यह नियम केवल उन क्षेत्रों में लागू होते हैं जो वैध रूप से बनाए गए किसी भी कानून के दायरे में नहीं आते हैं।'' मेरी राय में, वे कानून को प्रतिस्थापित नहीं करते बल्कि उसके पूरक हैं''।

मुख्य सतर्कता अधिकारी ने मुख्यालय में अपने विभाग में अनुशासनिक जांच एवं कार्यवाही पर एक प्रस्तुतीकरण बनाई है। उन्होंने प्राकृतिक न्याय, कर्मचारियों को उचित अवसर, अनुशासनिक कार्यवाही का समय पर पूरा होना, अनुशासनिक प्राधिकारी/जांच अधिकारियों द्वारा ध्येय का सतर्कता से अनुप्रयोग और कर्मचारियों के अपराध के अनुरूप सज़ा दिए जाने के सिद्धांतों पर जोर दिया है। अधिकारियों के एक पैनल का गठन करने का सुझाव दिया गया है, जिन्हें जांच अधिकारी/प्रस्तुतकर्ता नियुक्त किया जा सकता है और अनुशासनिक कार्यवाही के उचित संचालन के लिए उनका नियमित प्रशिक्षण सुनिश्चित किया जा सकता है। अनुशासनिक प्राधिकारियों को सकारण आदेश जारी करने का सुझाव दिया गया था।

एक लोक सेवक के विरूद्ध विभागीय कार्यवाही विभिन्न चरणों में होनी चाहिए जैसे:–

1. लोक सेवक के विरूद्ध शिकायत अथवा कदाचार का आरोप दर्ज करना।
2. प्रारंभिक जांच करना।
3. अनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच की रिपोर्ट पर विचार करना।
4. अपचारी अधिकारी को कारण बताओ नोटिस जारी करना, जिसे प्रथम दृष्टया जिम्मेदार ठहराया गया है।
5. कारण बताओ नोटिस पर कर्मचारी का प्रतिउत्तर प्राप्त करना।
6. यदि अनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा प्रतिउत्तर असंतोषजनक पाया जाता है, तो अपचारी अधिकारी को आरोप पत्र जारी करना।
7. आरोप पत्र चार्जशीट में कर्मचारी का प्रतिउत्तर प्राप्त करना।
8. अनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा प्रतिउत्तर की संवीक्षा करना।
9. जांच अधिकारी की नियुक्ति अर्थात नियमित जांच का आदेश और प्रस्तुतकर्ता अधिकारी का नामांकन।
10. रक्षा के लिए कानूनी सहायता लेना।
11. गवाहों की उपस्थिति और परीक्षा।
12. जांच अधिकारी द्वारा जांच रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
13. अपचारी कर्मचारी को कारण बताओ नोटिस जारी करना।
14. प्रतिउत्तर प्रस्तुत करना और अपचारी अधिकारी के पिछले अभिलेखों पर विचार करना।
15. प्रस्तावित दंड।
16. अंतिम आदेश।
17. सेवा अपील, यदि कोई हो।

सामान्यत: सीडीए/सेवा नियम/उसके अधीन बनाए गए स्थायी आदेशों में निर्धारित अनुशासनिक कार्यवाही में उपरोक्त प्रक्रिया का पालन किया जाना चाहिए है।

विपणन विभाग

विपणन के महत्व को जानें और समझें

शशांक चतुर्वेदी

महाप्रबन्धक (विपणन), निगमित कार्यालय

विपणन एक सतत प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत मार्केटिंग मिक्स (उत्पाद, मूल्य, स्थान, प्रोत्साहन अर्थात Production, Price, Place, Promotion जिन्हें प्रायः 4 P's कहा जाता है) की योजना बनाई जाती है एवं कार्यान्वयन किया जाता है। यह प्रक्रिया व्यक्तियों और संगठनों के बीच उत्पादों, सेवाओं या विचारों के विनिमय हेतु की जाती है।

मार्केटिंग से राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। सभी विपणन प्रयासों का शुद्ध प्रभाव मौजूदा उद्योगों के उत्पादन, नई औद्योगिक इकाइयों में निवेश और अधिक सेवाओं के प्रावधान में वृद्धि है।

विपणन जीवन स्तर को बढ़ाता है।

आवश्यकताओं, आराम और विलासिता की अधिक वस्तुओं के प्रावधान के साथ, सस्ता और महंगा होने के साथ और इसके निपटान में अधिक सेवाओं और सुविधाओं के साथ, समुदाय उच्च जीवन स्तर का आनंद लेता है।

विपणन लाभकारी रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

विपणन अधिक उत्पादों और सेवाओं के लिए एक जलवायु बनाता है यह अनुमान है कि कुल आबादी का 30 से 40 प्रतिशत प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष विपणन गतिविधियों में लगा हुआ है।

विपणन आर्थिक स्थितियों को स्थिर करता है।

मार्केटिंग न केवल अर्थव्यवस्था को घुमाती है बल्कि स्थिर आर्थिक स्थिति भी प्रदान करती है। यह निर्माता और उपभोक्ताओं के बीच की खाई को पाटती है। विपणन, खपत के साथ उत्पादन को संतुलित करके, स्थिर मूल्य, पूर्ण रोजगार और एक मजबूत अर्थव्यवस्था प्रदान करता है।

निर्णय लेने के लिए आधार के रूप में विपणन अधिनियम।

आधुनिक समय में, विपणन बहुत जटिल और थकाऊ हो गया है। यह उत्पादन के साथ-साथ एक नई विशेष गतिविधि के रूप में उभरा है। नतीजतन, निर्माता काफी हद तक यह तय करने के लिए विपणन तंत्र पर निर्भर हैं कि उत्पादन कैसे, कब और कितना किया जाए।

विपणन से बाज़ार में वृद्धि होती है ।

विपणन उपभोक्ताओं की छिपी इच्छाओं को बाहर निकालता है, नई मांग बनाता है, अनछुए क्षेत्रों का पता लगाता है और नए उत्पादों को बेचने की संभावनाओं का पता लगाता है।

विपणन माल और सेवाओं के स्वामित्व और कब्जे में आदान-प्रदान करता है।

वस्तुओं और सेवाओं के लिए समय, स्थान और कब्जे की उपयोगिता बनाता है। यह उत्पादकों और उपभोक्ताओं दोनों के लिए मददगार है।

संसाधनों के अधिकतम उपयोग में विपणन मदद करता है।

जैसा कि विपणन प्रयास बाजार के क्षेत्र को बड़ा करते हैं, निर्माता अपने संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं, अन्यथा शेष आंशिक रूप से अधिकतम उपयोग किया जाता है।

विपणन अन्य गतिविधियों को तेज करता है।

मार्केटिंग की वजह से बैंकिंग, ट्रांसपोर्ट, इंश्योरेंस, वेयर हाउसिंग आदि जैसी कई अन्य गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है क्योंकि वे मार्केटिंग प्रक्रिया में मदद करने के लिए हैं।

विपणन मानव की अधिकतम संतुष्टि प्रदान करता है।

व्यवसाय और समाज के बीच एक प्रभावी कड़ी के रूप में कार्य करता है, ज्ञान के अवरोधों को दूर करता है, लोगों को शिक्षित करता है, उनके दिमाग की खेती करता है, उन्हें सबसे अच्छा खरीदने के लिए प्रेरित करता है और इस तरह ग्राहक को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

हिल (इंडिया) लिमिटेड (हिंदुस्तान इंसेक्टिसाइड लिमिटेड) में विपणन का प्रारूप,

हिल (इंडिया) लिमिटेड ''पूर्व में हिंदुस्तान इंसेक्टिसाइड्स लिमिटेड (एचआईएल)'', रसायन और पेट्रो रसायन विभाग, रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार का एक उद्यम है, इसकी स्थापना वर्ष मार्च,

1954 में, भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम को डीडीटी की आपूर्ति करने के उद्देश्य से की गई थी। इसके पश्चात् कंपनी ने कृषि क्षेत्र की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एग्रो पेस्टिसाइड्स में विविधीकरण किया और इसमें आगे बढ़ रही है। वर्तमान में कंपनी कृषि रसायनों, बीजों का उत्पादन व विपणन कर रही है तथा हाल ही में उर्वरकों का कारोबार भी आरम्भ किया है, ताकि एक ही स्थान पर कृषक समुदाय की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

हिल (इंडिया) लिमिटेड त्रीस्तरीय विपणन माडल को अपनाया गया है जिसके तहत फैक्ट्रियो में उत्पादन के पश्चात पेस्टीसाइड उत्पाद को हिल इंडिया लिमिटेड के भंडारण केन्द्रों पर भेजा जाता है तत्पश्चात यह उत्पाद कंपनी द्वारा नियुक्त डीलरों को विक्रय के लिए दिया जाता है। कंपनी द्वारा नियुक्त डीलरों में सभी प्रकार के सरकारी–अर्ध सरकारी, सहकारी व निजी डीलर होते हैं। डीलर के पास उत्पाद पहुँचने के पश्चात वह उप विक्रेताओं को विक्रय के लिए दिया जाता है। तत्पश्चात उपविक्रेता इन उत्पादों का विक्रय किसानों को करता है। इस प्रकार त्रीस्तरीय विपणन माडल प्रक्रिया सम्पन्न होती है।

यहाँ पर यह ध्यान देने योग्य बात है कि सभी चरणों में भारत व राज्य सरकारों द्वारा निहित सभी नियम व कानून का पालन करना अनिवार्य है और इसका निर्वहन विपणन विभाग का दायित्व है।

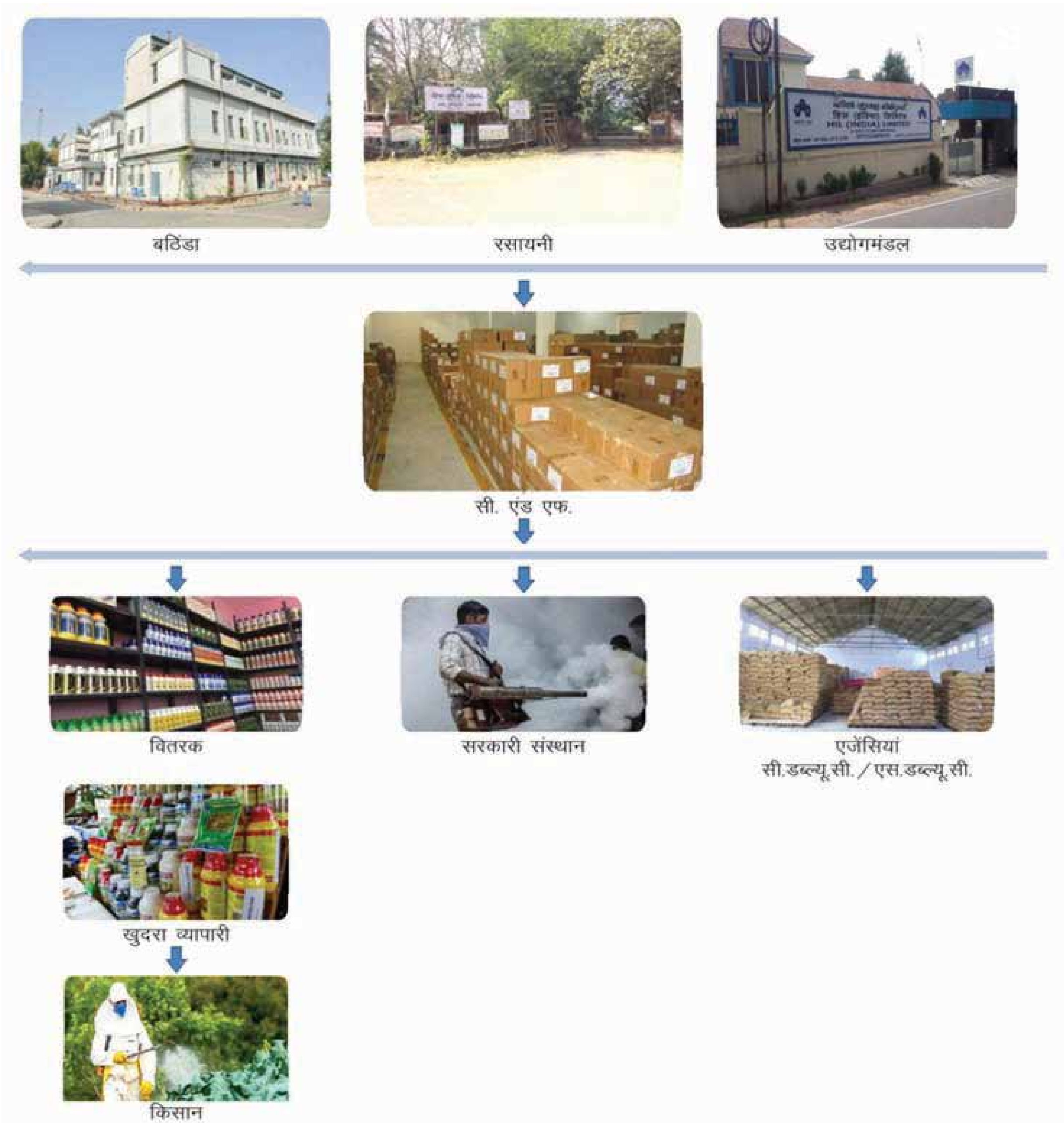

तकनीकी

लीन विनिर्माण और अपशिष्ट का प्रकार

विजय कुमार महाराणा
यूनिट प्रमुख, बठिंडा यूनिट

लीन विनिर्माण (मेथडोलॉजी) एक ऑपरेशनल फिलॉसफी है जो किसी संगठन में सभी कचरे/अपशिष्ट को पहचानने और खत्म करने पर केंद्रित है। लीन सिद्धांतों में शून्य इन्वेंट्री, बैच टू लो, कटिंग बैच साइज, लाइन बैलेंसिंग, जीरो वेटिंग टाइम, पुश प्रोडक्शन कंट्रोल सिस्टम के बजाय पुल, वर्क एरिया लेआउट, टाइम एंड मोशन स्टडीज और कटिंग साइकिल टाइम शामिल हैं। लीन प्रक्रियाओं से कचरे को खत्म करने और प्रक्रिया की गति बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करता है, इस पर ध्यान केंद्रित करके ग्राहक वास्तव में गुणवत्ता पर क्या विचार करते हैं, और उससे पीछे की ओर काम करते हैं।

निर्माण प्रक्रियाओं में लीन कार्यप्रणाली को लागू करने के लिए आगे बढ़ने से पहले, हमें पता होना चाहिए कि उत्पादन लाइन में अपशिष्ट क्या है, अपशिष्ट के प्रकार और अपशिष्ट को कैसे हटाया जाए।

अपशिष्ट (Waste) क्या है ?

लीन मैन्युफैक्चरिंग में, ''अपशिष्ट'' को आमतौर पर ऐसी क्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जो ग्राहक के लिए मूल्य नहीं जोड़ता है। अनिवार्य रूप से, अपशिष्ट निर्माण प्रक्रिया में कोई भी अनावश्यक कदम नहीं है जिससे ग्राहक को लाभ होता हो, इसलिए ग्राहक इसके लिए भुगतान नहीं करना चाहता है। लीन मैन्युफैक्चरिंग निर्माण प्रक्रिया से कचरे को खत्म करने के आसपास केंद्रित है। जब आप कचरे को हटाते हैं, तो आपके पास केवल वही चरण रह जाते हैं जो ग्राहक को एक संतोषजनक, उच्च-मूल्यवान, उत्पाद देने के लिए आवश्यक होते हैं।

अपशिष्ट/कचरे के प्रकार:

1. दोष/त्रुटि/कमी

एक दोष एक तैयार उत्पाद को संदर्भित करता है जो आपके ग्राहक की अपेक्षा, या उसके मूल विनिर्देश से विचलित होता है। दोषों के कारण समय, श्रम और संसाधनों की बर्बादी के बराबर पुनर्विक्रय, स्मरण और स्क्रैप हो सकता है।

निरीक्षण के दौरान पाए गए किसी उत्पाद का कोई भी विचलन, जिसके कारण उस उत्पाद को पूरी तरह से खत्म कर दिया गया या फिर से काम के लिए वापस भेज दिया गया, उसे डिफेक्ट कहते है।

दोष अपशिष्ट का कारण:-

1. कार्यकर्ता कार्य निर्देशों का सही ढंग से पालन नहीं करता है।
2. कार्यकर्ता गुणवत्ता निरीक्षण प्रक्रिया का पालन करने में विफल रहता है।
3. उत्पाद गलती से गलत ग्राहक को भेज दिया जाता है।
4. विशिष्ट निर्माण सामग्री का इन्वेंट्री स्तर गलत तरीके से दर्ज किया गया है।

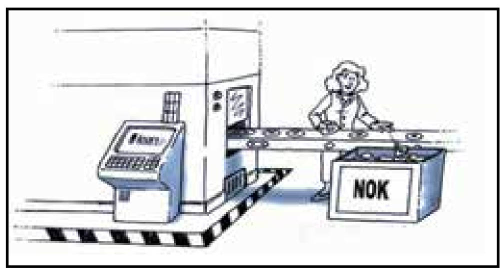

समाधान: स्त्रोत पर गुणवत्ता लागू करें ताकि प्रत्येक ऑपरेटर के पास अच्छी तरह से परिभाषित जांच बिंदु हों।

2. अधिक उत्पादन

आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना। न केवल बहुत अधिक उत्पाद बनाने में समय बर्बाद किया गया है, बल्कि अन्य कार्यों पर कर्मियों का बेहतर उपयोग किया जा सकता है और यह अक्सर इन्वेंट्री की बर्बादी की ओर जाता है।

अतिउत्पादन अपशिष्ट का कारण:

1. अस्थिर उत्पादन शेड्यूलिंग।
2. गलत पूर्वानुमान और मांग की जानकारी।
3. ओवरस्टाफ गोदाम और उत्पादन सुविधाएं।
4. वेयरहाउस ऐसे उत्पाद से भरा है जो बिकता नहीं है या नहीं बिका है।

समाधान: शेड्यूल का पालन करें और मांग की मात्रा पूरी होने पर कुछ और काम करें, भले ही वह सिर्फ सफाई ही क्यों न हो।

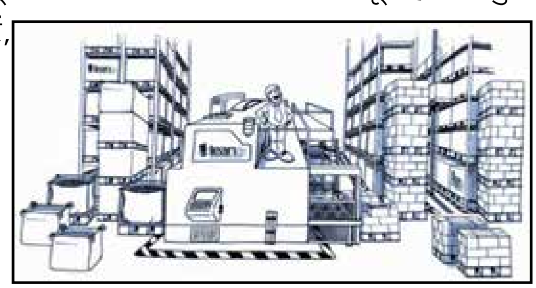

3. प्रतीक्षा/इंतिज़ार

बर्बादी के रूप में प्रतीक्षा में निष्क्रिय समय और कतार जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं। जब उत्पादन न करने में समय व्यतीत होता है तो इसे बेकार माना जाता है। ध्यान दें कि अधिक उत्पादन के लिए प्रतीक्षा को प्राथमिकता दी जाती है।

प्रतीक्षा अपशिष्ट का कारण:

1. अनियोजित/अप्रत्याशित डाउनटाइम या निष्क्रिय मशीनरी।
2. आंतरिक रूप से या आपूर्तिकर्ता द्वारा मानव–कारण विलंब।
3. स्वचालित मशीन द्वारा कार्य पूरा करने के दौरान गतिविधि को रोकना।
4. उत्पादन को रोकना जबकि अगले चरण में इसका हल हो जाता है।

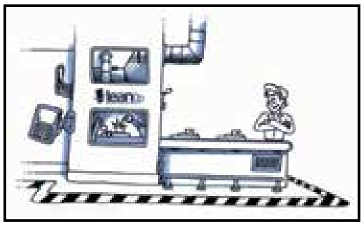

समाधान: बाधाओं पर काम करें और फिर लाइन को शेष अड़चन की गति के अनुसार संतुलित या गति दें।

4. प्रतिभा का कम उपयोग

इस में लोगों के ज्ञान, कौशल और क्षमताओं का पूरी तरह से उपयोग नहीं करना शामिल है। आपको इस प्रक्रिया में लोगों को शामिल करने की आवश्यकता है ताकि वे मुद्दों की पहचान कर सकें और सुधार पर विचार किया जा सकें।

संगठन में सही लोगों को सही सीट पर रखने में विफलता से कम टर्नओवर, प्रेरणा की कमी और कुल विघटन हो सकता है।

अनुपयोगी प्रतिभा अपशिष्ट का कारण:

1. निष्क्रिय या दुरुपयोग की गई मशीनरी।
2. कम प्रशिक्षित/अप्रशिक्षित श्रमिक।
3. कमजोर या अनुपस्थित कैरियर विकास कार्यक्रम।
4. नेतृत्व और कर्मचारियों के बीच संचार की कमी।
5. कामगार उन कार्यो पर समय व्यतीत करते हैं जो मूल्य नहीं जोड़ते हैं।

समाधान: सुनिश्चित करें कि ऑपरेटर किसी भी समस्या को हल करने या सुधार करने में शामिल हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कुछ भी अनदेखा नहीं किया गया है। आखिरकार, वे जो करते हैं उसके विशेषज्ञ हैं।

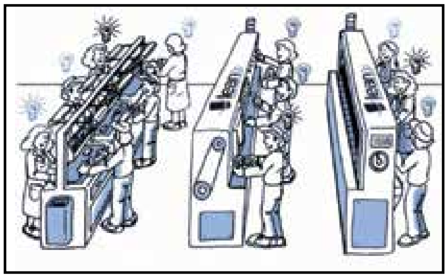

5. परिवहन

चल सामग्री उपकरण और संयंत्र के आसपास के हिस्से बर्बादी का कारण बन सकते हैं, खासकर अगर वे खराब तरीके से नियोजित हों।

सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की प्रक्रिया, परिवहन लीन मैन्युफैक्चरिंग अपशिष्ट के सबसे आम क्षेत्रों में से एक है। परिवहन अपशिष्ट गति और प्रतीक्षा सहित कई अन्य अपशिष्टों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, जिसके परिणामस्वरूप उच्च ओवरहेड लागत, अनावश्यक व्यय और अनियमित उत्पादन प्रवाह होता है।

परिवहन अपशिष्ट का कारण:

1. पूरी तरह से समन्वित रसद टीम।
2. अपर्याप्त संयंत्र/उत्पादन डिजाइन।
3. दूर की सुविधाओं के बीच उपकरण चलाना।
4. अधिक स्थानीय प्रदाताओं के बदले दूर के आपूर्तिकर्ता का उपयोग करना।

समाधान: सिस्टम के माध्यम से लोगों, उपकरणों, इन्वेंट्री, उपकरण या उत्पादों के संभावित प्रवाह की कल्पना करने के लिए एक स्पेगेटी आरेख बनाएं। फिर समय के साथ प्रवाह को सुव्यवस्थित करने पर काम करें, न कि वर्क–इन–प्रोसेस आइटम का अधिक उत्पादन।

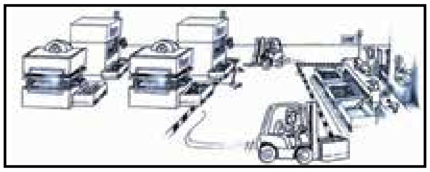

6. इन्वेंटरी

एक–टुकड़ा प्रवाह या कच्चे माल और/या तैयार माल रखने वाले क्षेत्रों से अधिक आपूर्ति। अधिक उत्पादन (कार्य–में–प्रक्रिया और तैयार माल) को रखने के लिए स्थान की आवश्यकता होती है, जिसका उल्लेख पहले किया गया था, जिससे स्थान का बेहतर उपयोग हो सके। इन्वेंट्री की बर्बादी तब होती है जब उत्पाद मांग के अनुपात में नहीं बनाया जाता है।

इन्वेंटरी अपशिष्ट का कारण:

1. मशीनरी जो शायद ही कभी उपयोग की जाती है।
2. उन पुर्जों या उत्पादों का भंडारण जो प्रयोग में नहीं लाए जा सके है/ जिनकी अब आवश्यकता नहीं है।
3. क्षतिग्रस्त या पुराने को बदलने के लिए अतिरिक्त पुर्जों या उपकरणों का आदेश देना।
4. इस तरह से ओवरस्टॉकिंग करना जो आपके ग्राहक की जरूरतों को पूरा नहीं करता है/मूल्य नहीं जोड़ता है।

समाधान: सामग्री प्रवाह और भंडारण सीमाओं को प्रबंधित करने

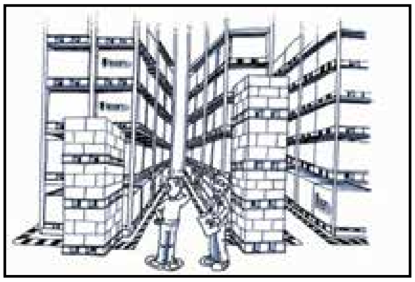

के लिए कानबन संकेतों को सेट करें, जैसे केवल जरूरत पड़ने पर कच्चे माल की खरीद और आवश्यक मात्रा में और अधिक उत्पादन को रोकने के लिए एक कतार प्रणाली बनाएं।

7. गति

गतिमान अपशिष्ट में लोगों, उपकरणों या मशीनरी का कोई भी अनावश्यक संचलन शामिल है। इसमें चलना, उठाना, पहुंचना, झुकना, खींचना और हिलना शामिल है। अत्यधिक गति की आवश्यकता वाले कार्यों को कर्मियों के कार्य, स्वास्थ्य और सुरक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए फिर से डिजाइन किया जाना चाहिए।

गति अपशिष्ट का कारण

1. प्रतिक्रियाशील रखरखाव।
2. खराब स्थिति में आपूर्ति या उपकरण।
3. अत्यधिक मशीन आंदोलन / टूट–फूट।
4. प्रक्रियाएं जिसकी वास्तव में आवश्यकता से अधिक प्रक्रिया है।
5. अत्यधिक गतिविधि जैसे कि लापता उपकरण की खोज करने वाला कार्यकर्ता या कार्य निर्देश।

समाधान: ऑपरेटर को काम पर देखें और किसी भी सामग्री को स्थानांतरित करें जिससे ऑपरेटर को खिंचाव या तनाव न हो। वर्कस्टेशन को व्यवस्थित करें ताकि उपकरण और उपकरण उत्पादन स्थानों के पास हों, और सामग्री को एर्गोनोमिक स्थिति में रखें।

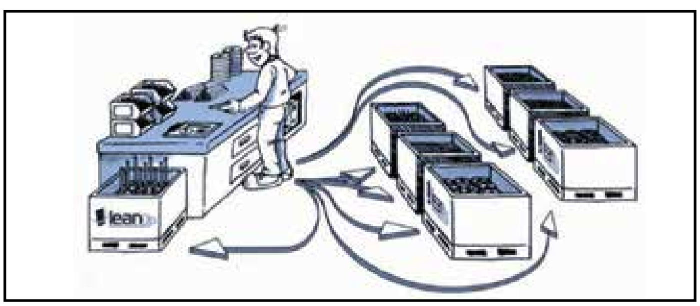

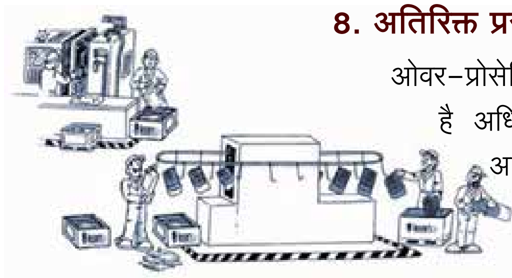

8. अतिरिक्त प्रसंस्करण

ओवर–प्रोसेसिंग का अर्थ है अधिक काम करना, अधिक घटकों को जोड़ना, या किसी प्रक्रिया या सेवा में ग्राहक की आवश्यकता से अधिक कदम उठाना।

निर्माण क्षेत्र में इसमें आवश्यकता से अधिक उच्च परिशुद्धता उपकरण का उपयोग करना, आवश्यकता से अधिक क्षमता वाले घटकों का उपयोग करना, आवश्यकता से अधिक विश्लेषण चलाना, किसी समाधान को ओवर–इंजीनियरिंग करना, एक घटक को पहले से स्थापित होने के बाद समायोजित करना, और एक में अधिक कार्यात्मकता होना शामिल हो सकता है। कार्यालय में, अति–प्रसंस्करण में आवश्यकता से अधिक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करना, खरीद प्रक्रिया में अनावश्यक कदम उठाना, दस्तावेज़ पर अनावश्यक हस्ताक्षर की आवश्यकता, डेटा की दोहरी प्रविष्टि और कार्यप्रवाह में एक अतिरिक्त कदम शामिल हो सकते हैं। .

ओवर–प्रोसेसिंग अपशिष्ट का कारण

1. अस्पष्ट विनिर्देश या गुणवत्ता मानक।
2. परीक्षण की मांग के बिना किसी भाग या सुविधा को स्थापित करना।
3. धीमी या बहुस्तरीय निर्णय लेने और अनुमोदन प्रक्रिया।
4. ग्राहक की जरूरत के लिए उत्पाद या फीचर विकल्पों की अधिकता।

समाधान: ग्राहक के दृष्टिकोण से कार्य आवश्यकताओं को समझें। गुणवत्ता और अपेक्षा के स्तर तक उत्पादन करें जो ग्राहक चाहता है, और केवल आवश्यक मात्रा में उत्पादन करें।

देश की आत्मा है हिंदी

अजीत कुमार

अधिकारी (राजभाषा), निगमित कार्यालय

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवत: सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है।

देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ अंग्रेजी पूरे देश पर हावी होती जा रही है। हिंदी देश की राजभाषा होने के बावजूद आज हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। हिंदी जानते हुए भी लोग हिंदी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकने लगे हैं। इसलिए सरकार का प्रयास है कि हिंदी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार किया जा सके।

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए खासतौर से राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो। इसी कड़ी में राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। 14 सितंबर, 1949 का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। इसी दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिंदी के उपयोग को प्रचलित करने के लिए वर्ष 1953 के उपरांत हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। ''हिंदी अनुवाद की नहीं बल्कि संवाद की भाषा है। किसी भी भाषा की तरह हिंदी भी मौलिक सोच की भाषा है।'' हिंदी दिवस के अवसर पर सरकारी विभागों में हिंदी की प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं। साथ ही हिंदी प्रोत्साहन सप्ताह का आयोजन किया जाता है। हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने अनेक पुरस्कार योजनाएं शुरू की हैं। सरकार द्वारा हिंदी में अच्छे कार्य के लिए ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना'' के अंतर्गत शील्ड प्रदान की जाती है। हिंदी में लेखन के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार का प्रावधान है। आधुनिक ज्ञान विज्ञान में हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए भी सरकार पुरस्कार प्रदान करती है। इन प्रोत्साहन योजनाओं से हिंदी के विस्तार को बढ़ावा मिल रहा है।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो गया है। इसी क्रम में राजभाषा विभाग द्वारा वेब आधारित सूचना प्रबंधन प्रणाली विकसित की गई है जिससे भारत सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा अन्य रिपोर्टें राजभाषा विभाग को त्वरित गति से भिजवाना आसान हो गया है। सभी मंत्रालयों और विभागों ने अपनी वेबसाइटें हिंदी में भी तैयार कर ली हैं। सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा संचालित जन कल्याण की विभिन्न योजनाओं की जानकारी आम नागरिकों को हिंदी में मिलने से गरीब, पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोग भी लाभान्वित होते हुए देश की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं।

देश की स्वतंत्रता से लेकर हिंदी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की हैं। भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा ''विश्व हिंदी सम्मेलन'' और अन्य अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष सरकार द्वारा ''प्रवासी भारतीय दिवस'' मनाया जाता है जिसमें विश्व भर में रहने वाले प्रवासी भारतीय भाग लेते हैं। विदेशों में रह रहे प्रवासी भारतीयों की उपलब्धियों के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम से भारतीय मूल्यों का विश्व में और अधिक विस्तार हो रहा है। विश्वभर में करोड़ों की संख्या में भारतीय समुदाय के लोग एक संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी

को एक नई पहचान मिली है। यूनेस्को की सात भाषाओं में हिंदी को भी मान्यता मिली है।

भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिंदी को ही जाता है। आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी है। हमारे प्रधानमंत्री द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में ही अभिभाषण दिया गया था। विश्व हिंदी सचिवालय विदेशों में हिंदी का प्रचार–प्रसार करने और संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए कार्यरत है। उम्मीद है कि हिंदी को शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा भी प्राप्त हो सकेगा।

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी जन–आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनिया में 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जा रही है। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी के युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिंदी में काम को बढ़ावा देना चाहिए ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद किया जाए। इसके लिए राजभाषा विभाग ने सरल हिंदी शब्दावली भी तैयार की है। राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान–विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिंदी में ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे हमारे विद्यार्थियों को ज्ञान–विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध होंगी। हिंदी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है।

भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिंदी है। इसलिए इसको एक–दूसरे में प्रचारित करना चाहिये। इस कारण हिंदी दिवस के दिन उन सभी से निवेदन किया जाता है कि वे अपने बोलचाल की भाषा में भी हिंदी का ही उपयोग करें। हिंदी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी। किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के लिए चार वस्तुएँ विशेष सम्माननीय होती हैं:–

1. राष्ट्र ध्वज – जिसमें देश का मान छिपा होता है।
2. राष्ट्र चिह्न – जिससे देश की पहचान होती है।
3. राष्ट्र भाषा – जो राष्ट्र की आन और वाणी का अभिमान होती है।
4. राष्ट्रीय संविधान – जो देश की शान का प्रतीक होता है।

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि देश को आजाद हुए 75 वर्ष हो गए लेकिन अब भी इसकी कोई राष्ट्रभाषा नहीं है। हमने एक राष्ट्र–ध्वज, एक राष्ट्र–चिह्न, राष्ट्र–गान को तो अपनाया लेकिन हमने हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान नहीं कर सकें। भारत में राष्ट्र–ध्वज और राष्ट्रीय संविधान का तो यथोचित सम्मान प्राप्त है, उनका अपमान करने वाले के लिए समुचित दंड का भी प्रावधान है, लेकिन राष्ट्रभाषा के संबंध में ऐसा नहीं कहा जा सकता।

भाषा मानव समाज की अप्रतिम उपलब्धि है। भाषा भावों, विचारों की अभिव्यक्ति अथवा भाव संप्रेषण का सर्वसुलभ व सशक्त साधन है। तात्विक रूप से भाषा ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है जिसके माध्यम से मानव समूह विचार–विनिमय करता है। इन्हीं ध्वनि–प्रतीकों या शब्दों के भाव शब्द या भाषा द्वारा ही मानव समाज में प्रचलित होते हैं। शब्द की इसी महत्ता के कारण 'सर्वम शब्देन भासते' तथा 'शब्दब्रह्म' की परिकल्पना साहित्य जगत में प्रचलित है। काव्यदर्श में भाषा की शब्दात्मक महिमा की ओर संकेत किया गया है। इतम अन्धतमरू कृत्स्नं जायेत भुवन त्रयं। यदि शब्दाहव्यं योतिरासंसारम् न दीप्यते। इसका अभिप्राय है कि यदि शब्दरूपी योति न होती तो यह सम्पूर्ण जगत् अंधकार में ही रहता अर्थात् अव्यक्त ही रह जाता। वस्तुत: भाषा ही ज्ञान का सर्वसुलभ माध्यम है। इतना ही नहीं, भाषा ही किसी देश की सच्ची पहचान, उस देश की संस्.ति की

संवाहिका होती है। किसी भी राष्ट्र की वैचारिक एवं सामाजिक एकता का आधार भी भाषा ही है।

राष्ट्र की अवधारणा में तीन तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है– भाषा, संस्कृति एवं देश की भौगोलिक परिसीमा अर्थात् मातृभूमि। वस्तुत: भाषा ही संस्कृति का आधार है, भाषा एवं संस्कृति उस देश की भूमिका निर्विवादरूप से महत्वपूर्ण है। ऋग्वेद की ऋचा में इडा, सरस्वती मही त्रिस्त्रोदेवीमयो भुव: की द्वारा भाषा, संस्कृति एवं राष्ट्र के नागरिकों की भावनात्मक एकता एवं सांस्कृतिक चेतना का मूल आधार भाषा है। भाषा में मानव को बाँधने की अपूर्व शक्ति है। संस्कृत साहित्य में भाषा की इस शक्ति के संबंध में कहा गया है कि शब्देष्वाश्रिता शक्तिरू विश्वस्यास्य निबंधिनी अर्थात् शब्द शक्ति (भषिक शक्ति) ही संपूर्ण विश्व को बाँधनेवाली है। विचार–विनिमय मानव एकता का सबल सूत्र है। भाषा का मूल आधार भाव संप्रेषण है। संप्रेषण से ही सभी सामाजिक कार्य–व्यापार निष्पादित किए जाते हैं। विचारों की एकता राष्ट्र के नागरिक की सबसे बड़ी एकता हाती है।

हिंदी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के तहत राजभाषा का दर्जा दिया गया है। हिंदी हजार वर्ष से हमारे सांस्कृतिक विरासत एवं साहित्य की भाषा के साथ–साथ जनता की संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित रही है। संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अन्य अनेक बोलियों को इसने आत्मसात किया है। यह हमारे संस्कृत भाषा की येष्ठ पुत्री एवं उत्तराधिकारिणी तथा सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है। धर्म, अध्यात्म, दर्शन तथा साहित्य के क्षेत्र में पहले जो काम संस्कृत भाषा ने किया, वही कार्य आज हिंदी भाषा कर रही है। आज वेद, उपनिषद्, स्मृतियों, गीता, रामायण, महाभारत की टीकाएं एवं भाष्य हिंदी में उपलब्ध हैं। ज्ञान का अक्षय एवं अपार कोश जो संस्कृत में था वह आज हिंदी के भक्तिकाल के कवियों जैसे कि सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, रहीम तथा संत समाज ने भारतीय संस्कृति के ज्ञान संपदा को हिंदी में आपूरित कर दिया। उन्नीसवीं सदी में भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य हिंदी में किए तथा अपना महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश हिंदी में लिया। इस प्रकार इसकी जड़ें हमारी सांस्कृतिक, दार्शनिक तथा धार्मिक पृष्ठभूमि में गहरे पैठी हुई है। संस्कृत, पालि, प्राकृत अपभ्रंश, शौरसेनी, मागधि, अवधी, ब्रज, अरबी, फारसी, उर्दू की शब्दसम्पदा को आत्मसात कर यह भाषा समुच्चय बन गई है। हिंदी का प्रयोग हिन्दू–मुसलमान, सिख, ईसाई सभी करते हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास के अध्ययन से यह बात सिध्द है कि सिध्दों, नाथों, संतों तथा अनेक पंथों के आचार्यों ने इसे अपने ज्ञान, अध्यात्म तथा उपदेश के प्रचार–प्रसार का माध्यम बनाया। अमीर खुसरो, मलिक मुहम्मद, जायसी, रहीम, रसखान आदि सूफी संतों तथा कवियों ने हिंदी में काव्य रचनाएं कीं। अहिंदी भाषी प्रान्तों के अनेक मनीषियों ने हिंदी को अपनाया तथा देश की स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी के गीतों एवं नारों ने नवजागरण का मंत्र फूंका। चाहे रामप्रसाद बिस्मिल की सरफरोशी की तमन्ना हो, या श्यामलाल गुप्ता का विजयी विश्व तिरंगा प्यारा का जागरण मंत्र, यह सब हिंदी के माध्यम से ही जनमानस में प्रचारित किया गया। इसी कारण से संविधान निर्माताओं ने यह अनुभव किया था कि बहुभाषी भारतवर्ष में एकता की भावना को दृढ करने की आवश्यकता है जिसके हिंदी भाषा ही सर्व समर्थ है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व जिन महापुरुषों ने हिंदी को स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में परिकल्पना की थी उनमें बंगाल के राजा राममोहन राय का नाम आता है। उन्होंने समस्त भारत को एकता के सूत्र में बाँधे रखने के लिए हिंदी को अनिवार्य बताया था। परवर्ती ब्राह्मो समाज के यशस्वी नेता केशवचन्द्र सेन ने सन् 1885 में अपने लेख में लिखा, भारतीय एकता का उपाय है सारे भारत में एक भाषा का व्यवहार हो। हिंदी भाषा को अगर भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बनाया जाए तो यह कार्य सहज और शीघ्र सम्पन्न हो सकता है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कलकत्ता कांग्रेस का अध्यक्षीय भाषण हिंदी में पढ़ते हुए कहा था, हिंदी प्रचार का उद्देश्य किसी भी प्रान्ती भाषा को हानि न पहुँचाते हुए केवल यह है कि आजकल जो काम अंग्रेजी से किया जाता है, वह आगे चलकर हिंदी में किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने अपने वैदिक धर्म के प्रचार का माध्यम हिंदी को बनाया और उनका मन्तव्य था कि सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान एकता है। जहाँ भाषा, भाव और भावना में ऐक्य आ आए, वहाँ सागर में नदियों की भाँति सारे सुख एक–एक करके प्रवेश करने लगते हैं। हिंदी के महान साहित्यकार तथा खड़ी बोली हिंदी के जन्मदाता माने जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था, ''निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को सूल।'' इस प्रकार हम हिंदी को राष्ट्रीयता का पर्याय मानते हुए कह सकते हैं कि हिंदी भारत की भारती है, हिंदी हिन्दुस्तान की हिंदी है। यह हमारे राष्ट्रीय एकीकरण का मूल सूत्र है। अत: हमें अपनी संविधान सम्मत सभी भाषाओं का पूर्ण सम्मान करते हुए राष्ट्रीय भावना और एकता

को परिपुष्ट करने के लिए राजभाषा हिंदी को उसके पद पर सही अर्थो में निष्ठापूर्वक स्थापित करने का संकल्प लेना चाहिए।

भारत देश कई विद्याओं का मिश्रण है। उसमें कई भाषाओं का समावेश है। सभी भाषाओं में हिंदी को देश की मातृभाषा का दर्जा दिया गया था। हिंदी आज दुनिया में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषाओं में से एक है। विडंबना यह है कि वर्तमान समय में हिंदी बोलने वालों की संख्या दिन–प्रतिदिन कम होती जा रही है। हमारे युवा वर्ग यह तो मानते हैं कि हिंदी मातृभाषा है और उन्हें इसे बोलना चाहिए पर अच्छा करियर बनाने और बेहतर नौकरी पाने की चाह में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग उनकी मजबूरी बन गई है। पढ़े–लिखे लोग जो बड़ी–बड़ी कंपनियों में जॉब कर रहे हैं उन्हें आज के समय में हिंदी का कोई भविष्य नहीं दिखता। मातृभाषा का जुड़ाव जरूरी माना की हिंदी भाषा तकनीकी ज्ञान से दूर है, लेकिन आज भी तकनीकी एकता से अधिक मानवीय एकता महत्व रखती है। मानवीय एकता तब आएगी जब सबमें समानता होगी और मतभेद कम होगा। यह मतभेद भाषा का मतभेद है। माना अंग्रेज़ी आज की जरूरत है, लेकिन क्या जरूरत के लिए नींव को छोड़ा जा सकता है? यदि हिंदी को अलग कर दिया जाये तो गांव और शहरों में बढ़ता मतभेद और गहरा हो जाएगा जो देश के विकास में एक बड़ी बाधा है। भाषा ही व्यक्ति को जोड़ती है। व्यक्ति को जोड़ने से परिवार बनता है और परिवार जुड़ने से समाज का निर्माण होता है। समाज से गांव, गांव से शहर, शहरों से महानगर और महानगरों से देश। इस प्रकार देश के विकास में इस जुड़ाव का मजबूत होना आवश्यक है। खासकर यह जुड़ाव भाषा के माध्यम से ही मजबूत हो सकता है क्योंकि देश में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा हिंदी है। हिंदी भाषा के साथ दिलचस्प बात यह है कि यह जहाँ पर बोली जाती है वहाँ का स्थानीय प्रभाव उस भाषा पर दृष्टिगोचर होता है। जैसे हम इंदौर वाले मालवी मिश्रित हिंदी अर्थात सीधी–सादी बिना लाग लपेट वाली हिंदी बोलते हैं। मुंबई के लोग बम्बईया हिंदी बोलते हैं। इस तरह उनकी टोन बदल जाती है। हिंदी की विशेषता है कि यह जैसी बोली जाती है, वैसी ही लिखी भी जाती है, जबकि अंग्रजी की वर्तनी और उच्चारण में बहुत अंतर होता है, यह हिंदी की महानता है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक हिंदी अपना स्वरूप बदलती गई है, लेकिन हर हिन्दुस्तानी के मुँह में हिंदी जरूर समाई हुई है। हिंदी जन–जन की भाषा है। जब तक इसका विकास नहीं होगा तब तक देश के विकास में बाधा पहुंचेगी। राष्ट्रीय एकता और देश विकास में योगदान स्वयं हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने अमेरिका में जाकर मातृभाषा में भाषण दिया था। यह हमारे लिए गर्व की बात है। मातृभाषा देश की धरोहर होती है। जिस प्रकार हम तिरंगें को सम्मान देते हैं वैसे ही हमारी भाषा भी सम्माननीय है। जब तक हम खुद इस बात को स्वीकार नहीं करते तब तक इसे दूसरों तक पहुंचना कठिन है। हिंदी दिवस को महज एक दिन न समझें। राष्ट्रीय एकता एवं देश विकास हम सब की जरूरत है जिसके लिए सभी को एक साथ आगे आना जरूरी है और इस दिशा में हिंदी को वास्तविक सम्मान मिले यह अत्यंत आवश्यक है। किसी भाषा की सबलता केवल बोलने वाले पर निर्भर नहीं होती वरन उस भाषा में जनोपयोगी और विकास के काम कितने होते हैं इस पर निर्भर होता है। उसमें विज्ञान तकनीकि और श्रेष्ठतम् आदर्शवादी साहित्य की रचना कितनी होती है। साथ ही तीसरा और सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उस भाषा के बोलने वाले लोगों का आत्मबल कितना महान है। अत: हिंदी को जनोपयोगी और काम–काज की भाषा के रूप में प्रयोग करें ताकि राष्ट्र का चरमोंत्कृष्ट विकास हो सकें।

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

हिन्दी : संघर्ष की कहानी

रुचि बिष्ट
अधिकारी (राजभाषा), बठिंडा यूनिट

आज का युग विज्ञान और तकनीक का है, जिसमें हम पग-पग पर तकनीक से टकराते हैं। जो लोग इस तकनीक को अपना लेते है, वह अपने काम आसानी से कर लेते हैं और जो नहीं कर पाते या जिन्हें इसके लिए दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है, वह अपना काम जैसे-तैसे पुरा कर लेते हैं। जो इस झंझट में नहीं पड़ना चाहते हैं, वह समय के साथ चलने वाली स्पर्धा से पिछड़ जाते हैं और भविष्य में एक दिन उनके मन में भी विचार आता है कि यदि वह समय की मांग को समझकर तकनीक के साथ चल पड़ते तो आज वह वहाँ होते जहाँ उनके साथी खड़े हैं। इसका एक साधारण सा उदाहरण है कि आजकल कंप्यूटर द्वारा आसानी से रेल का टिकट बुक किया जा सकता है। रेल टिकट काउंटर पर लंबी लाइन में लगकर पर्ची भरने से अच्छा हैं, कंप्यूटर पर रेल विभाग की ऑनलाइन साईट पर जाकर मिनटों में रेल का कन्फर्म टिकट प्राप्त किया जा सकता है।

कहने का तात्पर्य है कि तकनीक और कंप्यूटर ने हमारे कई काम आसान कर दिए हैं। भारत सरकार भी आज-कल डिजिटल इंडिया का सपना देख रही है। ऐसी स्थिति में क्यों न सूचना प्रौद्योगिकी का भरपूर लाभ उठाया जाए और इसी के माध्यम से हमारी राजभाषा हिंदी के विकास के लक्ष्य को भी साधा जाए? आज-कल कंप्यूटर पर हिंदी में काम करना बहुत आसान हो गया है।

कंप्यूटर में अब ऐसे भी सॉटवेयर (जैसे- गुगल हिंदी इनपूट और माइक्रोसॉट इंडिक लैंगवेज टूल) हैं जिसमें अपनी बात अंग्रेजी में लिखो और उसका हिन्दी रूप सामने आ जाता है। इसके अलावा धीरे-धीरे ही सही हिन्दी अपना अस्तित्व बढ़ाती जा रही है। विश्व की विभिन्न भाषाओं में तीसरा स्थान प्राप्त करने वाली इस भाषा को अहिन्दी भाषी राज्यों में पढ़ा और समझा भी जाने लगा है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विदेशियों में हिन्दी भाषा सीखने और जानने वालों की संख्या में गुणात्मक वृद्धि हो रही है। इसके ठीक विपरीत हमारे अपने देश में बच्चे दूसरी कक्षा से ही, जब उन्हें क ख ग सिखाया जाता है, हिन्दी के नाम पर नाक-भौंह सिकोड़ना शुरू कर देते हैं - क्या कभी हमने जानने और जांचने की कोशिश की कि ऐसा क्यों होता हैं?

एक तरफ हिन्दी आगे बढ़ रही है तो दूसरी तरफ हिन्दी की कक्षा में पढ़ने वाला छात्र जब अपने शिक्षक से कक्षा में प्रवेश की अनुमति चाहता है तो कहता है ''मे आई कम इन सर''। इसका दु:खद पहलू तो यह भी है कि जो लोग हिन्दी के विकास की बात करते हैं वे स्वयं भी इसका अनादर करने से बाज नहीं आते।

आमतौर पर लोग कर्नाटक को कर्नाटका, केरल को केरला कहने में गर्व महसूस करते हैं। उसी प्रकार आम बोल-चाल की भाषा में हिन्दी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग बढ़ रहा है और लोग दोष एक-दूसरे पर मढ़ रहे हैं लेकिन इसके लिए सार्थक प्रयास कहीं नहीं दिख रहे हैं। शासकीय कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने का आदेश तो दिया जाता है लेकिन इसका परिपत्र भी अंग्रेजी में लिखा जाता है।

अंग्रेजी भाषा आज इतनी भारी हो गई है कि घर में छोटा बच्चा जब ट्विंकल-ट्विंकल लिटिल स्टार की कविता सुनाता है तो सीना गर्व से फूल जाता है। पहले प्राथमिक कक्षा में हिन्दी की बारहखड़ी सिखाई जाती थी। इससे मात्राओं और शुद्ध उच्चारण का ज्ञान होता था। अब बच्चों में हिन्दी भाषा का ज्ञान औपचारिकता तक सिमट गया है।

जिस देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक कभी हिन्दी का ही बोलबाला रहा हो वहां आज इस भाषा को अपने अस्तित्व के लिए जूझना पड़ रहा है। लोग शायद भूल चुके हैं कि ब्रिटिश नौकरशाह मैकाले ने अपनी कूटनीति के तहत ही भारत पर अंग्रेजी थोपी थी और हमारी भाषा संस्कृति पर सुनियोजित ढंग से प्रहार किया। इसका असर यह हुआ कि अंग्रेजी शासक की भाषा बनी और हिन्दी को गुलामी का दर्जा मिला जो आज तक बदस्तूर जारी है।

विशेषतौर पर युवाओं के बीच तो हिन्दी जैसे गुम सी होती जा रही है। आज के युवा मानते हैं कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है और हमें इसे बोलना चाहिए, पर अच्छा करियर बनाने के लिए और बेहतर नौकरी के लिए अंग्रेजी का प्रयोग हमारी मजबूरी बन गया है।

आपने बहुत से संस्थानों के लिफाफों पर छपा देखा होगा कि हिन्दी दुनिया की तीसरी बड़ी भाषा है जबकि हकीकत यह है कि अंग्रेजी के बाद हिन्दी ही विश्व की दूसरे नंबर पर सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। चीनी भाषा को दूसरे स्थान पर माना गया है पर शुद्ध चीनी भाषा जानने वालों की संख्या हिन्दी जानने वालों से काफी कम हैं।

क्या आप जानते हैं विश्व हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है? आप में से अधिकांश का जवाब होगा 14 सितंबर। लेकिन नहीं, यह गलत जवाब है वास्तव में विश्व हिन्दी दिवस प्रतिवर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है।

इसका उद्देश्य है विश्व में हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए वातावरण निर्मित करना, हिन्दी के प्रति अनुराग पैदा करना, हिन्दी की दशा के लिए जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में प्रस्तुत करना है।

विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिन्दी के लिए अनूठे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

हमें अपनी भाषा को अगर पहचान देनी है तो इसके लिए प्रयास भी अपने घर से करने होंगे, केवल बोलने से कार्य नहीं होते उनके लिए दृढ़ होना पड़ता है और कार्यों को दिशा देनी पड़ती है।

आशा है ये लेख आप तक मेरे हिन्दी के प्रति भावनाओ ओर प्रेम को उजागर करेगा।

हिन्दी मात्र एक भाषा नहीं मातृभाषा है इसका सम्मान करें और इसके विकास में अपना सहयोग दें।

भारत में वर्चुअल कोर्ट का भविष्य

अरूण कुमार

सहायक प्रबंधक (विधि), निगमित कार्यालय

''संकट शब्द दो घटकों से बना होता है। एक खतरे का प्रतिनिधित्व करता है, और दूसरा अवसर का प्रतिनिधित्व करता है''– जॉन एफ़ कैनेडी

कोविड–19 महामारी ने निश्चित रूप से एक आर्थिक अवसाद और कई अन्य तबाही (जैसे कि स्वास्थ्य क्षेत्र और औद्योगिक क्षेत्र) को जन्म दिया है। इसी तरह का प्रभाव देश के कानूनी क्षेत्र पर पड़ा है। देशव्यापी तालाबंदी के कारण, भारत के सर्वोच्च न्यायालय, लगभग हर उच्चन्यायालय को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया है। लेकिन क्या इस संकट को अवसर के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है? यदि हाँ, तो कैसे ?

इस लॉकडाउन अवधि का उपयोग भारत की न्यायपालिका द्वारा एक अधिक विकसित न्यायालय प्रणाली और न्यायिक प्रणाली में प्रौद्योगिकी के उपयोग को उन्नत करने के अवसर के रूप में किया जा सकता है। अदालतों से कुछ बोझ मुक्त करने के तरीकों में से एक वर्चुअल कोर्ट स्थापित करना है। अब, मन में यह सवाल आता है कि ''वर्चुअल कोर्ट क्या है? क्या यह ई–कोर्ट से अलग है?''

वर्चुअल कोर्ट क्या हैं?

जैसा कि नाम से पता चलता है कि वर्चुअल कोर्ट ऐसे कोर्ट हैं जो विभिन्न सॉटवेयर और टूल्स की मदद से रिमोट वर्किंग सिस्टम का उपयोग करते हैं। इसका उद्देश्य अदालत में मानवीय उपस्थिति की आवश्यकता को समाप्त करना है ताकि वादी या मुवक्किल या अदालत के कर्मचारियों की अनुपलब्धता के कारण मामलों के निर्णय में देरी न हो।

ई–कोर्ट वर्चुअल कोर्ट के लिए एक उपसमुच्चय की तरह हैं, क्योंकि वे वर्चुअल कोर्ट के कामकाज में सहायता के लिए उपयोग की जाने वाली वेबसाइटों और घटकों को संदर्भित करते हैं। कानूनी प्रणाली के कम्प्यूटरीकरण के लिए उपयोग की जाने वाली वेबसाइटों, मोबाइल एप्लिकेशन और विभिन्न अन्य सॉटवेयर को ई–कोर्ट का हिस्सा कहा जा सकता है।

भारत एक ऐसी प्रणाली की प्राप्ति की ओर बढ़ रहा है, जहां व्यक्तिगत रूप से अदालत जाने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। खैर, यह कहना गलत नहीं है कि हमारे पास ये अदालतें नहीं हो सकती हैं। ''वर्चुअल कोर्ट'' यदि ठीक से लागू किया जाता है तो देश के नागरिकों को समयबद्ध और प्रभावी न्याय प्रदान करेगा। आइए देखें कि हमारे देश की न्यायिक प्रणाली में अब तक क्या हासिल हुआ है।

26 जुलाई 2019 को तीस हजारी कोर्ट में दिल्ली का पहला वर्चुअल कोर्ट लॉन्च किया गया। उसके बाद, 17 अगस्त 2019 को, पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय ने फरीदाबाद में वर्चुअल कोर्ट की शुरुआत की और अदालत हरियाणा के यातायात चालान मामलों में डील करती है। यह परियोजना भारत के सर्वोच्च न्यायालय की ई–समिति के मार्गदर्शन में शुरू की गई थी। यहां पालन की जाने वाली प्रक्रिया सरल और सुविधाजनक है। मामला सीधे वर्चुअल कोर्ट में आता है जिसकी अध्यक्षता मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट करते हैं। फिर, एक सम्मन उत्पन्न होता है और आरोपी को ईमेल या एसएमएस के माध्यम से सूचित किया जाता है। इसके बाद आरोपी वेबसाइट पर जा सकता है और अगर वह अपना गुनाह कबूल करता है तो जुर्माने की रकम दिखाई जाएगी। जुर्माना अदा करने के बाद मामला स्वत: निस्तारित हो जाएगा। यदि अभियुक्त यातायात चालान को चुनौती देना चाहता है, तो मामले का निपटारा क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार के अनुसार नियमित न्यायालय द्वारा किया जाएगा। यह प्रक्रिया मामलों के निपटारे में तेजी लाने में मदद करती है, खासकर उन मामलों में जहां पहले आरोपी को अपना दोष स्वीकार करने के लिए भी अदालत का दौरा करना

पड़ता था। यह प्रक्रिया कोर्ट के फुटफॉल को कम करने में भी मदद करती है।

ई–कोर्ट परियोजना

यह परियोजना ''भारतीय न्यायपालिका में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीय नीति और कार्य योजना–2005'' के आधार पर शुरू की गई थी, जिसे भारत के एससी की ई–समिति द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस योजना के पीछे का उद्देश्य न्यायालयों के कामकाज में तकनीकी प्रगति लाना है। इस परियोजना की प्रस्तावित गतिविधियों को 2 चरणों में विभाजित किया गया था।

इस परियोजना का चरण –1, (जो 2007 में शुरू हुआ) मुख्य उद्देश्य न्यायिक प्रणाली में आईसीटी (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी) के कार्यान्वयन की शुरुआत करना था। यह अदालतों को कंप्यूटर, लैन (लोकल एरिया नेटवर्क) के माध्यम से इंटरनेट कनेक्शन और आवश्यक सॉटवेयर और हार्डवेयर (जैसे प्रिंटर, स्कैनर, आदि) जैसी सुविधाएं प्रदान करके किया गया था।

इसके अलावा, न्यायाधीशों को इंटरनेट के साथ लैपटॉप दिए गए, डिजिटल हस्ताक्षर दिए गए और जिला अदालत की वेबसाइटों को कार्यात्मक बनाया गया। इन वेबसाइटों के माध्यम से, नागरिक अपने मामले की स्थिति, दैनिक आदेश पत्रक और अंतिम आदेश भी देख सकते हैं।

चरण –2 को ई–समिति, एनआईसी, डीओजे (न्याय विभाग), डाइटी और वित्त मंत्रालय की सहायता और सहयोग से अधिनियमित किया गया। ढांचागत मॉडल को बदल दिया गया और डीएलएसए (दिल्ली कानूनी सेवा प्राधिकरण), एनजेए (राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी), एसजेए (राज्य न्यायिक अकादमी) और तालुका कानूनी सेवा समिति के कार्यालयों में कम्प्यूटरीकरण किया गया। सीआईएस (केस इंफॉर्मेशन सॉटवेयर) के नाम से जाना जाने वाला एक सामान्य सॉटवेयर प्लेटफॉर्म भी बनाया गया है, जिसके साथ पिछले मामलों सहित सभी अदालती डेटा अपलोड किए जाएंगे। अदालतों और जेलों में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की सुविधा अपने अंतिम चरण में है।

जिला और तालुका अदालतों के लिए ई–कोर्ट सेवाएं, न्यायिक अधिकारियों के लिए जस्टआईएस मोबाइल ऐप जैसे मोबाइल एप्लिकेशन भी बनाए गए हैं। चरण 2 की उपलब्धियों में ई–फाइलिंग जैसी वेबसाइटें भी शामिल हैं, जिसके माध्यम से नागरिक घर से अपना मामला दर्ज कर सकते हैं, वास्तविक समय में मामले की स्थिति की जांच कर सकते हैं, ई–पे सुविधा के माध्यम से अदालत शुल्क का भुगतान कर सकते हैं।

चरण 2 के अंत तक, मैनुअल रजिस्टरों को बंद कर दिया जाएगा, अदालत से संबंधित सभी कार्यों के लिए क्लाउड–आधारित प्रणाली की शुरुआत और सभी मामलों का डिजिटलीकरण, चाहे वह लंबित हो या निर्णय लिया गया हो।

निकट भविष्य में 'वर्चुअल कोर्ट'' की संभावना:

इससे पहले कि हम भारत में ''वर्चुअल कोर्ट'' की संभावना के बारे में बात करें, इन ''वर्चुअल कोर्ट'' की स्थापना और उचित कामकाज से क्या हासिल किया जा सकता है, इसके बारे में विचार करना बेहतर है।

''वर्चुअल कोर्ट'' की स्थापना से न्यायालय प्रणाली का पूर्ण कम्प्यूटरीकरण होगा, और नागरिक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, ई–फाइलिंग आदि जैसी सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। एक ''वर्चुअल कोर्ट'' ई–हस्ताक्षर या डिजिटल हस्ताक्षर के उपयोग को सक्षम करेगी, और लंबित मामलों, आदेशों आदि का एक उचित डेटाबेस होने से हमारे देश की न्यायिक प्रणाली में एक अधिक वादी–अनुकूल यूजर इंटरफेस स्थापित किया जा सकता है।

अब, यह सब हासिल करने के लिए, निकट भविष्य में ऐसी 'वर्चुअल कोर्ट'' की संभावना का विश्लेषण करना और यह अनुमान लगाना उचित है कि यह निकट भविष्य कितना निकट है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। यह सब वर्चुअल कोर्ट के फायदे और नुकसान के बारे में पढ़ने के बाद किया जा सकता है।

लाभ

उचित कार्यान्वयन के साथ ऑनलाइन अदालतों की एक पूर्ण प्रणाली से बुनियादी ढांचे, कर्मचारियों, सुरक्षा इत्यादि जैसे अदालती खर्चो को समाप्त करने में मदद मिलेगी। मामलों में शामिल पक्षों को व्यक्तिगत रूप से अदालत में आने की आवश्यकता नहीं होगी, जिससे लागत कम हो जाती है। यात्रा का समय और प्रक्रिया को लागत प्रभावी बनाता है।

संस्थानों के डिजिटलीकरण और कम्प्यूटरीकरण से न्यायिक प्रणाली के कामकाज में जवाबदेही और बेहतर प्रशासन भी आएगा। जैसा कि हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि अदालतों में कोविड –19 के

प्रसार को कम करने के लिए शुरू की गई वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा ने कोर्टहाउस ट्रैफिक को डायवर्ट करने में मदद की है और रिमोट वीडियो तकनीक की मदद से वर्चुअल कोर्ट में कदम रखा है।

हमारे पास जो सबसे बड़ा लाभ होगा, वह है 24/7 काम करने के लिए अदालत का लचीलापन। अदालत में मामलों का एक बड़ा बैकलॉग है, और न्याय में देरी से नागरिकों का न्यायपालिका पर विश्वास की कमी होती है। इससे प्रक्रिया पर जोर दिया जाएगा और मामलों का निर्णय समयबद्ध तरीके से किया जा सकेगा।

नुकसान

हर चीज के अपने फायदे और नुकसान होते हैं। भारत में 'वर्चुअल कोर्ट' के मामले में भी ऐसा ही है। यह भारत के कानूनी समुदाय को विकसित और उन्नत करने का सबसे अच्छा और संभव तरीका प्रतीत हो सकता है, और इसमें कोई नुकसान शामिल नहीं है। हालांकि, यह मामला नहीं है।

गवाहों की पहचान की प्रयोज्यता और प्रामाणिकता, अदालत के समक्ष पेश किए गए साक्ष्य आदि से संबंधित विभिन्न कानूनी समस्याएं होंगी। यहां तक कि अदालती कार्यवाही की गोपनीयता भी खतरे में होगी क्योंकि अंत में, पूरे सेटअप में प्रौद्योगिकी का उपयोग शामिल है। और कई अन्य सॉटवेयर और टूल जिनमें डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता से संबंधित कुछ खतरे हो सकते हैं।

साथ ही, एक और व्यावहारिक समस्या जो भारत–विशिष्ट है, वह यह है कि भारत में, 24 उच्चन्यायालय, 600 से अधिक जिला न्यायालय और अन्य अधीनस्थ न्यायिक संस्थान हैं। आवश्यक सुविधाओं को स्थापित करने और स्थापित करने की लागत के लिए भारी मात्रा में निवेश की आवश्यकता होगी। न्यायिक प्रणाली को दूरस्थ रूप से काम करने वाली सफल 'आभासी' दुनिया में बदलने के लिए, तकनीकी उन्नयन और अदालत में निवेश सर्वोत्कृष्ट है।

इसके अलावा, एक महत्वपूर्ण पहलू जिस पर ध्यान नहीं जाता है, वह यह है कि क्या त्वरित न्याय से न्याय की गुणवत्ता में गिरावट आएगी? हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि न्याय की त्वरित डिलीवरी हमें न्याय की दक्षता और प्रभावशीलता पर खर्च न करे। क्योंकि अधिक प्रभावी न्याय प्रणाली के लिए, प्रौद्योगिकी सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए।

विभिन्न देशों के बीच आभासी न्यायालयों की स्थापना

दुनिया भर के न्यायालय विभिन्न तकनीकी विकासों की मदद से आभासी अदालतों की ओर रुख कर रहे हैं। टेक्सास की अदालतों ने भी आपराधिक मामलों की सुनवाई शुरू कर दी है और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से न्यायिक कार्यवाही जारी रखी है ताकि कैदियों को जेल से अदालत की यात्रा न करनी पड़े।

भारत में आभासी अदालतों के दायरे का विश्लेषण और भविष्यवाणी करने के लिए, हमें अन्य देशों में इन अदालतों के विकास और स्थिति का भी निरीक्षण करना चाहिए। इससे हमें यह जानने में मदद मिलेगी कि भारत में इंटरनेट अदालतों के लागू होने से कौन से मुद्दे सामने आएंगे और ऐसी समस्याओं का समाधान कैसे किया जा सकता है।

निष्कर्ष

हर चीज का व्यापक तरीके से विश्लेषण करने के बाद, हम इस तथ्य के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं कि हां, हर संकट एक नया अवसर लाता है। खुद को विकसित और उन्नत करने का अवसर, भविष्य में हमारे रास्ते में आने वाली समस्याओं और बाधाओं से खुद को प्रतिरक्षा करने का अवसर। भारत में 'वर्चुअल कोर्ट' के भविष्य का भी यही हाल था। हमने पहले एक सवाल उठाया था कि यह भविष्य कितना 'निकट' है। खैर, हमें जवाब मिल गया। यह कहना ठीक है कि बॉलपार्क का आंकड़ा 1–2 साल और होगा, और हम अपने देश में 'वर्चुअल कोर्ट' की एक अच्छी तरह से स्थापित कार्य प्रणाली देख सकते हैं।

हालाँकि, यह तभी प्राप्त किया जा सकता है जब हम उन बाधाओं को न भूलें जो हमारे रास्ते में हैं और हम उन्हें कैसे दूर कर सकते हैं। भारत में अभी भी आभासी अदालतों की पूर्ण प्रणाली नहीं होने का कारण कार्यान्वयन प्रक्रिया में मौजूद विभिन्न खामियां हैं। यह पाया गया कि विभिन्न जिला और अधीनस्थ न्यायालय राष्ट्रीय न्यायिक डेटा ग्रिड (एनजेडीजी) को अद्यतन नहीं कर रहे थे जो देश की न्यायिक प्रणाली के कामकाज में जवाबदेही रखने के उद्देश्य को विफल करता है।

साथ ही, कई बार हम न्यायालय प्रणाली को अपने कानूनी समुदाय से अलग कर देते हैं। हमारे देश के कानूनी समाज में वादी, कानून फर्म, न्यायिक अधिकारी और इस क्षेत्र में काम करने वाला हर कर्मचारी शामिल है। और एक संस्थान के विकास और उन्नति के लिए, दूसरों के लिए भी खुद को अपग्रेड करना महत्वपूर्ण है। यहां तक कि कानून फर्मो को भी ''वर्चुअल लॉ फर्म'' के रूप में स्थापित करने के लिए प्रौद्योगिकी और अधिक को अनुकूलित करने की आवश्यकता है।

एमसीए 21 संस्करण 3.0 : डिजिटल कॉर्पोरेट अनुपालन पोर्टल

दिव्या शर्मा,
कंपनी सचिव, निगमित कार्यालय

एम.सी.ए. 21 कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय का ऑनलाइन पोर्टल है। इस पोर्टल ने कंपनी से संबंधित सभी सूचनाओं को विभिन्न हितधारकों और आम जनता के लिए सुलभ बना दिया है। इसे सर्वप्रथम 2006 में लॉन्च किया गया था।

एमसीए 21 संस्करण 1 की प्रमुख विशेषता विभिन्न दस्तावेजों, रिटर्न, फॉर्म की इलेक्ट्रॉनिक फाइलिंग थी, जिन्हें कंपनी रजिस्ट्रार को विभिन्न अनुपालनों की सूचना देने के लिए कॉरपोरेट्स द्वारा प्रस्तुत किया जाना आवश्यक था।

ई-फाइलिंग के प्रमुख लाभ:-

- सभी नागरिकों के साथ सुलभ संप्रेषण एवं संपर्क स्थापित करना।
- कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय में लगभग कागज रहित अप्रत्यक्ष कार्यालय (बैक ऑफिस) प्रचालन हैं, जिससे अप्रत्यक्ष कार्यालय के काम की गति में तीव्रता आई है। यद्यपि, अभी भी सीमित मात्रा में कागज का उपयोग किया जाना आवश्यक है, परन्तु इस प्रणाली के चालू होने के पश्चात् अधिकांश ऑपरेशन पेपर रहित हो गए हैं।
- यह एम.सी.ए. सेवा प्रदान किए जाने वाली समयावधि को कम करने के साथ-साथ पूरे प्रचालन को पारदर्शिता भी प्रदान करता है।

एमसीए 21 संस्करण 1 प्रणाली की एक अन्य प्रमुख विशेषता इन दस्तावेजों की जांच करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति द्वारा आर.ओ.सी. के दस्तावेजों को ऑनलाइन देख पाना है। इसे संभव बनाने के लिए मौजूदा दस्तावेज़ों की लगभग छह करोड़ पृष्ठों को सिस्टम में स्कैन किया जाएगा। कंपनी के स्थायी दस्तावेज़ों, नवीनतम वार्षिक रिपोर्ट और वर्तमान चार्ज दस्तावेज़ों को डिजिटल दस्तावेजों के रूप में परिवर्तन हेतु स्कैन किया जाएगा, जिसे डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से एम.सी.ए. के एक सक्षम प्राधिकारी द्वारा प्रमाणित किए जाने के पश्चात् उपलब्ध कराया जाएगा। इस प्रणाली के लाइव होने पर आवश्यक आर.ओ.सी. शुल्क के भुगतान करने पर किसी भी कंपनी के रिकॉर्ड को इंटरनेट के माध्यम से कहीं से भी प्राप्त किया जा सकेगा। हालांकि, यह केवल उन्हीं दस्तावेजों तक सीमित होगा, जो वर्तमान में आर.ओ.सी. फाइलों में उपलब्ध हैं। लेकिन भविष्य में कंपनियों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज़ों से एक समृद्ध सामग्री इलेक्ट्रॉनिक भंडार बनना अपेक्षित है।

वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान 25 मई 2021 को कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय ने डेटा एनालिटिक्स संचालित एमसीए 21 संस्करण 3.0 लॉन्च किया है। इस संस्करण में ई-निर्णय, ई-परामर्श और अनुपालन प्रबंधन के लिए अतिरिक्त मॉड्यूल होंगे। एमसीए 21 प्रणाली भारत सरकार की पहली मिशन मोड ई-गवर्नेंस परियोजना है।

एमसीए 21 संस्करण 3.0 प्रोजेक्ट एक प्रौद्योगिकी-संचालित दूरंदेशी प्रोजेक्ट है, जिसे प्रवर्तन को सशक्त करने, व्यवसाय करने में सुगमता को बढ़ावा देने, उपयोगकर्ता के अनुभव को बढ़ाने, नियामकों के बीच निर्बाध एकीकरण और डेटा विनिमय की सुविधा के लिए परिकल्पित किया गया है। परियोजना में उन्नत विश्लेषण के लिए उच्च मापदंड और क्षमताओं के साथ सूक्ष्म-सेवा वास्तुकला होगी।

वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप और ए.आई. और एम.एल. जैसी उभरती हुई प्रौद्योगिकियों की सहायता से एमसीए 21 संस्करण 3 की परिकल्पना भारत में कॉर्पोरेट नियामक वातावरण में बदलाव लाने के लिए की गई है।

वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान लॉन्च किए जाने वाले एमसीए 21 के प्रमुख घटक हैं

- **ई-जांच:** एम.सी.ए. एक केन्द्रीय जांच प्रकोष्ठ स्थापित करने की प्रक्रिया में है, जो एम.सी.ए. 21 रजिस्ट्री पर कॉरपोरेट द्वारा दाखिल किए गए सीधी प्रक्रिया (एस.टी.पी.) प्रपत्रों की छानबीन करेगा और उन कंपनियों को चिह्नित करेगा जिनकी गहराई से जांच किये जाने की जरूरत है।
- **ई-न्यायिक निर्णय:** कंपनी रजिस्ट्रार (आर.ओ.सी.) और क्षेत्रीय निदेशक (आर.डी) द्वारा की जाने वाली निर्णय प्रक्रिया में बढ़ते मामलों का प्रबंधन करने के लिए ई-न्यायिक मॉड्यूल की परिकल्पना की गयी है। उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिए निर्णय की पूरी प्रक्रिया को डिजिटल रूप दिया जाएगा। यह हितधारकों के साथ ऑनलाइन सुनवाई आयोजित करने और इलेक्ट्रॉनिक रूप से

अधिनिर्णय के लिए एक मंच प्रदान करेगा।

- **ई-परामर्श:** प्रस्तावित संशोधनों और मसौदा नियमों आदि पर लोगों से परामर्श की वर्तमान प्रक्रिया को स्वचालित बनाने और इसे बेहतर करने के लिए, एम.सी.ए. 21 संस्करण 3.0, ई-परामर्श मॉड्यूल के रूप में एक ऑनलाइन मंच प्रदान करेगा, जिसमेंप्रस्तावित संशोधन/मसौदा विधान आदि एमसीए की वेबसाइट पर उपलब्ध कराये जायेंगे। उपयोगकर्ता अपने विचार और सुझाव डिजिटल प्रारूप में दे सकेंगे। इसके अलावा, एम.सी.ए. के संदर्भ में, उक्त प्रणाली ए.आई. संचालित भावना विश्लेषण, हितधारकों के इनपुट के समेकन और वर्गीकरण तथा इसके आधार पर रिपोर्ट बनाने की सुविधा भी प्रदान करेगी।

- **अनुपालन प्रबंधन प्रणाली (सीएमएस):** सी.एम.एस. अनुपालन नहीं करने वाली कंपनियों/एल.एल.पी. की पहचान करने, डिफॉल्ट करने वाली कंपनियों/एल.एल.पी. को ई-नोटिस जारी करने, एम.सी.ए. के आंतरिक उपयोगकर्ताओं को सतर्कता की सूचना देने आदि में एम.सी.ए. की सहायता करेगा। सी.एम.एस., नियम आधारित अनुपालन की जांच करने के लिए एक प्रौद्योगिकी मंच/समाधान के रूप में काम करेगा, जिसमें कॉर्पोरेट के प्रभावी शासन के लिए एमसीए द्वारा ई-नोटिस जारी किये जायेंगे।

- **एमसीए लैब:** एम.सी.ए. 21 संस्करण 3 के हिस्से के रूप में, एक एम.सी.ए. लैब स्थापित किया जा रहा है, जिसमें कॉर्पोरेट कानून विशेषज्ञ शामिल होंगे। एमसीए लैब के प्राथमिक कार्य होंगे – अनुपालन प्रबंधन प्रणालीकी प्रभावशीलता, ई-परामर्श मॉड्यूल, कार्यान्वयन मॉड्यूल आदि का मूल्यांकन करना और इन्हें बेहतर बनाने के लिए सुझाव देना। लैब, इन मॉड्यूल द्वारा तैयार परिणामों की सत्यता सुनिश्चित करने में भी एमसीए की मदद करेगा।

इसके अतिरिक्त, एमसीए 21 संस्करण 3.0 में एक संज्ञानात्मक चैट बटन, सक्षम हेल्पडेस्क, मोबाइल ऐप, परस्पर क्रिया उपयोगकर्ता डैशबोर्ड, यू.आई./यू.एक्स. तकनीकों का उपयोग करके बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव और ए.पी.आई. के माध्यम से निर्बाध डेटा प्रसार होगा।

कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय के 21 संस्करण 3.0 के लाभ:

- कानून में ऐतिहासिक परिवर्तनों के लिए एक ट्रैकिंग प्रणाली के साथ-साथ अद्यतन विधानों तक आसान पहुंच।
- यह कॉर्पोरेट अनुपालन कार्य संस्कृति को नया अर्थ देने के साथ-साथ नियामक और शासन प्रणाली को बढ़ावा देगा।

वित्तीय वर्ष 2021-22 में एमसीए 21 संस्करण 3 को चरणबद्ध तरीके से विकसित और क्रियान्वित किया जाएगा।

चरण-1 (मई 2021) में निम्नलिखित वेब पेजों को नया रूप दिया गया है:-

- होम पेज
- हमारे बारे में
- डेटा और रिपोर्ट
- हमसे संपर्क करें
- समाचार और अपडेट
- मध्यस्थता और सुलह

उपरोक्त के अतिरिक्त निम्नलिखित नई सेवाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं:-

ई-बुक – एमसीए द्वारा प्रशासित सभी अधिनियमों के लिए ई-बुक्स को शामिल करने के लिए ई-बुक को संशोधित किया गया है, जिसमें फ़िल्टर, सॉर्टिंग और टाइमलाइन जैसी अतिरिक्त सुविधाएं प्रदान की गई हैं। अधिक जानकारी के लिए कृपया ई-बुक पर अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न देखें।

ई-परामर्श – एक नया ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म जिसमें प्रस्तावित संशोधनों/मसौदा विधानों पर हितधारक/उपयोगकर्ता टिप्पणियां और सुझाव प्रस्तुत कर पाएंगे।

सभी मॉड्यूल का एमसीए संस्करण 2 से संस्करण 3 की अक्टूबर 2021 में प्रतिस्थापन होने की संभावना है।

꧁ वस्तु एवं सेवा कर 2021: कड़े नियम हुए आसान ꧂

आरती गुप्ता
उप वित्त प्रबंधक, निगमित कार्यालय

अभी तक कोई भी रजिस्टर्ड व्यापारी जो टैक्स अपनी खरीद पर बेचने वाले व्यापारी को देता था, उसका क्रेडिट उसे मिलता था। ताकि वह आउटफुट टैक्स की लायाबिलिटी से कम कर सके। इसके कुछ प्रावधानों में बदलाव किया गया है। पिछले कुछ समय से सरकार फेक इंश्योरेंस और फेक इनपुट क्रेडिट की समस्या के समाधान में लगी थी और कुछ कडे प्रावधान बनाकर इसमें कामयाब भी हुई। हालांकि इनमे से कुठ प्रावधानों से इमानदार व्यापारियों को भी परेशानी हो रही थी। इन सभी चीजो को ध्यान में रखते हुए वस्तु एवं सेवा कर के प्रावधानों को आसान बनाया गया है। जो किये गये है उनमे कुछ ये है:–

1. अभी तक कोई भी रजिस्टर्ड व्यापारी जो टैक्स अपनी खरीद पर बेचने वाले व्यापारी को देता था, उसका क्रेडिट उसे मिलता था। ताकि वह आउटपुट टैक्स की लायबिलिटी से कम कर सके। इसके कुछ प्रावधानों में बदलाव किया गया है। नए बदलावों के तहत अब क्रेडिट तभी मिलेगा, जब बिक्रेता ने उस बिल को अपने जीएसटी आर–1 में घोषित कर दिया हो । इस प्रावधान के न होने के कारण मुकदमे काफी बढ़ रहे थे।
2. सालाना रिटर्न में रिकॉन्सिलिएशन स्टेटमेंट को किसी चार्टेड अकांउट या फॉस्ट अकांउटेट से वेरिफाई कराने में बाध्यता को समाप्त कर दिया गया है। जरूरत पडने पर सेल्फ सर्टिफाइड स्टेटमेंट भी मान्य होगा।
3. सेक्शन 50 में लगने वाले ब्याज पर अनिश्चितता को समाप्त किया गया है। अब यह केवल कैश कंपोनेंट पर ही लगेगा और यह प्रावधान 1 जुलाई 2017 से माना जाएगा।
4. सेक्शन 74 की जांच के दायरे से किसी ऐसे टांजैक्शन जिस पर सेक्शन 129,130 में कार्यवाही (गुड इन ट्रांजिट) हुई है, उसे निकाल दिया गया है।
5. कमिश्नर को यह पावर दी गयी है कि वह कोई कार्यवाही जो व्यापारी के ऑडिट, इंस्पैशन, सर्च सीजर, कोई डिमांड की रिकवरी से संबंधित हैं, तो ऐसे में वह उस व्यापारी की किसी भी चल, अचल संपत्ति और बैंक अकाउंट को अटैच कर सकता है।
6. कमिश्नर को यह पावर भी दी गयी है कि वह किसी भी सोर्स से प्राप्त जानकारी को वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम में किसी प्रोसीडिंग में, संबंधित व्यापारी व्यक्ति की सुनवाई के बाद इस्तेमाल कर सकते है। पहले यह पावर नही थी।
7. ऐसे ट्रांजैक्शन जिसमें गंडस इन ट्रांजिट पर ट्राजिट के दौरान किसी कारण से पेनाल्टी लगाई गई है, उस मामले में व्यापारी कोई अपील तब तक नहीं कर सकता है, जब तक उसने पेनाल्टी का 25% जमा न कर दिया हो। पहले यह राशि 10 % थीं।
8. मूवमेंट के दौरान अगर सामान के साथ उचित कागज नहीं है तो पेनाल्टी की माना 100% से बढ़कर 200% किया है। लेकिन टैक्स और इंटरेस्ट निर्धारण करने की प्रक्रिया समाप्त किया गया है।
9. जीरो रेटेड सप्लाई की व्याख्या में यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि यदि सप्लाई सेम यूनिट। डिवेलपर को हुई है है तो इसका उपयोग ऑथराठड ऑपरेटर में होना जरूरी है।
10. सरकार यह प्रावधान भी कर सकती है कि कुछ व्यापारी वस्तु एवं सेवा कर में करने के बाद ही कुछ वस्तुओं या सेवाओं को जीरो रेटेड सप्लाई के रूप में कर सकते हैं।

बजट 2021 आय कर: बजट के बाद की 10 बातें जो टैक्स देने वालों को गांठ बांध लेनी चाहिए

अंकिता काबरा
अधिकारी (लेखा), निगमित कार्यालय

- बजट में वेतनभोगियों (Salaried Persons) को कोई राहत नहीं दी गई बल्कि भविष्य निधि (Provident Fund यानी PF) में सालाना 2.5 लाख रुपये से ज्यादा की रकम जमा करने पर मिलने वाला ब्याज टैक्सेबल हो जाएगा।
- करदाताओं को अब अग्रिम कर यानी टी.डी.एस. के भुगतान के वक्त लाभांश से होने वाली आय (Dividend Income) का हिसाब नहीं करना होगा। टी.डी.एस. तभी कटेगा जब लाभांश की घोषणा हो जाएगी या कंपनी लाभांश दे देगी। इससे करदाता को ब्याज पर टैक्स देने से छुटकारा मिलेगा। दरअसल, टी.डी.एस. देते वक्त डिविडेंड की घोषणा नहीं हुई रहती है तो अनुमान के आधार पर ही कर काटा जाता है। बाद में जब अनुमान से ज्यादा लाभांश मिलता है तो अनुमान में बताई गई रकम से ज्यादा हुए हिस्से पर ब्याज भरना पड़ता है।
- 1 फरवरी, 2021 से यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लांस (ULIPs) में सालाना 2.5 लाख रुपये से ज्यादा का प्रीमियम जमा किया गया तो उससे हुई आमद को पूंजीगत लाभ (Capital gains) माना जाएगा और नियम के मुताबिक कर लगेगा। यूलिप लेने वाले की मृत्यु हो जाने की स्थिति में पैसे मिले तो कोई कर नहीं लिया जाएगा। अगर किसी ने 1 फरवरी, 2021 के बाद एक से ज्यादा यूलिप्स के प्रीमियम भरे तो भी सभी का प्रीमियम जोड़कर 2.5 लाख रुपये सालाना से ज्यादा हुआ तो पूंजीगत लाभ का नियम लागू हो जाएगा।
- 75 वर्ष या इससे अधिक उम्र के उन वरिष्ठ नागरिकों को आयकर रिटर्न भरने से छूट दे दी गई है जिनकी आमदनी का स्रोत सिर्फ पेंशन या फिर जमा धन पर मिल रहा ब्याज हो। ध्यान देने वाली बात है कि जिस बैंक में पेंशन आ रही है, उससे इतर के बैंक में जमा धन पर ब्याज मिल रहा हो तो यह छूट नहीं मिलेगी। नए नियम के तहत टैक्सेयर के डेक्लेरेशन देने के बाद बैंक खुद ही टैक्सेबल इनकम पर टैक्स काट लेगा।
- ऑनलाइन इनकम टैक्स रिटर्न फॉर्म में अब लिस्टेड सिक्यॉरिटीज से प्राप्त कैपिटल गेंस, डिविडेंट इनकम के साथ-साथ बैंकों और पोस्ट ऑफिस में जमा धन से मिले ब्याज की रकम भी ऑटो पॉप्युलेटेड होगी। अब तक फॉर्म में सैलरी इनकम, बैंक अकाउंट्स, कर भुगतान और टीडीएस डीटेल भरकर आते थे।
- सस्ते मकान या लैट खरीदने वालों को बैंक लोन पर ब्याज में 1.5 लाख रुपये की छूट का प्रावधान एक और वर्ष के लिए कर दिया गया है। अब 31 मार्च, 2022 तक सस्ता मकान खरीदने के लिए लोन लेते हैं तो उस पर 1.5 लाख रुपये तक का ब्याज माफ हो जाएगा। ध्यान रहे कि मकान की कीमत 45 लाख से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। ब्याज में छूट का यह फायदा उन्हें ही मिलेगा जो पहली बार घर खरीद रहे हों। यह छूट इनकम टैक्स ऐक्ट की सेक्शन 24 के तहत होम लोन के ब्याज पर मिल रही 2 लाख रुपये की छूट के अतिरिक्त होगी।
- भारत सरकार उन डबल टैक्सेशन को खत्म करने की दिशा में भी कदम उठाने जा रही है। इसके लिए विदेश में रह रहे भारतीयों (NRI) के वहां के रिटायरमेंट फंड्स से होने वाली आमदनी पर टैक्स लगाने के लिए नियम बनाए जाएंगे। नियम बन जाने के बाद अप्रवासी भारतीयों को एक ही वक्त में भारत और विदेश में दोहरा टैक्स देने से मुक्ति मिल पाएगी।
- अब टैक्स ईयर खत्म होने के मात्र तीन महीने के अंदर ही विलंबित या संशोधित इनकम टैक्स रिटर्न (Belated or Revised ITR) भरना होगा। यानी, अब हर वर्ष 31 दिसंबर तक आयकर रिटर्न भरना ही होगा। उसके बाद आपको ज्यादा जुर्माना देना होगा। उसी तरह, आयकर रिटर्न के असेसमेंट की अवधि भी घटाकर 3 महीने कर दी गई है। इससे टैक्सपेयर्स को लेट-लतीफी से तो छुटकारा मिलेगा लेकिन विदेश से कमाई कर रहे भारतीय करदाताओं को टैक्स छूट का दावा करने या फिर दूसरे देश में टैक्स फाइलिंग से मिलने वाली छूट प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है।
- 50 लाख रुपये तक के टैक्सेबल आय और 10 लाख रुपये तक की विवादित आय वाले करदाताओं की सहायता के लिए विवाद समाधान समिति (Dispute Resolution Committee यानी DRC) गठित की जाएगी। करदाता को कभी भी डी.आर.सी. के सामने जाना नहीं होगा। इससे छोटे और मध्यम श्रेणी के करदाताओं को मुकदमेबाजी से छुटकारा मिलेगा।
- बजट में सेकंड लेवल की अपील के लिए नैशनल फेसलेस इनकम टैक्स अपीलेट ट्राइब्यूनल सेंटर खोलने की घोषणा की गई है। विवाद की स्थिति में यह भी करदाताओं का काम आसान कर देगा।

सूचना प्रौद्योगिकी

ॐ एस.ए.पी. – ई.आर.पी. की भूमिका ॐ

सी. आर. सागर
उप प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी),
निगमित कार्यालय

यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि एसएपी ईआरपी (एंटरप्राइज़ रिसोर्स प्लानिंग) सॉटवेयर हिल (इंडिया) लिमिटेड में 2012 से उपयोग किया जा रहा है। प्रमुख सॉटवेयर एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र से संबंधित जानकारी नियमित रुप से रक्षक पत्रिका के माध्यम से दिया जायेगा।

इस कड़ी का शुभारम्भ हम एसएपी के संक्षिप्त परिचय के साथ कर रहे है।

एसएपी ईआरपी क्या है ?

एसएपी एक ईआरपी (एंटरप्राइज़ रिसोर्स प्लानिंग) सॉफ्टवेयर है। एसएपी शब्द का पूर्ण रूप ''सिस्टम, अनुप्रयोग और उत्पाद'' होता है।

एसएपी किसी संगठन द्वारा एकीकृत समाधान प्राप्त करने के लिए उसके सभी कार्य क्षमताओं को संसाधित अथवा प्रोसेस करने के लिए एक एकीकृत व्यापार सॉफ्टवेयर है।

ओपन क्लाइंट/सर्वर सिस्टम के लिए एसएपी आर/3 एंटरप्राइज़ एप्लिकेशन सूट ने व्यवसाय सूचना मैनेजमेंट समाधान प्रदान करने के लिए नए तरीके स्थापित किए हैं।

एसएपी का मूल विचार ग्राहकों को वो योग्यता प्रदान कराना है जिससे की वो एप्लिकेशन्स की विस्तृत श्रृंखला को एक कॉमन कॉर्पोरेट डेटाबेस से मैनेज कर सकें। आज एसएपी एप्लिकेशन्स इतने विकसित हो गए हैं कि आईबीएम और माइक्रोसॉफ्ट समेत कई कंपनियां अपने स्वयं के व्यवसाय चलाने के लिए एसएपी उत्पादों का उपयोग कर रहे हैं।

एसएपी बिजनेस एप्लिकेशन के बाजार में सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी है, 2006 में कंपनी का कारोबार + 13 बिलियन से अधिक हुआ था, और एएमआर रिसर्च के अनुसार बाजार में एस.ए.पी. का हिस्सा 43% था।

एसएपी सॉटवेयर 39,000 से अधिक कंपनियों द्वारा संस्थापित किया गया हैं, और 120 से अधिक देशों में एसएपी का उपयोग लगभग 12 मिलियन उपयोगकर्ताओं द्वारा किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय एसएपी स्थापना जर्मनी मे हुई है, और कंपनी के अल्मा माटर को वैश्विक विशाल आईबीएम के जर्मन विभाग माना जा सकता है।

एसएपी ईआरपी वित्तीय और प्रबंधन लेखांकन, कर्मचारी प्रबंधन, परिचालन गतिविधियों और कंपनी सेवाओं के सभी क्षेत्रों को शामिल करती है। स्वयं सेवा, विश्लेषण के लिए सूचना सेवाओं के कार्यांवयन के लिए आवश्यक पूर्ण कार्यक्षमता प्रदान करता है।

एसएपी के बारे मे कुछ रोचक जानकारियां

- एसएपी को दुनिया की चौथी सबसे बड़ी कंपनी के रूप में जाना जाता है।
- एसएपी आर/3 एक प्रसिद्ध व्यापार सॉफ्टवेयर है जिसका लक्ष्य व्यापार के सभी विभिन्न क्षेत्रों को एकीकृत करना है।
- एसएपी सॉटवेयर का उद्देश्य फाइनेंस, डिस्ट्रीब्यूशन और लोजिस्टिक्स आदि से संबंधित समाधान प्रदान करना है।
- एसएपी एप्लिकेशन्स, जो उनके नवीनतम आर/3 (''आर'' फॉर ''रीयलटाइम डेटा प्रोसेसिंग'') प्रणाली के लिए बनाया गया था, फाइनेंसियल, संपत्ति, कॉस्ट एकाउंटिंग, उत्पादन, मैटेरियल्स, पर्सनेल, प्लांट्स, और संग्रहीत दस्तावेजों को प्रबंधित करने की क्षमता प्रदान करता है । आर/3 सिस्टम विंडोज़ 2000 सहित कई प्लेटफार्मों पर चलता है और क्लाइंट/सर्वर मॉडल का उपयोग करता है।
- आर/3 के नए संस्करण में एक व्यापक इंटरनेट-सक्षम पैकेज शामिल है।

एसएपी एक टेबल ड्राइव अनुकूलन सॉफ्टवेयर है। यह व्यवसायों को अपनी व्यावसायिक आवश्यकताओं में तेजी से बदलाव करने की

अनुमति देता है। व्यवसायों को अतिरिक्त स्रोत कोड जोड़ने के लिए यूज़र-एक्सिटस प्रदान किए जाते हैं। स्क्रीन वेरिएंट जैसे टूल्स आपको फ़ील्ड विशेषताओं को सेट करने के लिए प्रदान किए जाते हैं ताकि उन्हें छिपाने, प्रदर्शित करने और उन्हें अनिवार्य फ़ील्ड बना सकें।

अपनी अपग्रेडिंग लागत को कम करने के लिए, स्टैण्डर्ड प्रोग्राम्स और तालिकाओं को यथासंभव बदला नहीं जाना चाहिए। एसएपी जैसे स्टैण्डर्ड व्यावसायिक एप्लिकेशन्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करने का मुख्य उद्देश्य सभी कार्यक्रमों के विकास और परीक्षण पर समय और धन व्यय की मात्रा को कम करना है। इसलिए, ज्यादातर कंपनियां एसएपी द्वारा प्रदान किए गए उपलब्ध टूल का उपयोग करने का प्रयास करेंगी।

एसएपी एडवांस्ड बिज़नेस एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग (एबीएपी) का उपयोग करता है। एबीएपी को चौथी पीढ़ी की प्रोग्रामिंग भाषा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। एसएपी एबीएपी जर्मन सॉटवेयर कंपनी एसएपी द्वारा बनाई गई एक उच्च स्तरीय प्रोग्रामिंग भाषा है। इसके वाक्य- विन्यास (सिनटैक्स) कुछ हद तक कोबोल के समान है। इसमें अन्य आधुनिक प्रोग्रामिंग भाषाओं जैसे C लैंग्वेज विजुअल बेसिक और पावर बिल्डर की कई विशेषताएं हैं।

एसएपी का इतिहास?

एसएपी कंपनी की स्थापना जर्मनी में 1972 में पांच पूर्व-आईबीएम इंजीनियरों वेलेनरेथर, होप, हेक्टर, प्लैटनर और त्सचिरा द्वारा की गई थी।

सैप के संस्करण

1. एसएपी के विभिन्न संस्करण हैं, आइये इन पर एक नज़र डालें।
2. **एसएपी आर/1:** यह एसएपी का पहला संस्करण था और 1972 में लॉन्च किया गया था । अल्फाबेट आर स्टैंड्स फॉर रियल टाइम डाटा प्रोसेसिंग। यह एक स्तरीय आर्किटेक्चर है।
3. **एसएपी आर/2:** यह 1979 में पेश किया गया एसएपी का दूसरा संस्करण था। एक डेटाबेस और संवाद आधारित ओरिएंटेड व्यापार समाधान होने के लिए और अधिक जाना जाता है।
4. **एसएपी आर/3:** को विशेष रूप से ओपन क्लाइंट/ सर्वर सिस्टम को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया था, जिसने नए मानक स्थापित किए हैं जो व्यापार सूचना से संबंधित समाधान प्रदान करने की आवश्यकता को पूरा करते हैं।
5. **SAP ERP सेंट्रल कॉम्पोनेन्ट (ईसीसी 6):** एस.ए.पी. – ई.आर.पी. सेंट्रल कंपोनेंट (ई.सी.सी.) सबसे अधिक मान्यता प्राप्त संपत्तियों में से एक है जो एसएपी के पास है। यह एक उद्यम संसाधन नियोजन सॉफ्टवेयर है जिसमें कई मॉड्यूल शामिल हैं जो संगठनों को उनकी प्रमुख व्यावसायिक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करने में सहायत्ता प्रदान करते हैं।

   उद्योग क्षेत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला के भीतर लगभग किसी भी ग्राहक के लिए विशिष्ट रूप से पूर्ण एकीकृत समाधान बनाने के लिए मॉड्यूल एक दूसरे के साथ संवाद कर सकते हैं।

   वित्तीय (एफआइ), सामग्री प्रबंधन (एमएम), बिक्री और वितरण (एसडी), मानव पूंजी प्रबंधन (एचसीएम) जैसे मॉड्यूल के साथ, एसएपी ईसीसी कई संगठनों के लिए पसंदीदा विकल्पों में से एक है।

   वर्तमान में हमारे कार्यालय में एसएपी का यही संस्करण प्रयोग में लाया जा रहा है ।
6. **एसएपी हाना (SAP HANA):** यह एसएपी का एडवांस्ड ईआरपी संस्करण है, और जिसे क्लाउड या परिसर में स्थापित किया जा सकता है।

एसएपी के मॉड्यूल

एसएपी ईआरपी में विभिन्न प्रकार के मॉड्यूलस हैं, लेकिन हिल (इंडिया) लिमिटेड की व्यापार प्रक्रिया के अनुसार हम निम्नलिखित 6 मॉड्यूलस का उपयोग कर रहे हैं:

1. **एसएपी मैटीरियल मनगेमेंट:** यह मॉड्यूल आपको सामग्रियों की खरीद को संभालने और सूची प्रबंधित करने में मदद करता है। (क्योंकि आपको कच्चे माल का भंडार रखना होगा)
2. **एसएपी फाइनेंशियल अकाऊंटिंग:** यह मॉड्यूल आपकी सभी लेखांकन वित्तीय आवश्यकताओं को प्रबंधित करने में मदद करता है।
3. **एसएपी सेल्स एंड डिस्ट्रीब्यूशन:** यह मॉड्यूल आपके ग्राहकों का समर्थन करता है, उदाहरण, बिक्री आदेश और ग्राहक को बिलिंग करने की दिशा में सभी तरह से। आपको अपने लोजिस्टिक्स को प्रभावी ढंग से संगठित करने में सक्षम करेगा।
4. **एसएपी ह्यूमन रिसोर्सेज :** यह आपको अपन सभी कर्मचारियों (मुआवजे प्रबंधन, बजट प्रबंधन, कार्मिक विकास, प्रशिक्षण और घटना प्रबंधन, यात्रा प्रबंधन इत्यादि) से संबंधित सब कुछ प्रबंधित करने में मदद करता है।

5. **एसएपी प्रोडक्सन प्लानिंग:** एसएपी प्रोडक्शन प्लानिंग (उत्पादन योजना) ईआरपी में प्रमुख मॉड्यूल में से एक है और योजना प्रक्रियाओं से संबंधित है, जैसे क्षमता योजना, सामग्री योजना, उत्पादन आदेश का निष्पादन, सामग्री का बिल और माल की आवाजाही। एसएपी प्रोडक्शन प्लानिंग के महत्वपूर्ण घटक जैसे बीओएम, वर्क सेंटर, डाटा सेंटर, आदि।

6. **एसएपी क्वालिटि मैनेजमेंट:** गुणवत्ता नियोजन कार्य आपके गुणवत्ता विभाग को विक्रेताओं और उत्पादन से माल प्राप्ति, प्रक्रिया में काम, और स्टॉक हस्तांतरण के लिए निरीक्षण की योजना बनाने की अनुमति देता है। गुणवत्ता विभाग द्वारा की जाने वाली कार्रवाई का अनुरोध करने के लिए एक गुणवत्ता अधिसूचना का उपयोग किया जा सकता है।

एसएपी के लाभ

- ये किसी भी डाटा का डुप्लीकेट रिकॉर्ड नहीं होने देता है।
- प्लानिंग, ट्रैकिंग, स्केडुलिंग और मैनेजमेंट काफी आसान हो जाते है।
- इसके अतिरिक्त, एसएपी ईआरपी सिस्टम प्रशासन और उपयोगकर्ता प्रबंधन, केंद्रीकृत डेटा प्रबंधन और वेब सेवाओं के प्रबंधन जैसे कार्यो के लिए उपकरण प्रदान करता है।
- एसएपी ई–कॉमर्स के साथ एकीकरण सक्षम करता है।
- व्यापार प्रक्रिया मानकीकृत हैं।
- प्रशासनिक शुल्क को कम करने के मामले में लागत प्रभावी है।

सैप आर/3 सफल क्यों है?

- जानकारी सुरक्षित रखता है।
- एसएपी आर/ 3 बहु मुद्रा में काम करता है।
- सर्वोत्तम व्यापार प्रथाओं का पालन किया जाता है।
- यह सभी इंटरप्राइजेज में स्वीकार किया जाता है।
- रीयलटाइम प्रोसेसिंग विशेष रूप से सर्वर / क्लाइंट एप्लिकेशन के दौरान अधिक कुशल और प्रभावी है।
- आवेदन प्रकृति में बहुभाषी है।

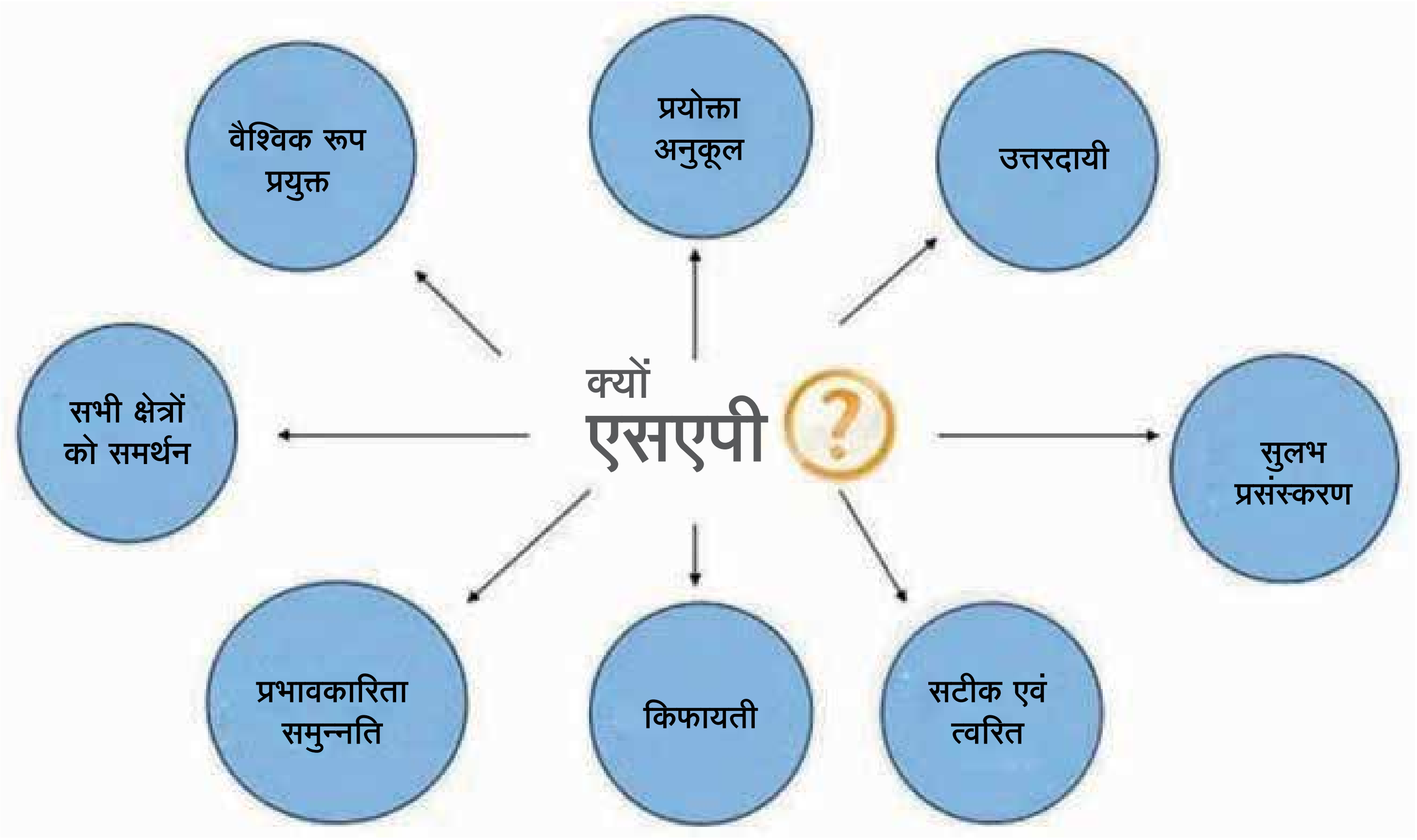

क्या है इंटरनेट? जानिए इंटरनेट कैसे काम करता है

धर्मेश बायपेयी
रसायनी यूनिट

इंटरनेट क्या है आप इसका प्रयोग तो दैनिक जीवन में करते ही होंगे जैसे की ऑनलाइन शॉपिंग, मूवी देखना इत्यादि। लेकिन क्या आप को पता है कि यह क्या चीज़ है? इंटरनेट काम कैसे करता है? आप को बता दें की जब व्हॉट्स एप या फेसबुक पर सन्देश भेजते हैं और हज़ारों किलोमीटर दूर बैठे आपके दोस्त और रिश्तेदार आपके संदेश को कुछ ही सेकंड में पढ़ लेते है। यह सब इंटरनेट का कमाल है। जिसने दुनिया को बहुत छोटा और आपके काम को बहुत ही आसान बना दिया है।

इंटरनेट क्या है ?

इंटरनेट अरबों कंप्यूटरों और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का वैश्विक नेटवर्क है। इंटरनेट के माध्यम से, लोग इंटरनेट कनेक्शन के साथ कहीं से भी जानकारी साझा कर सकते हैं और संचार कर सकते हैं। इंटरनेट के साथ, लगभग किसी भी जानकारी तक पहुंच बनाना, दुनिया में किसी और के साथ संवाद करना और बहुत कुछ करना संभव है।

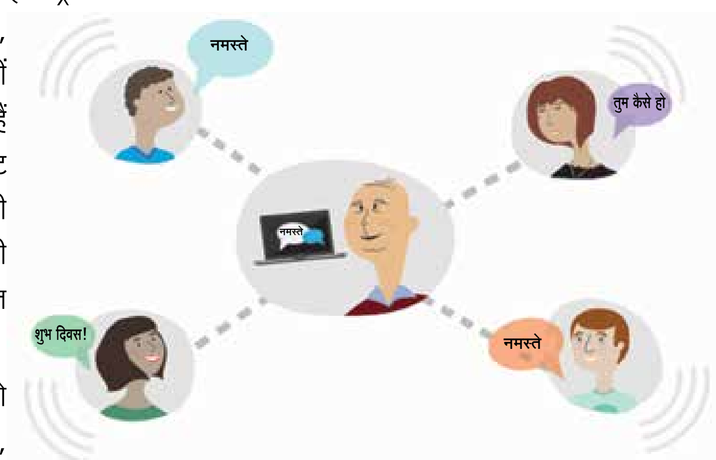

यह सब आप एक कंप्यूटर को इंटरनेट से जोड़कर कर सकते हैं, जिसे ऑनलाइन जाना भी कहते हैं। जब कोई कहता है कि कंप्यूटर ऑनलाइन है, तो यह कहने का एक और तरीका है कि यह इंटरनेट से जुड़ा है।

पहले कंप्यूटर नेटवर्क एक विशेष प्रयोजन के लिए बनाये जाते थे। जैसे AUTODIN I (एक एयरलाइन आरक्षण प्रणाली) और SABER (एक रक्षा कमांड–एंड–कंट्रोल सिस्टम) दोनों को 1950 के दशक के अंत और 1960 के दशक की शुरुआत में डिज़ाइन और क्रियान्वित किया गया था। 1960 के दशक की शुरुआत तक कंप्यूटर निर्माताओं ने वाणिज्यिक उत्पादों में सेमीकंडक्टर तकनीक का उपयोग करना शुरू कर दिया था, और तकनीकी रूप से उन्नत कई बड़ी कंपनियों में पारंपरिक बैच–प्रोसेसिंग और टाइम–शेयरिंग सिस्टम दोनों ही मौजूद थे। इसने पूरे नेटवर्क पर कंप्यूटर संसाधनों (होस्ट कंप्यूटर या बस होस्ट कहा जाता है) को साझा करने की धारणा को जन्म दिया। होस्ट–टू–होस्ट इंटरैक्शन की कल्पना की गई थी, साथ ही विशेष संसाधनों (जैसे सुपरकंप्यूटर और मास स्टोरेज सिस्टम) तक पहुंच और दूरस्थ उपयोगकर्ताओं द्वारा अन्यत्र स्थित टाइम–शेयरिंग सिस्टम की कम्प्यूटेशनल शक्तियों के लिए इंटरैक्टिव एक्सेस। इन विचारों को पहली बार ARPANET में महसूस किया गया, जिसने 29 अक्टूबर, 1969 को पहला होस्ट–टू–होस्ट नेटवर्क कनेक्शन स्थापित किया। 1969 में जब इंसान ने चाँद पर कदम रखा था तब अमेरिका के रक्षा विभाग की उन्नत अनुसंधान परियोजना एजेंसी (ARPA) द्वारा बनाया गया था। ARPANET पहले सामान्य–उद्देश्य वाले कंप्यूटर नेटवर्क में से एक था। यह सरकार द्वारा समर्थित अनुसंधान साइटों, मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका के विश्वविद्यालयों में समय–साझाकरण कंप्यूटरों से जुड़ा था, और यह जल्द ही संयुक्त राज्य अमेरिका में कंप्यूटर विज्ञान अनुसंधान समुदाय के लिए बुनियादी ढांचे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया।

इंटरनेट की सबसे अच्छी बात ये है की इंटरनेट मे किसी भी एजेंसी का कंट्रोल नहीं है। इंडिया में सबसे पहले 15 अगस्त 1995 को सरकारी कंपनी बी.एस.एन.एल. ने इंटरनेट की शुरूआत की थी। बाद में धीरे–धीरे प्राइवेट सर्विसेज जैसे । एयरटेल, रिलायंस, वोडाफोन, आइडिया ने इंटरनेट को शरू किया।

इंटरनेट कैसे चलता है

आज लगभग पूरी दुनिया इंटरनेट से जुडी है और इंटरनेट पर काम कर रही है। लेकिन कभी आप ने ये सोचा है ये इंटरनेट काम कैसे करता है, डाटा का ट्रांसफर कैसे होता है। आप में कुछ सोच रहे होंगे की हमारे ऊपर कोई बादल है जिसके अंदर इंटरनेट का सारे डाटा स्टोर रहता है और वही से इंटरनेट चलता है। लेकिन हम आप को बता दे कि ऐसा कुछ नहीं है। आज पूरा इंटरनेट हमारे द्वारा छोड़े गये उपग्रह से भी नहीं चलता।

उपग्रह से पहले चलता था लेनिक ये तकनीक बहुत पुरानी हो चुकी है और इसमे डाटा का ट्रांसफर भी बहुत स्लो होता था। लेकिन आज विज्ञान और तकनीक ने बहुत तरक्की कर ली है हमारे इंजीनियर्स ने ऐसी तकनीक खोज निकाली है जिससे हम आज फ़ास्ट इंटरनेट का उपयोग कर रहे है। ये तकनीक प्रकाशीय फाईबर केबल है।

ये टीम उसको जल्दी से जल्दी ठीक केर देती है।

अब आपको पता चल गया होगा की 90% इंटरनेट केबल के जरिये चलता है लेकिन 10% कहा से चलता है ये 10% इंटरनेट खुफ़िया एजेंसी के द्वारा एक्सेस किया जाता है जो की उपग्रह से चलता है इस इंटरनेट को हम आम लोग उपयोग नहीं कर सकते हैं।

ये सच बात है की हमने 8 लाख किलोमीटर से भी ज्यादा लम्बाई वाले प्रकाशीय फाईबर केबल को समुद्र में बिछाया है जिससे हमारे इंटरनेट का 90% यूज़ होता हैं। समुद्र में वही प्रकाशीय फाईबर केबल बिछाये जाते हैं जिसमे कम नुकसान और कम लागत आती है।

चुकी इंटरनेट केबल को समुद्र में बिछाया जाता है। जिसमे बड़े–बड़े समुद्री जहाज भी चलते है और कभी–कभी जहाज के लंगर से भी प्रकाशीय फाईबर केबल को नुकसान हो जता है ऐसा ही कुछ 13 जनवरी 2008 को मिस्र में हुआ था। जिसके कारण मिस्र का 70% इंटरनेट बंद हो गया था।

इस समस्या का भी सामाधान किया गया है ऐसी कई टीम बनाई गयी है जो समुद्र में 24 घंटे प्रकाशीय फाईबर केबल की निगरानी करती है। यदि कहीं किसी प्रकाशीय फाईबर केबल में नुकसान होता है तो

आजकल हम सभी इंटरनेट का यूज़ करते है लेकिन हमें ये पता ही नहीं होता है की इंटरनेट काम कैसे करता है। इसे समझने के लिए हम इसके तीन हिस्से करते है पहला होता है सर्वर जिसमे दुनिया की सभी जानकारी सुरक्षित रहती है दूसरी इंटरनेट सेवा प्रदाता कंपनी (जैसे बी.एस.एन.एल. एयरटेल, आइडिया) जो हमें सर्वर से जानकारी भेजती है। तीसरा हमारे कंप्यूटर या मोबाइल का ब्राउज़र जिससे हम जानकारी सर्च करते हैं।

जब हम किसी भी जानकारी या कोई भी इमेज या कोई वीडियो को हमारे ब्राउज़र में सर्च करते है तो ये रिक्वेस्ट REQUEST पहले हमारे इंटरनेट सेवा प्रदाता कंपनी के पास जाती है। ये नेट प्रोवइडर सर्वर पर सर्च है। इसके बाद सर्वर उस जानकारी को इंटरनेट प्रदाता को भेजता है। यह प्रक्रिया काफी तेज होती है जिससे हमें कुछ ही सेकंड मे जानकारी मिल जाती है।

पर्यावरण और मानव

प्रमोद डी. संकपाल

यूनिट प्रमुख, उद्योगमंडल यूनिट

पर्यावरण का अर्थ भूमि और इसके चारों ओर भौतिक, जैविक तथा अंतरिक्ष मण्डल की विभिन्न स्थिति से है। इसके अंतर्गत नश्वर और अनश्वर जो भी सामग्रियों या प्राणियों की उपस्थिति है ये सब इसमें आते हैं।

भूमि अर्थात पृथवी का आर्विभाव सूर्य से है और इसके चारों ओर वायुमंडल भी है। इसके साथ-साथ पर्वत, नदियाँ, तटा आदि भी बनाया गया। वायु मंडल, जल मंडल और स्थल मंडल आदि तीन मंडलों में कई भौतिक और रासायनिक प्रतिक्रयाओं के कारण पर्यावरण उत्पन्न हो गया।

पृथ्वी को सूर्य से ऊजा मिलती है। इसका लाभ मानव जाति को प्रकाश और ताप के रूप में प्राप्त होता है। भूमि के चारों ओर अंतरिक्ष होने से ताप की मात्रा नियंत्रित करना आवश्यक है। इन सब प्राकृतिक स्थिति में जीवन का और मानव जाति का आर्विभाव हुआ। प्रारंभ में मानव को अपने जीवन के लिए प्राकृतिक संसाधन का समाहरण से उपलब्ध सामग्रियाँ अपने आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त थे। लेकिन बाद में रीति बदल गयी।

सामग्रियों और सेवाओं की आवश्यकताएं अधिक होने से औद्योगिक विकास हुआ। पहले भाप से ऊर्जा बना दिया और इसका व्यापक प्रयोग होने लगा। बाद में अन्य ऊर्जाओं के प्रयोग से मानव जाति अपने रहन-सहन को उन्नत कर लिया। मानव अपनी आवश्यकताओं के लिए प्राकृतिक संसाधानों के प्रयोग करने से पर्यावरण में जो संतुलित स्थिति थी इसका नाश होने लगी।

वायु/अंतरिक्ष, जल और स्थल

वायुमंडल में नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, कार्बनडाईऑक्साइड, हीलियम, मिथेन, हाईड्रोजन और जल एवं भाप के संयुक्त आदि है। अंतरिक्ष को बनाए रखने के लिए उपर्युक्त की आवश्यकता है। मानव को अपनी रक्त की शुद्धीकरण के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता है। सूर्य की रोशनियों में जो अल्ट्रावायलट रोशनी है, इसके प्रभाव से जैविक संपत्ती का नाश हो जाएगा। अंतरिक्ष ही हमें अल्ट्रावायलट रोशनी से बचाता है।

जल

जल का रसायनिक सूत्र से ही व्यक्त हो जाता है कि दो हाइड्रोजन एटम के साथ एक ऑक्सीजन एटम जोड़ने से हमें जल मिलता है। ऑक्सीजन और हाईड्रोजन का संयोजन प्रकृति में होता है। शुद्ध जल मिलने के लिए वर्षा की आवश्यकता भी है। जल हमारे जीवन के लिए अनिवार्य है। जल के बिना हमें जीना असंभव है। मानव के शरीर में 65 प्रतिशत जल है। इसके अतिरिक्त साफ सफाई के लिए, खाना पकाने और अन्य प्राणियों के लिए भी जल की आवश्यकता है।

स्थल

भूमि के केवल कुछ भाग में ही स्थल है और इस भाग में वन, पहाड, और रेगिस्तान होते हैं। इसलिए मानव को कृषि, ग्राम एवं शहर विकास, सडक निर्माण, पेड़, पौधों एवं तरकारियों के संरक्षण के साथ निवास स्थान के लिए इस भू-भाग को आश्रित करना पड़ता है। साथ ही साथी जीवनोपार्जन के लिए आवश्यक कार्यालयों और व्यावसायिक संगठनों का निर्माण भी करना है।

प्रदूषण

प्राकृतिक संसाधनों के बढ़ते उपभोग और बढ़ती आबादी से प्रदूषण शुरू हुआ। प्रकृति को खतरा लाने वाले वस्तुओं की उपस्थिति होने से प्रदूषण हो जाता है। इनमें से वायु प्रदूषण-मुख्यत: इसका कारण औद्योगिक संगठनों के प्रचालन से होने वाले, कार्बनडाईऑक्साइड, मिथेन, नाइड्रोजन ऑक्साइड आदि से बढ़ती है। वृक्षों से, प्रकाश संश्लेषण के अवसर पर ऑक्सिजन का बहिर गमन होने से अंतरिक्ष में

ऑक्सीजन मिलता है और कार्बनडाईऑक्साइड कम होता है। लेकिन नगरों में वृक्षों की कमी के कारण प्रदूषण अधिक होती है। कूड़ा–कचड़े को आग लगाने से होने वाली विषैली सामग्रियां भी वायु प्रदूषण के लिए कारण होता है। इसके अतिरिक्त निर्धारित रूप से कूड़ा–कचडे के निपटान न होने पर इसके सड़ने से होनेवाले गैस भी प्रदूषण बढ़ती है। जल प्रदूषण का कारण व्यवासायिक उपयोग के बाद जल स्रोतों में आनेवाले रसायन युक्त जल से और कृषि कार्य में प्रयुक्त रसायनों के संयुक्तों के कारण होता है। प्राकृतिक स्रोतों में होनेवाले प्रदूषण के कारण मानवों और अन्य प्राणियों पर बुरा प्रभाव संभव है।

मिट्टी के प्रदूषण से मतलब, मिट्टी का वास्तविकता नष्ट होने से है। मानव के व्यवहार के कारण प्राकृतिक संसाधनों में जो प्रदूषण होता है इससे अन्य पौधों, प्राणियों और अपने आप कई समस्याओं को सामना करना पडता है। शब्द प्रदूषण के बारे में सूचित करने की भी आवश्यकता है। पब्लिक अनाउन्समेंन्ट और अन्य उपकरणों से शब्द प्रदूषण होता है। इसके अतिरिक्त उत्पादन परक व्यावसायिक मशीनों के ऑपरेशन के समय में भी शब्द प्रदूषण होते है। जानवरों और मानवों को शब्द प्रदूषण से कई समस्यों होती है।

प्रदूषित प्राकृतिक स्रोतों के उपभोग कई रोग का कारण होता है और स्वास्थ्य की संरक्षण के लिए प्रदूषण संबंधी विषयों पर अधिक ध्यान देना अनिवार्य है।

उद्योगमंडल यूनिट में प्रदूषण संबंधी समस्याओं को हल करने केलिए दैनिक रूप से केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के निर्देशों का अनुपालन हो रहा है। स्थानीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के दिशा निर्देशों के अनुसार संयंत्र में प्रचालन कार्य संपन्न होता है। ज़ीरो डिस्चार्ज और एफलुएन्ट ट्रीटमेंट कार्य सतर्कता से हो रहा है। यूनिट में गुणता, पर्यावरण, व्यवासायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा (क्यू एच एम एस) नीति को लागू की है।

पर्यावरण प्रदूषण निवारण के लिए आवश्यक कार्रवाई पूर्ण रूप से की जा रही है।

संतुलित विकास – संतुलित प्रकृति

डी. डी. सोनवानी
यूनिट प्रमुख, रसायनी यूनिट

प्रकृति (पर्यावरण) और विकास में संतुलन बनाए रखना मानव जीवन के लिए नितांत आवश्यक है। हमें अपने जीवन एवं कार्य शैली पर पुन: विचार करना होगा कि कैसे हम विकास के साथ–साथ प्रकृति और इससे जुड़े अमूल्य धरोहरों को नुकसान होने से बचा सकते हैं क्योंकि मानव जीवन का प्रकृति से गहरा लगाव रहा है। कहीं–न–कहीं हम प्राकृतिक परिवेश से घिरे हुए हैं, ऐसे में प्रकृति की रक्षा करने की बात आए तो प्रत्येक व्यक्ति को इसके लिए तत्पर रहना चाहिए। अगर आज हम अपने प्राकृतिक परिवेश को बेहतर बनाने के लिए वर्तमान में प्रयास करेंगे तो ही हम आने वाले कल में इसे और जीवन को संरक्षित व संतुलित कर सकेंगे। हमारे पास मात्र वर्तमान दशक ही शेष रह गया है जिसमें हम प्राकृतिक धरोहरों का संरक्षण कर मानव जीवन व प्रकृति के बीच संतुलन बना सकते हैं अन्यथा प्रकृति की भयावह तस्वीर से हमें रूबरू होना ही पड़ेगा। हमने प्रकृति का प्रकोप निसर्ग, तौकते या करोना के रूप में देख ही लिया है।

ऐसा माना जाता है कि जब धरती बनी थी तब पृथ्वी पर आक्सीजन गैस नहीं थी। बाद में प्राकृतिक ऑक्सीजन गैस बननी शुरू हुई, समझिए तभी से धरती पर जीव पैदा होने शुरू हुए। तत्पश्चात पेड़–पौधों ने इसे स्थिर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, परिणाम–स्वरूप पृथ्वी पर हमारी मौजूदगी की सबसे अहम वजह ऑक्सीजन यानि प्राणवायु है। आज पृथ्वी पर प्राणवायु की मात्रा लगभग 21 फीसदी है। आज विकास के नाम पर पेड़ों की अंधाधुन कटाई के दुष्परिणाम स्वरूप लोग जीवन रक्षा हेतु जद्दोजहद् कर रहे हैं। अगर पृथ्वी पर ऑक्सीजन की मात्रा 21 फीसदी से बढ़कर 95 फीसदी हो जाए तो किसी की जान प्राणवायु के कारण नहीं जाएंगी लेकिन क्या यह मुमकिन है? हाँ! ऑक्सीजन की मात्रा वातावरण में बढ़ायी जा सकती है, बशर्ते इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में पेड़ लगाने की भावना जागृत हो। वर्तमान हालात में करोना ने वातावरण में प्राणवायु की कमी को साबित कर दिया है। आज हमारे समक्ष प्राणवायु की कमी की जो विकट समस्या उपजी है, कहीं– ना कहीं परोक्ष या अपरोक्ष रूप से मानव समाज ही इसका जिम्मेदार है। प्राणवायु हमें जिनके कारण प्राप्त होती है, हम उन्हें ही दिनों–दिन निर्दयता से काटे जा रहें हैं, जिसका परिणाम हम सभी के समक्ष है। प्रकृति हमें जो बहुमूल्य प्राणवायु बिना कीमत लिए देती है, आज हम उसी ऑक्सीजन को पैसों से खरीदने के लिए जद्दोजहद् कर रहे हैं।

वर्तमान में संपूर्ण संसार प्राकृतिक आपदाओं की मार झेल रहा है। जंगल काटे जा रहे हैं, पहाड़ों की खुदाई कर उन्हें समाप्त किया जा रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप पशु–पक्षियों को रहने के लिए भी कोई ठिकाना नहीं बच रहा है। बेहतर जीवन जीने के लिए सभी जीव–जंतुओं को स्वच्छ वायु, स्वच्छ जल, अनुकूल आवास एवं भोजन की जरूरत होती है। इन जरूरतों को हम सिर्फ और सिर्फ प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित रखकर ही पूरा कर सकते हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या, तेजी से गांवों का शहरीकरण एवं औद्योगिक–विकास कुछ ऐसे ही कारण हैं, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों में कमी हो रही है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए जरूरी है कि हम अपनी जीवन शैली को प्रकृति के अनुरूप बनायें। इसके लिए हमें शहरों एवं गाँवों में पारंपरिक भारतीय वृक्ष जैसे आम, पीपल, बरगद, नीम इत्यादि के पौधे लगाने हेतु उचित कदम उठाने चाहिएं। इसके साथ ही प्राकृतिक संसाधनों जैसे:– कुएँ, तालाब, झील, जंगल एवं पहाड़ों का संरक्षण करना भी अति आवश्यक है। हमने पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य ग्रहों में भी जल एवं वायु जैसे प्राकृतिक संसाधनों की तलाश की है लेकिन हमें जो हासिल हुआ है वह यह है कि जो बहुमूल्य स्त्रोत पृथ्वी पर मौजूद है, उतनी मात्रा में अन्य ग्रहों पर उपलब्ध होना कल्पना से परे है। ऐसे में यदि हम विकास की आड़ में जल, जंगल, पहाड़ जैसे प्राकृतिक संसाधनों को बिना सोचे समझे बर्बाद करते रहें, तो भविष्य में हमें अनेक प्रकार की आपदाओं जैसे:– अल्प वर्षा, अत्यधिक वर्षा, सूखा, चक्रवात, अत्यधिक गर्मी इत्यादि–इत्यादि का सामना अवश्य ही करना पड़ेगा।

हमारे पूर्वज हमें धरोहर स्वरूप प्राकृतिक संसाधन एवं भारतीय संस्कृति उपहार में दे गए हैं, जिसके अनुसार पहले के समय में मौसम एवं हमारे त्यौहारों में जबरदस्त आपसी तालमेल हुआ करता था, वट–पूर्णिमा त्यौहार के समय बरसात हुआ करती थी और दीपावली के समय स्कूलों में भी शीतकालीन अवकाश घोषित होते ही मौसम में शीतलहर के प्रभाव का अहसास समझ में आने लगता था किन्तु अपने पूर्वजों द्वारा प्रदान किए गए उपहारों की हमने कोई कद्र नहीं की, परिणाम स्वरूप बीते कुछ वर्षों में परिस्थितियाँ बिल्कुल ही बदल सी गई है। बेमौसम बारिश एवं मौसम में आने वाले बदलाव कहीं–न–कहीं पूरे प्राकृतिक परिवेश को प्रभावित कर रहे हैं।

कहीं–ना–कहीं, किसी–ना–किसी रूप में मात्र एक बार उपयोग में आने वाली पोलिथीन का इस्तेमाल भी हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है। अत: हमे शपथ लेना होगा कि हम पालिथीन थैलों का

उपयोग नहीं करेंगे एवं इसके स्थान पर कपड़े या जूट से बने हुए थैली का ही उपयोग करेंगे, इससे हम अपने पर्यावरण को बचाने में अवश्य कामयाब होंगें।

वर्तमान में मध्यप्रदेश के छत्तरपुर जिले में हीरा (डायमंड) माइनिंग की स्वीकृति दी गई है, समाचार पत्रों के सानिध्य से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि मध्यप्रदेश के छत्तरपुर जिले के अंतर्गत बक्सवाहा के 382.131 हेक्टेयर के वनक्षेत्र में एक्सेल माइनिंग इंडस्ट्रीज लिमिटेड के नेतृत्व में बंदर हीरा खदान को मंजूरी दी गयी है। माना जा रहा है कि अगर यह प्रोजेक्ट सफल रहा तो यह एशिया कि सबसे बड़ी हीरा खदान बन सकती है।

भोपाल से मेरे अग्रज समान पर्यावरण बचाओ आंदोलन के संस्थापक सदस्य श्री शरद सिंह कुम्हरे ने पर्यावरण बचाओ आंदोलन के बैनर तले बक्सवाहा जंगल बचाओं आंदोलन द्वारा संचालित ''हरित सत्याग्रह'' की छत्तरपुर जिलाधीश कार्यालय के समीप शुरुआत की। श्री शरद सिंह कुम्हरे ने बताया कि बक्सवाहा में हीरा खनन प्रोजेक्ट के अस्तित्व में आने से लगभग दो (2) लाख पंद्रह (15) हज़ार पेड़ों की निर्दयता से कटाई की जाएगी, इसके साथ ही बक्सवाहा के जंगलों में पाई जाने वाली पुरानी आदिम सभ्यता भी समाप्त हो जाएगी। महाराजा कॉलेज में चित्रकला विभाग के प्रमुख श्री एस.के. छारी द्वारा इन शैल चित्रों को 25000 ईसा पूर्व का बताते हुए दुनिया का सबसे प्राचीन शैल चित्र होने का दावा किया गया है।

संतुलित विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों को बचाए रखना समय की सबसे बड़ी जरूरत है। जैसे–जैसे हम भौतिकता की अंधी दौड़ में आगे बढ़ रहें हैं, वैसे–वैसे आपदाओं को भी निमंत्रण देने लगे हैं। वर्तमान में कोविड के जिस भयावह दौर से हम गुजर रहे हैं, उसके मूल में भी विकास की उपभोक्तावादी सोच ही प्रमुख है। महामारी के दौर में ऑक्सीजन की कमी एक बड़ी समस्या रही है। वैसे मेडिकल ऑक्सीजन का उत्पादन और उसकी सप्लाई एक अलग समस्या है, लेकिन यह हमें मानना ही होगा कि सामान्य समय में हम आक्सीजन को लेकर कभी सतर्क नहीं रहे हैं। पेड़–पौधे आक्सीजन के बड़े स्त्रोत हैं पर उपभोक्तावादी सोच के प्रभाव में पेड़ों को काटकर मकानों में सुंदरता लाने का प्रयास किया जाता रहा है। हमारी वसुंधरा का असली श्रृंगार ये पेड़–पौधे ही हैं। पेड़–पौधों को काटने का अर्थ है, पूर्ण परिस्थितिकी तंत्र का गड़बड़ाना।

हमारी भारतीय संस्कृति में पेड़ों को पूजने की परंपरा रही है। आज भी हमारे कुछ त्यौहारों में हमारी मातृ–शक्ति वट वृक्ष एवं पीपल के पेड़ों का समयानुसार पूजा करती हैं। आप सभी को ज्ञात ही होगा कि जैसे ''रचगौन'' हमारा राष्ट्रीय वृक्ष है वैसे ही ''खेजड़ी'' राजस्थान का राज्य वृक्ष है। राजस्थान के मरुस्थलों में लोगों को सहारा देने वाला यह ''खेजड़ी'' का वृक्ष ''कल्प–वृक्ष'' के नाम से प्रसिद्ध है। राजस्थान ही नहीं बल्कि संपूर्ण देश में इसे ''शमी वृक्ष'' के रूप में पूजने की परंपरा हैं। हम अपने आप को आधुनिक मानते हैं, लेकिन हमसे अधिक समझदार हमारी वह पुरानी पीढ़ी रही है, जिसने जीवों में ''काला हिरण'' एवं पेड़ों में ''खेजड़ी'' को बचाने के लिए अपने जीवन तक का बलिदान कर दिया। श्रीमती अमृता देवी के नेतृत्व में खेजड़ी में पेड़ों के लिए हुआ बलिदान ''वृक्ष संस्कृति'' में समाई हमारी प्राकृतिक संरक्षण से जुड़ी सोच का सबसे बड़ा प्रमाण है।

आप सभी को ज्ञात ही है कि आज हमारी आधुनिक संस्कृति में सालगिरह या महोत्सव मानाने की परंपरा बन चुकी है। हमने कभी सोचा है कि हम जन्मदिन या सालगिरह क्यों मनाते हैं ? इसके मानने से क्या लाभ है ? खैर ! यह मैं आपके लिए गृह–कार्य के रूप में शेष रखता हूँ, जिसका जिक्र मैं अपने भविष्य के लेख में करूँगा। फिलहाल हम महोत्सव की व्याख्या करते है। हम किसी वस्तु या स्थान की महत्व को समझने या समझाने के लिए या कहें तो आम जनता तक किसी वस्तु या स्थान के महत्व को पहुँचाने के लिए महोत्सव अर्थात महा–उत्सव का आयोजन करते हैं।

वनों के महत्व को जन–जन पहुँचाने के लिए ''वन महोत्सव'' की शुरुआत सबसे पहले सन् 1950 में स्वतंत्र भारत के प्रथम खाद्य एवं कृषि मंत्री श्री के.एम.मुंशी ने की थी। उन्होंने सबसे पहले पेड़ों के महत्व को समझाते हुए नैनीताल में 1950 में पौधे लगाकर ''वन महोत्सव'' की शुरुआत की थी। तत्पश्चात् सन् 1951 में रेगिस्तान को बढ़ने से रोकने के लिए जोधपुर में नर्सरी का उद्‌घाटन किया।

अपने लेख को समझाने के लिए अब इसे मैं एक पंक्ति में समेटना चाहूँगा:–

क्षिति, जल, पावक, गगन समीरा।

पंच रचित अति अधम सरीरा।।

जिसका अर्थ है, हमारा यह भौतिक शरीर क्षिति यानि पृथ्वी, जल यानि पानी, पावक यानि अग्नि, गगन यानि आकाश एवं समीरा यानि हवा परोक्ष रूप से ऑक्सीजन, इन पंच तत्वों से मिलकर बना है। इनमें से एक की भी कमी हुई तो हमारा यह भौतिक शरीर मृत्यु–शैया को प्राप्त करता है। संक्षेप में कहने का तात्पर्य यह है कि यदि हमने हमारी प्राकृतिक संसाधन जैसे:– कुएँ, तालाब, झील, नदी, पहाड़ एवं जंगलों की रक्षा नहीं की तो पृथ्वी से जल एवं स्वच्छ वायु यानि ऑक्सीजन समाप्त हो जाएगी और शेष बचेंगे सिर्फ ''अग्नि'' देवता एवं अग्नि का प्रतीक क्या है? आप सभी को ज्ञात है।

अंत में सिर्फ इतना ही लिखना चाहूँगा कि समस्या का एक ही समाधान है कि हम अपनी प्रकृति को समझें एवं इसके अनुकूल अपनी जीवन शैली में सकारात्मक बदलाव लाएँ और प्रकृति एवं प्रकृति के परिवेश का बराबर ध्यान रखें ताकि इससे हमें कभी नुकसान न हो। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम सभी को भविष्य में पीढ़ियों को मजबूत और स्वच्छ वातावरण देने के लिए ''हरित सत्याग्रह'' चलाकर ''हरित क्रांति ''का संदेश दें। साथ–ही हमें इस पर भी विश्वास करना चाहिए कि हम पृथ्वी के मालिक नहीं हैं बल्कि यहाँ के निवासी है।

तुलसी

विपुल शाही
बाह्य साधनः बीज उत्पादन अधिकारी,
अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, गुरूग्राम

तुलसी का पौधा खास औषधीय महत्व होता है इसके जड़, तना समेत सभी भाग अपयोगी होते हैं यही कारण है कि इसकी मांग लगातार बढ़ती ही चली जा रही है। मौजुदा समय में इसे तमाम मर्जो के घरेलु नुस्खे के साथ ही साथ आयुर्वेद, यूनानी होम्योपैथी व एलोपैथी की तमाम दवावों में अनिवार्य रूप से इस्तेमाल किया जाता है। इसकी पत्तियो में चमकीला वाष्पशील तेल पाया जाता है। जो कीड़ों और बैक्टीरीया के खिलाफ काफी कारगर होता है।

अब बढ़ती मांग के कारण तुलसी केवल आंगन की तरह नही रह गयी है बल्कि इसकी मांग वैश्विक हो चुकी है तुलसी मुख्य रूप से तीन प्रकार होती है पहली हरी पत्ती वाली, दुसरी काली पत्ती वाली और तीसरी कुदरती नीली बैगनी रंग की पत्तियों वाली। खास बात यह है कि यह कम सिंचाई वाली और कम से कम रोगो व कीटो से प्रभावीत होने वाली फसल होती अगर किसान सही तरीके से विपणन का मंत्र जान लें, तो यह मुनाफा देने वाली फसल साबित होगी।

जलवायु व मिट्टी:- यह गर्म जलवायु को फसल होती है व ऊचित जल निकास वाली बलुई दोमट एवं क्षतिय मिट्टीयों मे इसकी खेती सफलतापूर्वक की जाती है।

बुवाई का समय :- इसकी नर्सरी फरवरी के अंतिम सप्ताह में लगाते हैं एवं पौधो की रोपाई अप्रैल के मध्य से प्रारम्भ करते हैं वैसे यह वर्षा ऋतु की फसल है, जिसे गेहूँ काटने के बाद लगाया जाता है।

खेत की तैयारी:- सर्वप्रथम गहरी जुताई करने वाले यंत्र से पाटा लगाकर खेत को समतल कर देना चाहिए। इसके बाद सिंचाई और जल निकास को सही व्यवस्था करके सही आकार की क्यारियां बना लेनी चाहिए।

नर्सरी व रोपाई का तरीका:- हैक्टेयर खेत के लिए 200-300 ग्राम बीज पर्याप्त होता है। बीजा को नर्सरी में मिट्टी के 2 सेमी. नीचे बोना चाहिए। यह 10-12 दिनों मे उग आता है। इसके बाद रोपाई के लिए 4-5 पत्तियों वाले पौधे लगभग 6 हफ्ते में तैयार हो जाते है। अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए व अच्छे तेल के उत्पादन के लिए लाइन से लाइन की दूरी 45 से.मी. रखते हैं।

खाद एवं उर्वरक:- यह एक औषधीय पौधा होता है। इसलिए इसमे रासायनिक उर्वरको का प्रयोग नहीं करना चाहिए या बहुत कम करना चाहिए। एक हैक्टेयर खेत मे 10-15 टन सड़ी हुई गोबर की खाद या 5 टन वर्मी कम्पोस्ट प्रयाप्त रहता है।

रासायनिक उर्वरको का प्रयोग खेत की मिट्टी जांच करके जुताई के समय फास्फोरस व पोटाश के रूप मे करना चाहिए एवं नाइट्रोजन की मात्रा 3 भागो में बाँटकर तीन बार में करना चाहिए।

सिंचाई:- पहली सिंचाई रोपाई के तुरंत बाद व गर्मीयो के मौसम मे महीने मे तीन बार करना चाहिए।

कटाई:- जब पौधो में पूरी तरह फुल आ जाए तो रोपाई के 3 महीने बाद कटाई का समय होता है। यह ध्यान रहे कि तेल निकालने के लिए पौधे को 25-30 सेमी. ऊपरी शाकीय भाग को ही काटना चाहिए।

पैदावार:- 5 टन प्रति हैक्टेयर साल मे 2-3 बार ली जा सकती है।

आमदनी:- आमदनी तेल की गुणवत्ता, मात्रा, बाजार मूल्य और किसान की समझदारी पर निर्भर करता है फिर भी जानकारों के अनुसार एक हैक्टेयर खेत से लगभग 1 क्विंटल तेल की प्राप्ती होती है। जिसका बाजार मूल्य लगभग 40-50 हजार के होता है।

मोबाइल गेम और वीडियो गेम के दुष्परिणाम और सावधानियां

डॉ. विशेष कुमार श्रीवास्तव
अधिकारी (राजभाषा), रसायनी यूनिट

आज मोबाइल पर ऑनलाइन गेम खेलना बच्चे और युवाओं की पसंद में शुमार है। डिजिटल युग में 'बिन इंटरनेट सब सून'वाली स्थिति है। पिछले दो दशकों में टेक्नोलॉजी ने हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है और इसे बहुत कंफर्टेबल भी बनाया है। मोबाइल सेलफोन, टैबलेट और स्मार्टफोन जैसी डिवाइस ने छोटे बच्चों में तकनीक की एक्सेसिबिलिटी और उपयोग को बढ़ा दिया है। बच्चों के दोस्त, खेल के मैदान, पार्क, सबकुछ इंटरनेट के एक एप्लीकेशन पर सिमट गया है। आउटडोर गेम्स से ज्यादा तवज्ज़ो अब इनडोर गेम्स को भी नहीं बल्कि इंटरनेट गेम्स (वीडियो गेम) को मिलने लगी है। इंटरनेट पर मिलने वाले रोमांचक ऑनलाइन गेम्स अब बच्चों के दिलों-दिमाग पर हावी हो रहे हैं। हर सेंकड बदलती दुनिया और पल-पल बढ़ता रोमांच, रंग-बिरंगे थीम के साथ म्यूजिक का कॉम्बिनेशन, कंप्यूटर या फिर मोबाइल की एक छोटी सी स्क्रीन पर एक ऐसा वर्चुअल वर्ल्ड, जो बहुत आकर्षक होता है। एक-दूसरे को हराने और जीतने की होड़ में बच्चे लगातार डिवाइस से चिपके रहते हैं। 10 मिनट का गेम कब घंटे-दो घंटों में बदल जाता है उसे पता ही नहीं चलता और यहीं से शुरू होता है गेमिंग एडिक्शन। यह एडिक्शन ऐसी होती है इन्हें जरूरी काम भी करने से रोकती है। एक रिपोर्ट के मुताबिक चीन में ढ़ाई करोड़ लोग डिजिटल लत के शिकार हैं, 17 घंटे तक इंटरनेट पर बिताते हैं, शौचालय तक जाने का समय नहीं निकाल पाते। गेम छोड़ने से डरते हैं कि वे हार जाएँगें इसलिए डाइपर का इस्तेमाल करते हैं। यही कारण है कि आजकल 'डायपर वियरिंग गेम' का चलन बढ़ा है।

आजकल ऑनलाइन गेम मुनाफे के एक व्यापार की तरह फैल रहा है। परन्तु इस गेम में जगमगाती लाइटें आँखों को नुकसान पहुँचा रही हैं। कुछ लोग मोबाइल हैंडसेट को इस तरह से पकड़ते हैं, जिससे उनके कान और कंधे दर्द करने लगते हैं।

जो लोग लगातार कंप्यूटर पर बैठे रहते हैं, उन्हें कंप्यूटर विजन सिंड्रोम की शिकायत होती है। कंप्यूटर पर सतत् काम करने वालों में से 50 से 69 प्रतिशत लोग इस सिंड्रोम से ग्रस्त हैं। शरीर टूटने लगता है, आँखें लाल होने लगती हैं। इसके अतिरिक्त जो लोग सतत् मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं, उन्हें फैंटम फोन सिंड्रोम की बीमारी होती है। उन्हें हमेशा ऐसा लगता है कि उनका फोन बज रहा है। ऐसे रोगियों को इंटरनेट नशा मुक्ति केंद्र ले जाने की आवश्यकता पड़ रही है। मोबाइल के नेटवर्क का टॉवर ही नहीं बल्कि ट्यूमर के भी सिग्नल हैं। एम्स, नई दिल्ली के एक शोध द्वारा खुलासा किया कि 10 साल से ज्यादा मोबाइल फोन के इस्तेमाल से ब्रेन ट्यूमर का खतरा 33 प्रतिशत तक बढ़ जाता है। मोबाइल फोन कंपनियों द्वारा प्रायोजित शोध में मोबाइल फोन रेडिएशन के खतरे को कम दिखाया जाता है। पेड न्यूज के तर्ज पर ही पेड रिसर्च का चलन बढ़ा है।

मोबाइल फोन से इलेक्ट्रोमैग्रेटिक किरणें निकलती है। ये तरंगें इंसानों में कैंसर के कारण बन सकती है ब्रेन ट्यूमर भी हो सकता है। यह उतना ही हानिकारक है जितना कि वाहनों से निकलने वाला धुँआ। मोबाइल ऑपरेटर संस्था के मुताबिक वर्ष 2017 में मोबाइल पूरी दुनिया में 520 करोड़ से ज्यादा है अगले तीन वर्षो में भारत में मोबाइल फोन बाजार को तीन करोड़ नए ग्राहक मिलेंगे। आने वाले वर्षो में भारत के 100 करोड़ लोगों पर रेडिएशन का खतरा होगा। कंपनियाँ आवश्यकता की वस्तु के रूप में नए प्रकार की भूख को ईजाद कर हर समय मोबाइल या इंटरनेट से चिपके रहने की पुरजोर वकालत करती है। यह एक प्रकार से 'औद्योगिक आतंकवाद' है। जब सिगरेट या तंबाकू के पैकेट पर कैंसर की चेतावनी के सचित्र संदेश छपते हैं तो मोबाइल के बॉक्स पर क्यों नहीं ? वाहनों के प्रदूषण के बारे चर्चा होती है पर मोबाइल रेडिएशन से उत्पन्न होने वाले खतरनाक रोगों के बारे में लोगों से क्यों छिपाया जाता है ?

हाल में इस विषय पर कई रिसर्च हुए हैं जिनसे यह पता चला है कि टेक्नोलॉजी हमारे बच्चों को फायदा पहुँचाने की बजाए लांग–टर्म में नुकसान पहुँचा रही है फिर भी बहुत बड़ी संख्या में माता–पिता बच्चों को बेरोकटोक इनका उपयोग करने दे रहे हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि इनके उपयोग से बच्चे स्मार्ट बन रहे हैं और बिज़ी रहते हैं।

अब तो लोग नवजात शिशुओं और टोडलर्स तक के पास इन डिवाइस को रखने लगे हैं जिससे बच्चों का विकास, व्यवहार और सीखने की क्षमता बुरी तरह से प्रभावित हो रही है। टेक्नोलॉजी का प्रभाव छोटे बच्चों पर बड़ों की तुलना में 4–5 गुना अधिक तेजी से होता है और यह उनके स्वाभाविक विकास में कई प्रकार की गड़बड़ियाँ पैदा कर सकता है। गंगाराम अस्पताल के सीनियर कन्सल्टेंट प्रवीण भाटिया के मुताबिक स्टडी में पाया गया है कि डिवाइस और गैजेट्स की वजह से बच्चों में मोटापा तेजी से बढ़ रहा है। यहाँ तक बच्चे डायबिटीज के भी शिकार हो रहे हैं। ऐसा नहीं है कि ऑनलाइन गेम्स खेलने वाला हर बच्चा गेमिंग एडिक्शन का शिकार है। लेकिन एक्सपर्ट के मुताबिक गेम खेलने का शौक कब एडिक्शन में बदल जाए, इसके लिए माता–पिता को बच्चे की गतिविधियों पर नजर बनाए रखना जरूरी है।

क्यों जरूरी है बच्चों को मोबाइल सेलफोन, टैबलेट, स्मार्टफोन से दूर रखना –

1. **दिमाग का तेज विकास:** दो से पाँच साल तक बच्चों के दिमाग का विकास बहुत ही तीव्र गति से होता है। बच्चों का दिमाग आकार में लगभग तीन गुना तक हो जाता है और 21 साल का होने तक इसमें फिजीकल बदलाव आते रहते हैं। विकसित हो रहे दिमाग पर टेक्नोलॉजी के ओवरएक्सपोज़र से बच्चों में सीखने की क्षमता में बदलाव, ध्यान न लगना, भोजन ठीक से न करना, आँखें खराब होना, हाइपर एक्टिविटी और स्वयं को अनुशासित व नियमित न रख पाने की समस्याएं पैदा होने लगती हैं।
2. **विकास धीमा हो जाना:** आज हमारे पास जिस प्रकार की टेक्नोलॉजी है वह बच्चों की मूवमेंट्स को सीमित कर देती है जिससे उनका शारीरिक विकास पिछड़ सकता है। स्कूल जाने वाले तीन बच्चों में से एक में शारीरिक विकास सुस्त दिखता है जिससे उनकी शैक्षणिक क्षमताएँ व योग्यताएँ प्रभावित होती हैं। फिजिकल एक्टिविटी करते रहने से बच्चे फोकस करना सीखते हैं और नई स्किल्स डेवलप करते हैं। 12 साल से कम उम्र के बच्चों के जीवन में टेक्नोलॉजी का दखल उनके विकास व शैक्षणिक प्रगति के लिए दुष्प्रभावी होता है।
3. **मोटापा बढ़ना:** जिन बच्चों को ये डिवाइसेज़ उनके कमरे में उपयोग करने के लिए दी गईं उनके मोटे होने का रिस्क 30 प्रतिशत तक अधिक पाया गया। मोटे बच्चों में भी 30 प्रतिशत को डायबिटीज होने का और बड़े होने पर पैरालीसिस व दिल के दौरा आने का खतरा बढ़ जाता है।
4. **नींद की कमी:** 60 प्रतिशत माता–पिता अपने बच्चों के टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल की निगरानी नहीं करते हैं और 75 प्रतिशत बच्चों को उनके बेडरूम में टेक्नोलॉजी इस्तेमाल करने की खुली छूट मिली है। नौ से दस साल की उम्र के इन बच्चों की नींद टेक्नोलॉजी के दखल के कारण प्रभावित हो रही है जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित होती हैं।
5. **मानसिक रोग:** टेक्नोलॉजी के अनियंत्रित उपयोग से बच्चों में डिप्रेशन, एंग्ज़ाइटी, अटैचमेंट डिसॉर्डर, ध्यान नहीं लगना, ऑटिज़्म (Autism), बाइपोलर डिसॉर्डर, उन्माद (Psybhosis), और प्रॉब्लम चाइल्ड बिहेवियर (problematib bhild behavior) जैसी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं।
6. **आक्रामकता (Aggression):** मीडिया, टीवी, फिल्म और गेम्स में हिंसा बहुत अधिक दिखाई जाती है, जिससे बच्चों में आक्रामकता बढ़ रही है। आजकल छोटे बच्चे शारीरिक और लैंगिक हिंसा के प्रोग्राम और गेम्स के संपर्क में आ जाते हैं जिनमें हत्या, बलात्कार और टॉर्चर के दृश्यों की भरमार होती है। यह बच्चों के विकास को विकृत करती है।
7. **डिजिटल स्मृतिलोप (Digital Dementia):** हाई–स्पीड मीडिया कंटेंट से बच्चों के फोकस करने की क्षमता बुरी तरह से प्रभावित होती है जिससे वे किसी एक चीज़ पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते और तथ्यों को याद भी नहीं रख पाते। जो बच्चे ध्यान भटकने की समस्या से ग्रस्त हो जाते हैं उन्हें पढ़ाई करने में दिक्कत आती है।
8. **लत लगना (Addictions):** एक नए रिसर्च के मुताबिक अगर आप बार–बार स्मार्ट फोन चेक करते हैं, दोस्तों से मुलाकात के दौरान भी मोबाइल फोन को दूर नहीं रख पाते, सोते वक्त भी मोबाइल फोन को पास रखते हैं, जब जरूरत नहीं होती तो भी आप मोबाइल फोन उठा लेते हैं तो समझिए कि आप मोबाइल फोन से जुड़े एडिक्शन यानी लत के शिकार हैं और इस लत का असर आपके शरीर और मन पर भी पड़ता है। कानों में दर्द, बेचौनी, घबराहट जैसी शारीरिक और मानसिक परेशानियाँ मोबाइल फोन और इंटरनेट का ज्यादे से ज्यादा इस्तेमाल करने का नतीजा है। ऐसे लोग रात में सोने से पहले आखिरी काम मोबाइल चेक करते हैं और सुबह उठते ही मोबाइल देखते हैं।

9. **रेडिएशन के खतरे:** विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मई, 2011 में सेलफोन के 2ठ कैटेगरी के रेडिएशन रिस्क को संभावित कैंसरकारक बताया है।

10. **आँखों पर दबाव (Eye strain):** स्मार्टफोन और इसी तरह के गैजेट्स का दुष्प्रभाव सबसे पहले बच्चों की आँखों पर दिखता है क्योंकि वे बैकलिट स्क्रीन को घंटों तक अपलक देखते रहते हैं। इसे कंप्यूटर विजन सिंड्रोम भी कह सकते हैं।

बच्चों एवं किशोरों में साइबर एडिक्शन यानी इंटरनेट और सोशल मीडिया की इस लत को कम करने के लिए ही देश में इंटरनेट डी–एडिक्शन सेंटर्स की जरूरत महसूस की गई। करीब दो साल पहले बेंगलुरु में पहला सेंटर खोला गया, जिसे काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला। हाल ही में दिल्ली के एम्स में भी साइबर एडिक्ट क्लीनिक की शुरुआत हुई है। दरअसल, आज देश ही नहीं, दुनियाभर में इंटरनेट की लत एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। खासकर बच्चे–किशोर इसकी गिरत में सबसे ज्यादा हैं।

अंत में हम कह सकते हैं कि, किशोर उम्र के बच्चों की फिजिकल एक्टिविटी को वर्चुअल मीडिया और स्मार्टफोन ने काफी हद तक प्रभावित किया है। बच्चों का ज्यादा समय वीडियो या मोबाइल गेम्स खेलने में बीतता है। आउटडोर गेम्स खेलना कम होता जा रहा है। बच्चे आमने–सामने बातचीत की बजाय व्हाट्सऐप, स्नैप चैट आदि का सहारा ले रहे हैं। फेसबुक पर दोस्तों की फ्रैंडशिप भले ही बढ़ रही हो, लेकिन रिश्तेदारों या खुद अपने अभिभावकों से मिलना या उनसे बात करने का समय नहीं रहा इनके पास। इससे बच्चों का अकेलापन बढ़ रहा है। वे अवसाद के शिकार हो रहे हैं। इसके लिए कहीं न कहीं अभिभावक भी जिम्मेदार हैं। बच्चों पर ध्यान देने या उनकी जिंदगी में झांकने की जगह वे अपने खाली समय में स्मार्टफोन और इंटरनेट से चिपके होते हैं, जबकि उन्हें बच्चों के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिताने की जरूरत है। उनके साथ डिनर करें। बातें शेयर करें। उनकी समस्याओं या उलझनों को सुलझाने का प्रयास करें। साइबर एडिक्शन से बचाव हैं – रिसर्च या असाइनमेंट के लिए नेट से सीमित मदद लें, इंटरनेट गेमिंग में समय का ध्यान रखें, आउटडोर फिजिकल एक्टिविटी में हिस्सा लें, पैरेंट्स से बात शेयर करें, एडिक्शन की स्थिति में डॉक्टरों से परामर्श लेना चाहिए।

कमज़ोर पाचन शक्ति के कारण एवं उपचार

सतपाल सिंह
गुणवत्ता आश्वासन अधिकारी, बठिंडा यूनिट

पेट शरीर का सबसे अधिक लापरवाही से रखा जाने वाला अंग है। हम समझते है कि यह गूंगा नौकर मुंह से निगले गए सभी पदार्थो को बिना क्रोध या झुंझनाहट के स्वीकार कर लेता है। लेकिन ऐसी सोच मात्र हमारी अज्ञानता है। पेट एक संवेदनील अंग है, जो हर प्रकार के भोजन पर भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रतिक्रिया करता है। सभी मसालेदार, तीखे या गरिष्ठ भोजन से पेट में अधिक एसिड (अमल) बनता है, जिससे इसकी दीवारों पर छाले हो जाते है। दातों से कम चबाए या बहुत ठंडे भोजन से पेट को परेशानी होती है। ठंडे भोजन पेट की क्रियाओं को स्थिर करते हैं। उदाहरण के लिए आइसक्रीम को पचाने लायक बनाने के लिए पेट इस ठंडे पदार्थ को 20 डिग्री सेंटी ग्रेड तक गर्म करेगा। इसके लिए पेट को आधे से पूरे एक घंटे का समय लगेगा और तब तक पेट की सभी क्रियाएं शिथिल पड़ी रहती है। अगर यह कार्य पेट को प्रतिदिन या बार-बार करना पड़े तब इसकी मांसपेशियां धीरे-धीरे कमजोर हो जाएंगी। इसकी पूरी पाचन क्रिया पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

आज की विद्रूत जीवन शैली, प्रदूषण, मिलावट तथा सुविधा भोगी प्रवृत्ति के चलते मानव की पाचन शक्ति मंद पड़ गई है, जिसका परिणाम होता है, पेट फूलना, उल्टी या मिचलाई होना, बदहज्मी, खट्टी, डकारें आना, गले में जलन,कैंज, भूख मरना आदि लक्षणों से अन्य रोगों की मात्रा का अनुमान लगाया जा सकता है। 95% रोगी कमजोर पाचन-शक्ति के ही शिकार हैं या कह सकते है की 95% बीमारी कमज़ोर पाचन-शक्ति के कारण ही होती है।

पाचन तंत्र के गड़बड़ी के कारण:-

1. आहार-विहार ही कमजोर पाचन-शक्ति का मुख्य कारण है।
2. भूख लगे बिना भोजन करना।
3. अधिक गरिष्ठ भोजन करना।
4. तेज मिर्च-मासालों का सेवन।
5. मादक पदार्थो का प्रयोग करना।
6. पानी कम पीना।
7. व्यायाम न करना।
8. भोजन करने के बाद तुरंत सोना।
9. जल्दी-जल्दी खाना।
10. मानसिक तनाव होना।
11. समोसा, फास्ट फूड, मैदे से बने पदार्थ खाना।
12. खाने के बाद ठंडा पानी पीना।
13. तेज दवाईयों का लम्बे समय तक सेवन करना।
14. ज्यादा गर्म या ज्यादा ठंडा भोजन करना।

उपरोक्त गलत आदतों की वजह से हमारा पाचन तंत्र कमजोर पड़ जाता है, हम कुछ शुद्धि क्रियाएं और कुछ योगासन द्वारा कमजोर पड़े पाचन तंत्र को फिर से मजबूत बना सकती हैं।

1. शुद्धि क्रियाएं एक से दो सप्ताह तक 500-700 मि. ली. पानी में नीबू का रस मिला कर एनिमालें।
2. कुंजल क्रिया: हर तीसरे दिन दो सप्ताह तक कुंजल क्रिया करें।
3. गर्म-ठंडा सेक दो बार दें।

योगासन:-

1. भुजंगासन
2. शलभासन
3. वज्रासन
4. मंडूकासन
5. पवन मुक्तासन
6. मकरासन
7. पादोत्तासन
8. सर्पासन

इनके अलावा योगमुद्रा, ताड़ासन,तिर्थक ताड़ासन, मयूरासन, सूर्यनमस्कार करके भी अपने पाचन तंत्र को मजबूत बना सकते हैं।

1. आहार-सुधार नियम।

(क) चबा-चबा कर खाना खाएं।
(ख) सही समय पर खाना खाएं।
(ग) भोजन के बाद पानी न पियें।
(घ) ज्यदा गर्म-ठंडा भोजन न खाएं।
(ङ) भोजन के तुरंत बाद न सोंए।
(च) गरिष्ठ भोजन न करें।
(छ) मदिरा न लें।
(ज) सप्ताह में एक दिन उपवाज करें, फल/रसाहार रहें।
(झ) रात्रि भोजन जल्दी करें।

आनंदोहम् (मैं ही आनन्द हूँ)

महेन्द्र सिंह
महाप्रबन्धक (तकनीकी), निगमित कार्यालय

क्या हमने कभी यह जानने की कोशिश की कि हम कौन हैं और इस पृथ्वी पर क्यों आए हैं? यह तो निश्चित है कि हमारे परमपिता ने हमें दु:ख भोगने या हमारी परीक्षा लेने के लिए तो यहाँ नहीं भेजा अपितु हम यहाँ आए हैं परम आनंद की अनुभूति करते हुए सुखमय और श्रेष्ठ जीवन बिताने। तो उस आनंद को पाने से हमें कौन रोक रहा है? हम कब, क्यों और कैसे अपने ही इस जन्मसिद्ध अधिकार (आनंद प्राप्ति) से दूर हो गए?

वास्तविकता यह है कि अपनी इस स्थिति के लिए हम खुद ही जिम्मेदार हैं। जब हम हर हाल में खुश रहते हैं–केवल पेट भरा हो और बस कुछ नहीं चाहिए, फिर भले ही कपड़े फटे हों या फिर बिना बिस्तर के ही सुला दिया जाए–हर हाल में खुश अर्थात् जो जैसा है, ठीक है, स्वीकार है। कोई प्रतिरोध नहीं। सदा प्रकृति के बहाव के साथ बहते हैं। हम किसी भी व्यक्ति को, परिस्थिति को, रिश्ते को और यहाँ तक कि अपने आपको भी पूर्णत: स्वीकार नहीं कर पाते। इसलिए कभी अहंकार के वश में, कभी इन्द्रियों के वश में, कभी अज्ञान के कारण, कभी क्रोध के वश में, कभी अविश्वास के कारण, और कभी अपराधबोध के कारण अपने ही हाथों अपने जीवन से आनंद को सदा के लिए निष्कासित कर देते हैं और पीछे रह जाती है अंतहीन उदासीनता, नकारात्मक, रिक्तता, अकेलापन और ढेरों शिकायतें।

''पीड़ा सहना हमारा अपना चुनाव है''। परमानंद जो कि हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, उसी में सदैव स्थापित रहने के लिए यदि हमें कुछ करना पड़े तो अवश्य करना चाहिए। तो आइए आनंद प्राप्ति की ओर कुछ कदम बढ़ाएँ–

1. **अपना प्रत्येक दिन सकारात्मक विचार के साथ शुरू करें–** हर दिन शरूआत सकारात्मक विचार के साथ करें और धीरे–धीरे अपने सभी विचारों को सकारात्मक बनाएँ। ऐसा करने से हमारी छोटी–बड़ी समस्याएँ और शिकायतें गौण होती जाएंगी और हम परमानंद की ओर अग्रसर होंगे।
2. **वर्तमान में जीने के प्रयास करें–** व्यक्ति अपना अधिकांश समय भूतकाल में हुई घटनाओं और गलतियों का अफसोस करते हुए या भविष्य की चिन्ता करते हुए बिता देता है। भूतकाल पीछे छूट चुका और बदला नहीं जा सकता, केवल उससे हम कुछ सबक ले सकते हैं। भविष्य अभी आया नहीं है। हम उसके लिए चिन्ता अथवा भय करने के स्थान पर स्वयं को तैयार कर सकते हैं। परन्तु इन दोनों ही से अधिक महत्वपूर्ण है हमारा वर्तमान। वर्तमान का अर्थ होता है– उपहार अर्थात्– हमारा वर्तमान ईश्वर का दिया हुआ उपहार है। भूत और भविष्य की भूल–भुलैया में हम इस ईश्वरीय उपहार को नकार देते हैं। यदि हम 'आज और अभी' में जीना सीख जाएँ तो भूतकाल की ग्लानि और भविष्य के भय को भुलाकर 'आज का आनंद' ले पाएंगे।
3. **क्रिया–प्रतिक्रिया में संतुलन रखें–** किसी भी परिस्थिति में क्रिया का अनुपात मात्र 10–12% होता है और हमारी प्रतिक्रिया का अनुपात 80–90% भले ही क्रिया हमारे वश में न हो परन्तु प्रतिक्रिया अवश्य हमारे वश में होती है। यदि हम अपनी प्रतिक्रिया को पूर्णत: नियंत्रित और संवेदनशील बना लें तो हम न केवल बहुत–से कटु अनुभवों से बच सकेंगे अपितु प्रतिक्रिया के बाद में होने वाले अपराध बोध और ग्लानि से भी स्वयं को सुरक्षित रखकर आनंद प्राप्ति की ओर बढ़ेंगे।
4. **स्वीकार करें–** जो जैसा है, उसे वैसा ही स्वीकार करने का प्रयास करें और प्रकृति के नियमों के साथ समन्वय बनाएँ। प्रत्येक व्यक्ति उसी परमात्मा का अंश है और अपने आप में बेहतरीन है। हमें इस सत्य को पूरे मन से स्वीकार करना चाहिए। परन्तु इसका अर्थ यह भी नहीं है कि आस–पास गलत होते देखकर आँखें मूँद लें। हमें न केवल गलत करने वालों को समझना चाहिए अपितु आवश्यकता पड़ने पर डाँटना भी चाहिए।
5. **समभाव जागृत करें–** सुख–दुख, खुशी–गम, दिन–रात हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं और सभी ने दोनों ही का अनुभव किया है दु:ख आने पर अत्यधिक शोक मना कर या उससे लड़कर हम केवल अपने और अपने परिजनों के दु:ख को बढ़ाते हैं। इसकी बजाए यदि हम दु:ख और सुख में समभाव लाएं अर्थात् दु:ख में अत्यधिक दु:खी और सुख में अत्यधिक खुश होने के स्थान पर ईश्वर की रजा में राजी होने तथा अपने जीवन में एक संतुलन बनाने का प्रयास करें तो हम बेहतर महसूस करेंगे और अधिक परिपक्व होकर अपने आनंद स्वरूप को सुरक्षित बना पाएंगे।

6. जाने दो' का अभ्यास करें– हर व्यक्ति अपने साथ अनेक स्मृतियाँ लेकर चलता है–कुछ प्रिय और कुछ अप्रिय। कोई भी घटना जब घटित होती है तो वह कुछ मिनटों की, कुछ घंटों की अथवा कुछ और अधिक समय की होती है। परन्तु हम उसे याद करके और दुःखी होकर अविस्मरणीय बना देते हैं। और दुःखी होते रहते हैं। ऐसी स्मृतियों को हमें जाने देना चाहिए ताकि हल्के होकर शान्ति से जी सकें और अपने परमानन्द के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

7. अपनी आत्मा की आवाज सुनें– हमारी अन्तरात्मा हमारी सबसे सही मार्गदर्शक होती है। हमारी बुद्धि सदैव तर्कों से प्रभावित रहती है और हमारे हृदय के फैसले भावनाओं से प्रभावित होते हैं। परन्तु हमारी आत्मा सदैव इन सबसे अलग हट कर हमें सही–गलत का बोध कराती है। जरूरत है तो अपनी अंतर आत्मा की आवाज को सुन कर समझने की।

8. धन्यवाद का भाव उत्पन्न करें– जब हम अपनी उपलब्धियों तथा आशीर्वाद के प्रति उस देवत्व का धन्यवाद करते हैं तो हम उसी अनंत में विलीन हो जाते हैं। उसी प्रकार यदि हम किसी व्यक्ति के प्रति दिल से धन्यवाद करते हैं। तो उसके प्रति हमारी शिकायतें बहुत तुच्छ प्रतीत होती हैं क्योंकि धन्यवाद के भाव हमारे चित को निर्मल बनाते हैं और अहंकार ये मुक्त करके हमें निराकार के निकट ले जाते हैं, इससे हमें अपना संपूर्ण आनंद का लक्ष्य साधने में मदद मिलती है।

9. प्रतिदिन अपने इष्ट से प्रार्थना अवश्य करें–प्रार्थना शीतलता और आनंद का अविरल स्रोत है। प्रार्थना के लिए किसी विशेष समय, उत्तम स्थान अथवा कठिन शब्दों की आवश्यकता नहीं होती। अपितु प्रार्थना तो शुद्ध भाव से, पूर्ण विश्वास तथा समर्पण के साथ और सहज व प्रेमपूर्ण शब्दों में (अथवा शब्दरहित), कहीं भी और कभी भी की जा सकती है। हमारे अन्तर्मन से निकली ऐसी भावपूर्ण निष्काम प्रार्थना हमारे चित्त को शांत ओर निर्मल बना कर आनंद से भर देती है।

अंत में यही कहना सर्वथा उचित होगा कि अपने सच्चे अस्तित्व को पहचानें, आत्मा की आवाज सुनें और छोटी–छोटी इच्छाओं में अटक कर बड़े सुख अर्थात् परमानंद को न गवाएँ। तभी हम पूर्णतः आनंद स्वरूप में स्थित हो कर गर्व और हर्ष के साथ कह पाएंगे।

''आनंदोहम्–आनंदोहम्। आनंदम् परमानन्दम''।

आत्मवलोकन

बालेन्द्र प्रसाद मिश्र
उप प्रबन्धक (मा.सं. एवं प्र.), बठिंडा यूनिट

हम न तो उसकी मर्जी जानने की कोशिश करते हैं और न ही अपने जीवन का मकसद जानते हैं और यहीं से हमारी जिंदगी का सफर जो संकट, परेशानियों और दुखों से भरा है, शुरू होता है। हम अंधकार में अज्ञानता वश भटक रहे हैं और दुख और तकलीफ झेल रहे है ।

ईश्वर की दिव्य और आलौकिक शक्ति हमारे साथ हमेशा बनी रहती है और यह शक्ति हमे जीवन का मकसद बता सकती है । लेकिन हम इस दिव्य शक्ति का इस्तेमाल नहीं करते।

अतः हमे इस शक्ति को अपने साथ महसूस और अनुभव करना चाहिए ताकि हम इस दुनिया में अंधकार से निकल कर रोशनी में आयें और अपने बहुमूल्य जीवन का अर्थ और मकसद समझते हुए जिंदगी जिएं।

ईश्वर ने हमे शक्तियाँ दी है । इस लेख के माध्यम से हम केवल छः मूल शक्तियों की बात कर रहे है ।

1. शरीर, 2. आत्मा, 3. सोच, 4. व्यवहार / क्रियाएँ

5. वाणी /शब्द, 6. विचार

हमारी यह छः शक्तियाँ अलग–अलग दिशा में काम करती हैं । जैसे कि, हम सोचते कुछ हैं, और बोलते कुछ और हैं, देखना और सुनना कुछ और चाहते है, मन में कुछ हो और करते कुछ और है ।

इन सभी शक्तियों को एक इकाई में डालना जरूरी है अर्थात् जैसे हम अच्छा सोचे, वैसा ही बोलें, उतना ही अच्छा हम सुनना चाहे और वैसा ही हम करें ।

ऐसा करने के लिए तीन रास्ते अपनाने का प्रयास करें ।

1. अपने नाम के साथ जुड़े गुणों के अनुरूप जीवन में चलने की कोशिश करें ।
2. अपने आप से बातचीत करें ।
3. प्रतिदिन एक अच्छा काम करें ।

इन तीनों कोशिशों के द्वारा हमारी छः प्रमुख शक्तियाँ एक इकाई बन सकती है और हम अपने जीवन के मकसद को जान कर आनंद और खुशहाल जीवन जी सकते हैं। ईश्वर आपको व आप के परिवार को असीम शक्ति से भरपूर रखें और आप स्वयं को जान सकें पहचान सकें और जीवन के मकसद को हासिल कर सकें ।

मन रे काहे न धीर धरे

शिवा सागर,
वरिष्ठ प्रबन्धक, बैंक ऑफ बड़ौदा
धर्मपत्नी श्री सी. आर. सागर
उप प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी), निगमित कार्यालय

और अधिक, और अधिक पाने और संग्रहित करने की इच्छा की पूर्ति हेतु मनुष्य अनवरत भाग रहा है। प्रात: से सायं ही नहीं अपितु देर रात तक कोल्हू के बैल के समान कार्यरत रहने लगा है। उसे न अपनी चिंता है और न अपने घर – परिवार की चिंता है। चिंता है केवल अधिक से अधिक धन अर्जित करने की। प्रात: घर से निकले और लौटेंगे कब, कोई पता नहीं! व्यापारी अपने व्यवसाय को और अधिक विस्तार देने में शेष सब कुछ भुला देते हैं। नौकरी करने वाले अधिक धन कमाने के लालच में नौकरी के समय के पश्चात् भी कार्य करने चले जाते हैं। भागते लोग, भागती भीड़ ...कहाँ जा रहे हैं, कुछ होश नहीं है। धन और धन, बस और धन ––यही जीवन का लक्ष्य रह गया है। सब व्यस्त हैं, अस्त–व्यस्त हैं। यह व्यस्तता क्या है? किस लिए है? क्यों है? इसके विषय में सोचने का भी समय नहीं है। धन का महत्त्व है। इसे नकार नहीं सकते। जीवन–स्तर श्रेष्ठ बने, इसके लिए धन चाहिए। हर प्रकार की सुख–सुविधा उपलब्ध हो, हो जाए तो और उपलब्ध हो....इसलिए खूब भागो...जो आगे बढ़ गए है उन्हें पीछे छोड़ो ––यह अंधी दौड़ सुख चैन छीन रही है। इस अंधी दौड़ में भागता मनुष्य कब युवावस्था और अधेड़ावस्था को पार कर जाता है, उसे पता ही नहीं चलता। और जब पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। तब इस अंधी दौड़ से अर्जित धन के भोग के लिए देह कमज़ोर हो चुकी होती है। कबीर ने बहुत अच्छा लिखा है–

मन सागर, मनसा लहरी, बूड़े –बहे अनेक।

कहि कबीर ते बाचिहैं, जाके हृदय बिबेक।

अर्थात्:– मन रूपी सागर में इच्छा रूपी लहरें उठती रहती हैं।

एक लहर किनारे तक आती है तो

दूसरी उसके पीछे–पीछे आ जाती है।

इसी प्रकार एक इच्छा पूरी होती है तो दूसरी सामने आ जाती है। मनुष्य उसे पूरा करने में संलिप्त हो जाता है। एक के पश्चात् एक इच्छाएं जन्म लेती हैं और मनुष्य उन्हें पूरा करने में लग जाता है। इन इच्छा रूपी लहरों में अधिकतर लोग बह जाते हैं। अनेक डूब कर मर जाते हैं। केवल वही इनमें डूबने से बचते हैं जिनमें 'विवेक' होता है। वर्तमान समाज में अधिकांशत: लोगों की यही दशा है। वे जो है उसके महत्त्व को नहीं जानते और जो नहीं है उन भौतिक वस्तुओं को पाने और संग्रहित करने के लिए भाग रहे हैं। दिन–रात चिंतामग्न रहते हैं। चिंता तनावों की जननी है। तनावग्रस्त होकर मनुष्य भांति–भांति के रोगों से पीड़ित हो जाता है। उसकी 'विवेक' शक्ति नष्ट हो जाती है। वह सम्मानपूर्वक जीने के अर्थ भूल जाता है। नैतिक और अनैतिक में भेद न करके जैसे संभव हो धन के अम्बार लगाने में जुटा रहता है यही कारण है राजनेतागण, उच्च पदाधिकारी, उद्योगपति और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति घोटाले पर घोटाले करते हैं। समाचार–पत्र, टीवी उनके कारनामों के पृष्ठ पर पृष्ठ प्रकाशित करते हैं / दिखाते हैं। अनेक जेल–यात्रा करते हैं और बाहर आकर निर्लज्ज घूमते हैं। ये लोग भूल जाते हैं कि समय बहुत तेज़ी के साथ भागता है। वे धन के अम्बार जुटाते–जुटाते कब संसार से विदा ले लेते है, किसी को पता ही नहीं चलता। उनकी स्मृति एक भ्रष्ट व्यक्ति के रूप में सदा–सदा के लिए अंकित रह जाती है। हम अनेक बार कहते हैं– लाल किला यहाँ, शाहजहाँ कहाँ? आज शाहजहाँ को कोई नहीं पहचानता। विश्व के अनेक राष्ट्रपति मर गए, प्रधानमंत्री मर गए। लोगों को उनके नाम तक स्मरण नहीं हैं। इन धन अर्जित करने की दौड़ में भागने वालों को उनके परिवार की तीसरी पीढी तक स्मरण नहीं करेगी। थोड़ी देर के लिए रुकें। अपने विषय में सोचें। अपने उचित–अनुचित कार्यों का विश्लेषण करें। अपने जीवन के उद्देश्यों के विषय चिंतन करें सम्मानपूर्वक जीने का मार्ग निर्धारित करें और ''धैर्य'' को अपनाएँ। मन है तो विचलित भी होगा। उसे समझाएँ–– मन रे काहे न धीर धरे!

꧁ अप्प दीपो भव: (Be your own light)/असली सुंदरता ꧂

अनुप सुनिल निकाले
सहायक (मा.सं. एवं प्र.), रसायनी यूनिट

बुद्ध केवल अपनी प्रज्ञा और शील के द्वारा जीवन को सुखी बनाने का मार्ग बताते है। बुध्द की शिक्षा का सार यही है कि अज्ञानता समस्त दुखों का कारण है। दुनिया मे कोई भी आपको अंधकार से बाहर निकालकर प्रकाश कि और नहीं ले जा सकता है। आपको अपने ज्ञान, क्षमता और विश्वास के आलोक मे खुद ही आगे बढ़ना है और अपने जीवन को सुखी बनाना है।

''मेरे पास आना, लेकिन मुझसे बंध मत जाना। तुम मुझे सम्मान देना, सिर्फ इसलिए की मैं तुम्हारा भविष्य हूं। तुम मेरे जैसे हो सकते हो, मैं इसकी सूचना हूं। तुम मुझे सम्मान दो, यह तुम्हारा बुद्धत्व को ही दिया गया सम्मान है। लेकिन तुम मेरा अंधानुकरण मत करना, क्योंकि तुम अंधे होकर मेरे पीछे चले तो बुद्ध कैसे हो पाओगे। बुद्धत्व तो खुली आंखो से उपलब्ध होता है, बंद आंखो से नहीं। बुद्धत्व तभी मिलता है जब तुम किसी के पीछे नहीं चलते, खुद के भीतर जाते हो‘‘ ।

बुद्ध कोई ईश्वर, देवता या अवतार नहीं है। उनसे मन्नत मांगना बेमानी है। वह किसी की मन्नत या मनोकामना पूरी नहीं कर सकते। किसी रोगी को निरोगी, दरिद्र को धनवान, दुखी को सुखी नहीं बना सकते। न किसी को नौकरी दे सकते हैं और न किसी संतानहीन को संतान दे सकते हैं।

जिस शरीर को लोग सुन्दर समझते हैं, मौत के बाद वही शरीर सुंदर क्यों नहीं लगता? उसे घर में न रखकर जला क्यों दिया जाता है ?

जिस शरीर को सुन्दर मानते हैं जरा उसकी चमड़ी तो उत्तार कर देखो तब हकीकत दिखेगी की भीतर क्या है?

भीतर तो बस रक्त, रोग, मल और कचरा भरा पड़ा है !फिर यह शरीर सुन्दर कैसे हुआ?

शरीर मे कोई सुन्दरता नहीं है। सुन्दर होते हैं व्यक्ति के कर्म, उसके विचार, उसकी वाणी, उसका व्यवहार, उसके संस्कार, और उसका चरित्र।

जिसके जीवन मे यह सब है वही मनुष्य दुनिया का सबसे सुंदर इन्सान है और जमाना भी उसी का दीवाना है।

'अपना दीपक आप बनो' सबका कल्याण हो।

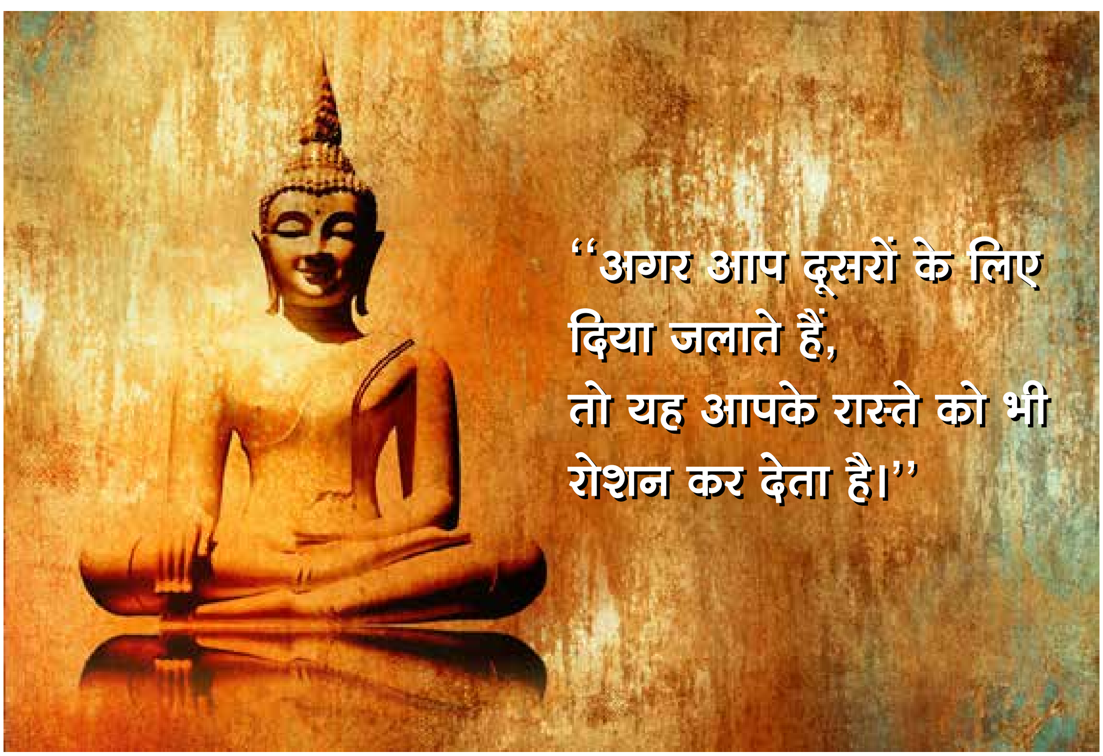

कोविड-19

௵ कोरोना ௸

अशोक कुमार राव
गुणवत्ता आश्वासन अधिकारी,
रसायनी यूनिट

ये दैत्य रूपी राक्षस समान है, कब किसे अपने ग्रास का निवाला बना ले किसी को नहीं पता। आज से दो वर्ष पहले किसे पता था। सिर्फ और सिर्फ चीन एवं कुछ बड़े देशों के चुनिंदा वैज्ञानिकों को। क्योंकि वह अगले वर्ल्डवार में बिना किसी लड़ाई के रासायनिक हथियारों से संसार पर राज करना चाहते थे। ये एक शांत पर जहरीले वर्ल्डवार की अनुभूति करा रहा है।

आज संसार का हर व्यक्ति डरा-सहमा हुआ है, चाहे वह राजा हो या प्रजा चारो ओर एक अनजान भरा समाया है। लोगों को घर में रहने की हिदायत दी गयी है एवं दी जा रही है। विश्व में न जाने कितने लोग असमय मौसम की आगोश में सो गयो। न जाने कितने माँ, बहन, बेटी, नाते रिश्तेदारों को, लोगों ने अपने सामने, बेटी, बाप, नाते रिश्तेदारों को लोगों ने अपने सामने मौत के घाट उवरते देखा और अफसोल पाये, सिर्फ दूर से आग को समार्पित हुए देखा। आज सड़को पर सन्नटा छाया है लोग घर से बाहर निकलने में डर रहे है। चारो तरफ त्राही-त्राही मची है। डाक्टर भी प्राण नहीं बचा पा रहे हैं। अनगिनत मरीज दवाओं से मर रहे है, अनगिनत मरीज आक्सीजन की कमी सक मर रहे है। ये सदी की त्रासदी है इसका अंत कब होगा कोइ्र भी नहीं बता पा रहा है ये वायरस जिसे कोरोना नाम से जाना जा रहा है एक ऐसा संक्रमण रोग है जिससे हर व्यक्ति दूर रहना चाहता है फिर भी जाने अनजाने इस वायरस का शिकार बन कर अपनी जान गवाँ बैठ रहा है। हरेक अपने घरों में कैद है।

सरकार भी इस अनदेखे वायरस से ठगा महसूस कर रहा है। परन्तु ऐसी महामारी में हमारे डाक्टर रात-दीन एक करके लोगों की जाने बचाने का भरसक प्रयास कर रहे है। कुछ हमारे समाज के लोग देवदूत बन कर लोगों को सहायता पहुँचा रही है परन्तु हम सभी का उत्तरदायित्व है कि स्वयं एवं दूसरों को एहतियात बरतते हुए नियमों एवं शर्तो का पालन करते हुए घर से बाहर न निकले जब तक जरूरी कार्य न हो।

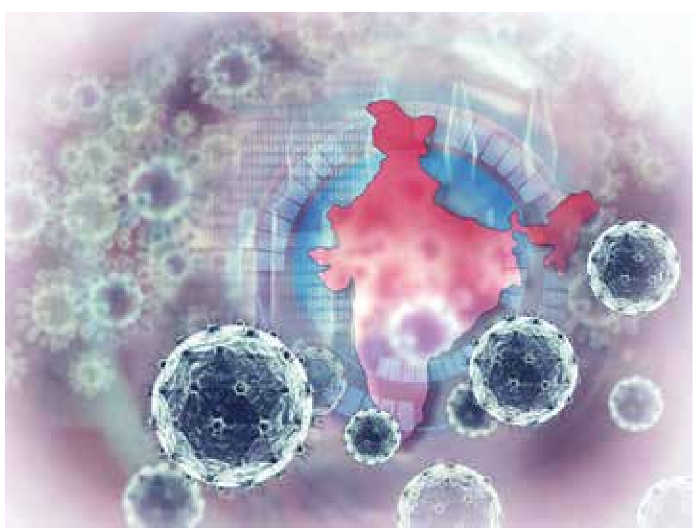

कोरोना संक्रमण के चेन को तोड़ना होगा ये तभी संभव है जब हम आपस में दूरी बनाये रखते हुए मास्क पहने ''दो गज दूरी, मास्क है जरूरी'' ।

कोरोना की रोकथाम सिर्फ एवं सिर्फ कोरोना बैक्सीन ही बचा सकता है साथ अपने हाथ धेते रहे एवं साइनीटाइज करते रहें। वैक्सीन ही इस वायरस से बचाव का एक मात्र उपाय है क्या शहर या गाँव हर जगह हरेक घर में इस वायरस ने कोहराम मचा रखा है, हर घर में कोई न कोई बिमार है और आये दिन अपने प्राण गवाँ रहे है। परन्तु बचाव का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है शमशान घाट पर लाशों का अंबर लगा हुआ है।

आज ज्येतिष कहाँ गये जो लोगों को बताया करते हैं। कि तुम्हारे हाथ में लम्बी जीवन रेखा है ऐसा लगता है। कि लोगों की जीवन रेखा ही मिट गयी है। सड़कों पर हर कुछ क्षणों पर एम्बुलेंस के सायरन की आवाज सुनायी पड़ रही है। अस्पतालों में बेड उपलब्ध नहीं है इसमें भी कुछ लोग कालाबाजारी कर रहे है। बहुत से मरीज तो जमीन पर ही पड़े है बहुम से एक बेड पर दो-दो मरीज का इलाज चल रहा है। जब शहरों का ये आलम है तो गावों, देहात एवं अस्पताल में डॉक्टर नादारत है। फिर भी बहुत से डॉक्टर देवदूत बन कर रात-दिन जाग कर, अपने परिवार से दूर लोगों की जान बचानें मे जुटे है। हमें उन्हें सल्यूट करना चाहिये ओर जो नर्स वार्ड ब्वाय भी उसके पात्र है जो रात-दिन डयूटि करके लोगों की जान बचाने में लगे है।

समाचार चैनलों पर सिर्फ कोरोना का ही सामाचार दिखाया जा रहा है लोगों को समाचार देख कर भय की लहर दौड़ रही है। जिधर देखों चीखते चिल्लाते लोग ही दिख रहे है उनकी चीख हृदय को चीर कर रख देता है।

कोरोना ने एक महामारी का रूप ले लिया है। कोरोना खत्म भी नहीं हुआ कि ब्लैक फंगस एवं श्वेत फंगस जैसे नए रोग शुरू हो गए हैं। सावधानी के बीच भी लोगों की मृत्यु दर कम नहीं हो रहा है। वैक्सीन लगाने के बाद भी मृत्यु हो रही है, यह तो एक दानव का रूप ले लिया है।

हर शख्स सहमा हुआ है एवं दुसरे को प्रश्न चिन्ह की भांती देखता है कि उससे कोरोना तो नहीं हो जायेगा यह कोरोना सामाजिक दूरी बढ़ा रहा है। जीवन ठप्प कर दिया है आना-जाना बंद, बस बंद, ट्रेनें बंद। मुंबई के लोकल ट्रेन को मुंबई का दिल कहते है। यदि यही दिल बंद कर दिया तो मुंबई में सन्नाटा फैलेगा ही भगवान जाने इसके बाद कौन सी महामारी आयेगी।

व्यक्ति शंकाओं के बीच जीवन जी रहा है मुँह से बस यही आवाज निकलती है यह भी कोई जीना है

परन्तु हम सभी धैर्य पूर्वक इस महामारी का सामना कर रहे है और जल्द ही इस पर विजय हासिल करेगें पुन: जीवन पटरी पर लैटेगा और कोरोना को भगायेगें। ऐसा हम सभी को विश्वास है।

जिंदगी में टेंशन है।
फिर भी इन लबों पर मुस्कान है
क्योंकि जीना जब हर हाल में है
ते मुस्करा के जीना में क्या नुकसान है

अशोक कुमार राव
गुणवत्ता आश्वासन अधिकारी,
रसायनी यूनिट

कोरोना कैद

कोरोना की कैद से घुटन होने लगी।
सेचो इस पक्षी जिसकी कैद हमें भली लगी।।

एक मुद्दत से आरज़ू थी फ़ुरसत की ।
मिली तो शर्त पर कि किसी को ना मिलो ।।

कल तक जो कहते थे हमें फ़ुरसत नहीं ।
आज वो घर बैठे सोचते है दिन बिताऊ कैसे ।।

हर देश अपने को शक्तिशाली कहता था।
आज एक कोरोना से अपने घर में दुबका बैठा है ।।

कुदरत ने जब कहर बरसाया ।
खुदा को खुदा समझने वाले इंसान का घमंड टूट गया ।।

न दवा न ईलाज मौत देख घबराया है ।
चिताओं को जलते देख खुदा से खौफ खाया है।।

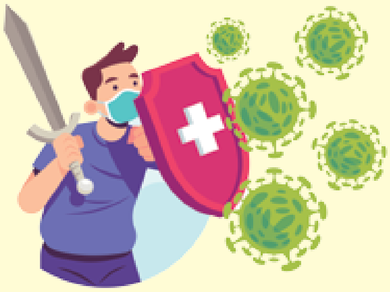

संक्रमण का खतरा

राजेन्द्र द. सोनवणे
प्रचालक –I (विशेष श्रेणी), रसायनी यूनिट

कोरोना से बचना है तो मास्क पहनने में बरते ये सावधानियाँ, कम रहेगा संक्रमण का खतरा:

कोरोना से बचाव के लिए मास्क पहनना जरूरी है। लेकिन मास्क पहनने पर आपको कुछ ऐसी गलतियों को करने से बचना चाहिए, जिनसे संक्रमित होने की संभावना बढ़ती है। कोरोना का बढ़ता कहर देखते हुए उससे बचाव के लिए अब डबल मास्क का भी इस्तेमाल शुरू हुआ है । ताकि इसका वायरस हमारे शरीर में प्रवेश न कर सके। परन्तु मास्क पहनने के दौरान वे कुछ ऐसी गलतिया कर बैठते है जिससे उनके या दूसरों के संक्रमित होने की संभावना बढ़ जाती है। कई बार लोग बार–बार मास्क पर हाथ लगाते हैं, घर जाकर मास्क को बिना डिसइंफेक्ट किए निकालकर कमरे में रख देते हैं। ऐसी आदते आपको संक्रमित कर सकती हैं। इतना ही नहीं कई लोग पब्लिक प्लेस में खांसते या छीकते वक्त अपना मास्क नीचे कर लेते हैं जिससे दूसरे लोग संक्रमित हो सकते हैं। इस समय घर पर मास्क पहनना भी जरूरी हो गया है इस लिए इसका पालन जरूर करें। अगर आप गलती से मास्क छू भी लेते हैं, तो तुरंत अपने हाथों को सैनेटाइज कर लें। अगर मास्क, पहन रखा है तो उसे नीचे करके या उतारकर खांसने और छींकने से बचें।

अक्सर कई लोग बाहर से घर पर आते ही मास्क निकालकर कहीं पर रख देते हैं। इससे भी संक्रमण फैलने का खतरा काफी ज्यादा बढ़ जाता है, क्योंकि मास्क पर लगा वायरस घर के किसी वस्तु पर लग सकता है और लोग संक्रमित हो सकते हैं। ऐसे में अगर आप बाहर से घर आते हैं, तो सबसे पहले अपने हाथों को अच्छे से साफ करें और धूप में सुखाएं। इतना ही नहीं इसके बाद एक बार फिर से अच्छे से हाथ धोने की जरूरत होती है।

ज्यादातर लोग कपड़े के मास्क का इस्तेमाल करते हैं। वे इसे धोकर दोबारा यूज़ कर लेते हैं। लेकिन सर्जिकल मास्क और एन–95 मास्क का दोबारा इस्तेमाल नहीं किया जाता है। ऐसे में अगर आप इन मास्क का इस्तेमाल करते हैं, तो आप एक या दो यूज के बाद इन्हे फेंक देते होगे। इस दौरान आपको ध्यान रखना है कि आप यूज़ किए गए मास्क को ढक्कन बंद कूड़ेदान में ही डालें। इससे दूसरों तक संक्रमण फैलने से बचा सकता है। अगर संभव हो तो आप मास्क को डिसइंफेक्ट करके भी फेंक सकते हैं। इससे जो व्यक्ति इस कूड़ेदान का कूड़ा साफ करेगा, उसे इंफेक्शन होने का जोखिम काफी हद तक कम हो जाएगा।

मास्क से संबंधित इन सावधानियों को अपनाकर आप कोरोना के इस गंभीर वायरस से अपना और अपने परिवार का बचाव कर सकते हैं। यह बहुत ही सामान्य सी गलतियां हैं, जो अक्सर लोग करते ही रहते हैं। ऐसे में इन गलतियों को सुधारें और कोरोना से अपना बचाव करें। स्वच्छ रहें और सुरक्षित रहें। अपने परिवार, समाज और देश को भी सुरक्षित रखने की कोशिश करें।

कोरोना के विरूद्ध टीकाकरण

डॉ. अरविंद कुमार गुप्ता
मुख्य चिकित्सा अधिकारी, रसायनी यूनिट

डब्ल्यू.एच.ओ. द्वारा 11 मार्च, 2020 को कोरोना बीमारी को वैश्विक महामारी के रूप में घोषित किया गया था। यह एक विषाणु रोग (सार्स कोव-2 वायरस द्वारा फैलता है और इसे कोविड-19 वायरस किया जाता है) जिसका फैलाव चीन से आरंभ हुआ है और विश्व भर में इस रोग के कारण 35 लाख लोगों की मृत्यु हो चुकी है और जारी हैं।

इससे लड़ने के लिए

मनुष्यों में बीमारी और मृत्यु पैदा करने वाले कोरोना सहित कई संक्रमणों के विरूद्ध टीकाकरण एक प्रमुख रोकथाम पद्धति के रूप में उभरा है ।

इसलिए कोरोना बीमारी के खिलाफ टीका लगवाना अनिवार्य हो गया है। वर्तमान में हमारे देश में तीन प्रकार के टीके उपलब्ध हैं:-

1. कोविशील्ड, 2. कोवैक्सीन, 3. स्पूतनिक V

दूसरे डोज़ (पहले डोज़ लिए जाने के 4 से 12 सप्ताह पश्चात् दूसरा डोज़ लेना है) के बाद इन टीकों की दक्षता 70 से 90% है और ऐसा अनुमान है कि यह रोग के विकास से बचाएगा या बीमारी की अवधि को कम करेगा और रोगों के लक्षण कम होंगे।

यह प्रासंगिक है कि हम बच्चों के राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम के बारे में अपने ज्ञान का नवीनीकरण करें।

नियमित टीकाकरण ना सिर्फ बच्चों को बीमारियों से दूर रखता है बल्कि यह बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immune System) को भी बढ़ाने में मदद करता है। कई बार टीका लगवाने के बाद बच्चों को बुखार हो जाता है।

जन्म के समय टीका लगवाने में छोटी सी लापरवाही भी बच्चों के लिए घातक साबित हो सकती है। कई बार हम सोचते हैं कि समय निकलने के बाद आखिर टीका कैसे लगवाएं ?

राष्ट्रीय टीकाकरण प्रोगाम के अनुसार नवजात शिशु के लिए टीकाकरण तालिका

सरकारी टीकाकरण कार्यक्रम के अनुसार भारत में निम्न बीमारियों के लिए टीके लगाए जाते हैं

- तपेदिक (टी.बी.)
- डिप्थीरिया (Diphtheria)
- काली खाँसी (पर्टुसिस)
- पोलियो
- खसरा (मीजल्स)
- टिटनेस
- हेपेटाइटिस बी
- हेपेटाइटिस ए
- मोतीझरा (टाइफाइड)
- कंठमाला का रोग (eEll)
- रुबेला
- जठरांत्र शोथ या गैस्ट्रोएंट्राइटिस (रोटावायरस)

बच्चों को इनमें से कब और कौन से टीके किस तरह लगाने चाहिए इसके लिए निम्नलिखित टीकाकरण तालिका अवश्य देखें:

टीकाकरण तालिका

आयु	टीकाकरण
0 माह	बी.सी.जी., ओ.पी.वी., हेपेटाइटिस बी
6 हफ्ते	ओ.पी.वी., डी.पी.टी., एच.आई.बी.,हेपेटाइटिस बी
10 हफ्ते	ओ.पी.वी., डी.पी.टी., एच.आई.बी.,
14 हफ्ते	ओ.पी.वी., डी.पी.टी., एच.आई.बी.,
6 माह	हेपेटाइटिस बी
9 माह	ओ.पी.वी., मीज़ल्स
1 वर्ष के पश्चात्	हेपेटाइटिस ए (2 डोज़ 6-12 माह अलग से) चिकन पॉक्स
15-18 माह	एम.एम.आर.
18 माह	ओ.पी.वी., डी.पी.टी., एच.आई.बी.,
2 वर्ष	टाइफाइड (इसके पश्चात् 3 वर्षों)
5 वर्ष	ओ.पी.वी., डी.पी.टी.
10 वर्ष	टी.टी.
15 वर्ष	टी.टी.
सभी राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस पल्स पोलिया टीकाकरण	

कोरोना वॉरियर्स

अजय कुमार सिंह
वरिष्ठ सहायक, बठिंडा यूनिट

कोरोना योद्धा या कोरोना वॉरियर्स उन्हें कहा जाता है, जो मुश्किल वक्त में निःस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा करते हैं। आज पूरी दुनिया कोरोना वायरस जैसी महामारी का सामना कर रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस को कोविड–19 के नाम से भी जाना जाता है कोरोना का संक्रमण दुनिया भर में तेजी से फैल रहा है। इस कोरोना वायरस से लाखों लोगो अपनी जान तक गवाँ चुके हैं और अब भी प्रतिदिन हजारों लोगों की जानें जा रही हैं। लेकिन अभी तक कोरोना वायरस जैसी महामारी को रोकने के लिए कोई भी देश दवा बनाने में सफल नहीं हुआ है। स्वास्थ्य विभाग का मानना है कि सावधानी और जागरूकता से ही कोरोना संक्रमण जैसी महामारी से बचा जा सकता है।

आज पूरी दुनिया के असली हीरो कोरोना योद्धा है, जो लोगों को कोरोना संक्रमित होने से बचा रहे हैं। भारत समेत पुरे विश्व के डॉक्टर, पुलिस, सफाईकर्मी लोगों की जान बचाने के लिए खुद को जोखिम में डाल रहे हैं ताकि कोरोना संक्रमण को फैलने से रोका जा सके और कोरोना संक्रमित लोगों को जल्द से जल्द ठीक किया जा सके। कोरोना योद्धा इस महामारी को मिटाने के लिए दिन–रात जी–जान से अपने काम जुटे हुए हैं। कोरोना योद्धा अपनी ड्यूटी खत्म करने के बाद भी अपने घर जाने पर परिवार के सदस्य से जलग रहते हैं। कई कोरोना योद्धा ऐसे हैं जो काम खत्म होने के बाद भी अपने घर नहीं जा पाते और लोगो की दिन–रात सेवा कर रहें हैं, उपचार कर रहें है, और गरीबों तक खाना पहुंचा रहे हैं।

कोरोना योद्धा दिन रात अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए अपनी जान तक न्योछावर कर दी है। हमें उन सभी कोरोना योद्धाओं का सम्मान करना चाहिए जो इस संकट की घड़ी में अपनी जान जोखिम में डालकर लोगों की सेवा कर रहें है देश का हर नागरिक उन्हें दिल से सलाम और उनका आभार प्रकट करता है।

साहित्यिकी

चंद शब्द सुनहरी यादों के

श्रीमती मीरा चतुर्वेदी
हिंदी अध्यापिका
जी डी गोयनका स्कूल, सरिता विहार, नई दिल्ली
धर्मपत्नी श्री शशांक चतुर्वेदी
महाप्रबंधक (विपणन), निगमित कार्यालय

आज ''रक्षक'' पत्रिका में लिखने का मौका मिला है तो मन जीवन की खूबसूरत यादों में जाकर गांव की ओर मुड़ गया है। बचपन में गांव की कुछ सुनहरी यादें मन को यादों के गलियारों में ले जा रही हैं और आज आप लोगों के साथ उसे साझा करने का मन हो रहा है।

बचपन में जब गर्मी की छुट्टियां होती थी तो मां–पापा और अपने भाई–बहनों के साथ गांव जाने का जो उत्साह था, वह आज शहरी जीवन में कही नहीं मिल पाता।

28 किलोमीटर का सफर पापा के साथ स्कूटर से तय करके हम सब जब गांव की ओर जाते थे तब दूर सड़क से ही वह गांव के खलिहान में पांच आम के पेड़ का झूम–झूम कर स्वागत करना, वह आमी नदी का कल–कल कर बहकर उत्साह से अपने पास बुलाना, और वह पक्का मकान और साथ में चार–पांच कच्चे मकान हमारे क़दमों को चूमने के लिए आतुर रहते थे। घर पहुंचते ही वहां की सोंधी महक, खेतों में लहलहाते धान के पौधे...यह सब मन को लुभाने के लिए काफी होते थे। वहां पहुंचते ही गांव में बच्चों का झुंड.......शहर से कोई आया है (उस समय खुद को व्यक्ति विशेष का दर्जा अनुभव कराने में सक्षम समझते थे) फिर बच्चों का ग्रुप बनाकर पूरे दिन खेलना, किसी के भी घर जाकर कुछ भी खा–पी लेना, पेड़ों पर चढ़कर जामुन और अमरूद को तोड़ना और सभी के साथ उन कच्चे–पके फलों को खाना ... ये सब करते हुए कभी भी जून की तपती दोपहरी में गर्मी का एहसास ही नहीं होता था और शाम होते ही बाहर चारपाई निकाल कर बैठ कर पूरे गांव के बाबा, चाचा, बुआ लोगों के साथ मस्ती करते हुए हमारा बाल मन फूले नहीं समाता था। इस तरह 10–20 दिन पलक झपकते ही बीत जाते थे और हम वापस शहर की ओर बोझिल कदमो से बढ़ते चले जाते थे।

हम भाई–बहन शहर तो पहुँच जाते थे पर मन वहीं गावं के गलियारों में छोड़ आते थे, सच कितना सुहाना सफ़र था। धीरे धीरे शहर की बढ़ती व्यस्तता के कारण गांव भी जाना कम से कमतर होता चला गया और फिर विवाह के बाद एक नई जिंदगी शुरू होने पर नौकरी के सिलसिले में इस शहर से उस शहर कंक्रीट के जंगलों में जिंदगी भागती ही जा रही है। आज जब कभी पीछे मुड़कर बचपन की यादों को लेकर गावं में पहुँच जाती हूँ, तो आज भी मेरा गावं पुकारकर कहता है ....

शहर में छाले पड़ जाते हैं जिन्दगी के पाँव में,
सुकून का जीवन बिताना है तो आ जाओ अपने गाँव में।

अजय कुमार सिंह
सीनियर असिस्टेंट, बठिंडा यूनिट

ज़िंदगी

तू ज़िंदगी को जी उसे समझने की कोशिश न कर।

सुंदर सपनों के ताने बाने बुन उसमें उलझने की कोशिश न कर।

चलते वक्त के साथ तू भी चल उसमें सिमटने की कोशिश न कर।

अपने हाथों को फैला खुल कर साँस ले अंदर ही घुटने की कोशिश न कर।

मन में चल रहे युद्ध को विराम दें बेवजह खुद से लड़ने की कोशिश न कर।

कुछ बातें भगवान पर छोड़ दें सब कुछ खुद सुलझाने की कोशिश न कर।

जो मिल गया उसी में खुश रह सुकून छीन ले वो पाने की कोशिश न कर।

रास्ते सुंदरता का लुत्फ उठा मंजिल पर जल्दी पहुंचने की कोशिश न कर।

जुगेश कुमार
वरिष्ठ अधिकारी, बठिंडा यूनिट

नारी

जब है नारी में शक्ति सारी तो क्यों कहें इन्हे बेचारी
मैं भी छू सकती हूै आकाश मौके कि मुझे है तलाश
अबला नहीं है बिल्कुल नारी, संघर्ष रहेगा हमारा जारी
नारी का जो करे अपमान, जानें उसे पशु समान
बराबर का साथ निभाए महिलाएं जब आगे आएं
माँ लक्ष्मी, माँ सरस्वती कि चाहे कितनी भी पूजा कर लो,
या फिर नौ दिन अखंड उपवास कर लो
लेकिन अगर नारी कि इज़्ज़त करना नही सिखा तो सब बेकार है
जिम्मेदारी संग नारी भर रही उड़ान,
ना कोई शिकायत ना कोई थकान

माँ तेरी ममता की छाँव

पवन कुमार
ऑपरेटर ग्रेड II,
बठिंडा यूनिट

जब मैं व्याकुल होता हूं तो खुशियों के मेले लगा देती हैं माँ
नींद नहीं आती हैं तो लोरी की चादर उड़ा देती हैं माँ
मेरे दिल की हर पुकार पहचान लेती हैं माँ
मेरी हर नादानी को माफ कर देती हैं माँ

खुद भूखे रहकर सब को खाना खिलाती हैं माँ
तिनका-तिनका जोड़कर घर बना देती हैं माँ
परिवार का मुखिया बन घर को संवारती हैं माँ
सफलता की राह में सीढ़ियां बन जाती हैं माँ

मुश्किलें कितनी भी हो समय हँस कर गुजार लेती हैं माँ
जिंदगी के हर पड़ाव पर साथ निभाती हैं माँ
बिना किसी स्वार्थ के प्यार करती हैं माँ
तू चाहे संतान न हो उसकी तो यशोदा बन जाती हैं माँ

कोई हाल हो या बीमारी हो तो दुआओं का दीपक जलाती हैं माँ
मुश्किलें आसान हो जाती हैं अगर पास में हो हमारी माँ
व्यर्थ में ढूंढा करते हैं हम खुदा को मंदिर, मजार में
शिक्षा के मंदिर की भांति हैं हम सब की प्यारी माँ

श्री योगेश आनन्द
अधिकारी (लेखा),
निगमित कार्यालय

मारना चाहते हो तो इच्छाओं को मारो।
जीतना चाहते हो तो क्रोध और तृष्णाओं को जीतो।
खाना चाहते हो तो गुस्से को खाओं।
पीना चाहते हो तो ईश्वर भक्ति का शर्बत पीओ।
पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहिनो।
देना चाहते हो तो नीचे निगाह करके दो और भूल जाओ।
लेना चाहते हो तो माता-पिता और गुरू का आर्शीवाद लो।
जाना चाहते हो तो सत्संगों एवं स्वास्थ्यप्रद स्थानों पर जाओं।
आना चाहते हो तो दुखियों की सहायता को आओ।
छोड़ना चाहते हो तो पाप, घमंड और अत्याचार को छोड़ो।
बोलना चाहते हो तो सत्य और मीठी वचन बोलो।
बनाना चाहते हो तो धर्मशाला, पाठशाला, कुएँ और तलाब बनाओ।
खरीदना चाहते हो तो प्रेम का सौदा खरीदो।
तोलना चाहते हो बात को तोलो और ठीक तोलो।
देखना चाहते हो तो अपनी बुराई को देखो।
सुनना चाहते हो तो ईश्वर की प्रशंसा और दुखियों की पुकार को सुनो।
भगवान चाहते हो तो पराई निदा और पराई स्त्रियों से भागों।

नोट: यदि इतने कामों से भी सुख शान्ति और अन्त में स्वर्ग न मिले तो भगवान के दरबार में अपील कीजिए। आपकी अवश्य जीत होगी।

श्रीमती किरण बाला
अनुभाग अधिकारी, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
धर्मपत्नी श्री योगेश आनन्द,
अधिकारी (लेखा), निगमित कार्यालय

ओम की महिमा

ओम है जीवन हमारा-ओम प्राणधार है,
ओम है करता विधाता-ओम पालनहार है,
ओम है दु:ख का विनाशक-ओम सर्वाधार है,
ओम है बल तेजधारी ओम करूणानन्द है,
ओम सब का पूज्य है-हम ओम का पूजन करें,
ओम के ही ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें,
ओम के गुरू मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन,
दिन प्रतिदिन बुद्धि बढ़ेगी धर्म में होगी लगन,
ओम के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अंत में यह ओम हम को मुक्ति तक पहुँचाएगा।

श्री आशीष सविता
सहायक प्रबंधक
(मानव सं.एवं प्र.),
निगमित कार्यालय

किस्मत की बात

गंतव्य मिले ना मिले,
ये तो किस्मत की बात है।
हम प्रयत्न भी ना करे,
ये तो कष्टदायक बात है
जिन्दगी बाधाओं से भरी है,
समय को दवा बनाना सीख लो,
कोई लाख गलत भी बोले,
बस मुस्कुरा कर माफ करना सीख लो

चलो तो सही...

कठिन है पर इतना भी नहीं,
तुम करो तो सही, कुछ सीख जाओगे।
दूर है लक्ष्य, तुम चलो तो सही,
तभी तो, तुम उसे पाओगे ।।
एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा,
रोशन तुम्हारा भी संसार होगा ।।
तुम कुछ आगे बढ़ो तो सही,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही ।।
यू कब तक सपनों में डूबे रहोगे, तुम राह चुनो तो सही,
तुम उठो तो सही, तुम चलो तो सही।
ठोकर खाकर सीख जाओगे,
फिर एक बार तुम जी जाओगे।।

आदमी की औकात

विजय कुमार गांधी
उप प्रबन्धक (प्रशासन)

'फिर घमंड कैसा'
घी का एक लोटा,
लकड़ियों का ढेर,
कुछ मिनटों में राख.....
बस इतनी-सी है
'आदमी की औकात !!!!'

एक बूढ़ा बाप शाम को मर गया,
अपनी सारी जिन्दगी,
परिवार के नाम कर गया,
कहीं रोने की सुगबुगाहट,
तो कहीं ये फुसफुसाहट....
अरे जल्दी ले चलो
कौन रखेगा सारी रात.....
बस इतनी-सी है
'आदमी की औकात !!!!'

मरने के बाद नीचे देखा तो
नज़ारे नज़र आ रहे थे,
मेरी मौत पे.....
कुछ लोग ज़बरदस्त,
तो कुछ ज़बरदस्ती
रोए जा रहे थे।
नहीं रहा........चला गया.....
दो चार दिन करेंगे बात.....
बस इतनी-सी है
'आदमी की औकात !!!!'

बेटा अच्छी सी तस्वीर बनवायेगा,
उसके सामने अगरबत्ती जलायेगा,
खुश्बुदार फूलों की माला होगी....
अखबार में अश्रुपूरित श्रद्धांजली होगी.........
बाद में शायद कोई उस तस्वीर के
जाले भी नही करेगा साफ़....
बस इतनी-सी है
'आदमी की औकात !!!!'

जिन्दगी भर,
मेरा- मेरा- किया....
अपने लिए कम ,
अपनों के लिए ज्यादा जिया....
फिर भी कोई न देगा साथ.....
जाना है खाली हाथ.... क्या तिनका ले जाने के लायक भी,
होंगे हमारे हाथ ??? बस
'ये है हमारी औकात....!!!!'
'जाने कौन सी शोहरत पर,'
'आदमी को नाज है!'
'जो आखरी सफर के लिए भी,'
'औरों का मोहताज है!!!!'

'फिर घमंड कैसा ?'

'बस इतनी सी हैं'
'हमारी औकात...'

सत्यनारायण नान्दल
सेवानिवृत्त - सहायक प्रबन्धक (प्रशासन),
निगमित कार्यालय

हिन्दी का थोड़ा आनंद लीजिये.....मुस्कुरायें....

हिन्दी के मुहावरे, बड़े ही बावरे हैं,
खाने पीने की चीजें से भरे हैं......
कहीं पर फल है तो कहीं आटा-दालें है,
कहीं पर मिठाई है, कहीं पर मसाले हैं,

चलो, फलों से ही शुरू कर लेते हैं,
एक एक कर सबके मजे लेते है......
आम के आम और गुठलियों के भी दाम मिलते हैं,
कभी अंगूर खट्टे हैं,
कभी खरबूजे, खरबूजे को देख कर रंग बदलते हैं,

कहीं दाल में काला है,
तो कहीं किसी की दाल ही नहीं गलती है,
कोई डेड़ चावल की खिचड़ी पकाता है,
तो कई लोहे के चने चबाता है,
कोई दाल भात में मूसरचंद बना जाता है,
मुफलिसी में जब आटा गीला होता है,
तो आटे दाल का भाव मालूम पड़ जाता है,

सफलता के लिए कई पापड़ बेलने पड़ते है,
आटे में नमक तो चल जाता है,
पर गेंहू के साथ, घुन भी पिस जाता है,
अपना हाल तो बेहाल है, ये मूंग और मसूर की दाल है,

गुड़ खाते हैं और गुलगुले से परहेज करते हैं,
और कभी गुड़ का गोबर कर बैठते हैं,

कभी तिल का ताड़, कभी राई का पहाड़ बनता है,
कभी ऊँट के मुंह में जीरा है,
कभी कोई जले पर नमक छिड़कता है,

किसी के दांत दूध के हैं,
तो कई दूध के धुले हैं,
कोई जामुन के रंग सी चमड़ी पा के रोई है,
तो किसी की चमड़ी जैसे मैदे की लोई है,

किसी को छटी का दूध याद आ जाता है,
दूध का जला छाछ को भी फूंक फूंक पीता है,
और दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है,
शादी बूरे के लड्डू हैं, जिसने खाए वो भी पछताए,
और जिसने नहीं खए, वो भी पछताते हैं,

पर शादी की बात सुन, मन में लड्डू फूटते है,
और शादी के बाद दोनों हाथें में लड्डू आते हैं,
कोई जलेबी की तरह सीधा है, कोई टेढ़ी खीर है,
किसी में मुंह में घी शक्कर है, सबकी अपनी अपनी तकदीर है
कभी कोई चाय-पानी करवाता है,
कोई मक्खन लगाता है
और जब छप्पर फाड़ कर कुछ मिलता है,
तो सभी के मुंह में पानी आ जाता है,

भाई साहब अब कुछ भी हो,
घी तो खिचड़ी में ही जाता है, जितने मुंह हैं, उतनी बातें हैं,
सब अपनी-अपनी बीन बजाते हैं,
पर नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है,
सभी बहरे हैं,
ये गजबमुहावरे नहीं बुजुर्गो के अनुभवों की खान हैं.....
सच पूछो तो हिन्दी भाषा की जान हैं...!

धर्मा मोशाल
वरिष्ठ सहायक, बठिंडा यूनिट

समय का बदलाव

मेरा माना है कि दुनिया के जितने
बदलाव हमारी पीढ़ी ने देखे है
हमारे बाद की किसी और पीढ़ी को शायद
ही इतने बदलाव देख पाना संभव हो

हम वो आखिरी पीढ़ी है जिसने
बैलगाड़ी से लेकर सुपर सोनिक जेट
देखे हैं। बैंरग खत से लेकर लाइव
चैटिंग जैसी असंभव लगने वाली
वर्चुअल मीटिंग जैसी बहुत सी बातों को
संभव होते हुए देखा है।

हम वो पीढ़ी है जिन्होंने
कई–कई बार मिट्टी के घरों
में बैठ कर परियो और राजाओं
की कहानियां सुनी है।
जमीन पर बैठ कर खाना खाया है।
प्लेट में डालकर चाय पी है।

हम वो लोग है जिन्होंने
बचपन में मोहल्ले के मैदानों में
अपने दोस्तों के साथ परम्परागत
खेल गिल्ली–डंडा, छुपा–छुपी,
खो–खो, कबड्डी, पिट्ठू, कन्चे
जैसे खेल खेले हैं।
हम वो आखरी पीढ़ी के लोग है
जिन्होंने चांदनी रात में डीवरी
लालटेन या बल्व की पीली रोशनी
में होमर्वक किया है और दिन के
उजाले में चादर के अन्दर छिपा कर
खूब नावेल पढ़ी है।

हम वही लोग है
जिन्होंने कूलर, एसी, हीटर, फ्रिज व बिजली के
बिना ही अपना बचपन गुजारा है और हम वही है
जो अपने बालों में सरसों का ज्यादा तेल लगाकर
स्कूल और शादियों में जाया करते थे।

हम वही लोग हैं
जिन्होंने अपनो के लिए अपने
जज्बात खतों में आदान प्रदान किये हैं
और इन खतों के पहुंचने और
जवाब के वापस आने में महीनों
तक का इन्तजार किया है।

हम वो आखरी पीढी के लोग हैं
जिन्होंने स्याही वाली दवात या पेन
से कापी किताबें कपड़े और हाथ
काले नीले किए है । तख़्ती पर सेठे
की कलम से लिखा है और तख़्ती धोई है।

हम वो आख़री पीढ़ी के लोग हैं
जो मोहल्ले के बुजुर्गों को दूर से
देख कर नुक्कड़ से भाग कर घर आ
जाया करते थे और समाज के बुजुर्गों की इज्ज़त करते थे ।

हम आखरी लोग है
जब साम होते ही छत पर या अपने
आगन पर पानी का छिड़काव किया करते थे
एक स्टैड वाला पंखा सब के हवा के

लिए हुआ करता था और सुराई से
ठंडा पानी पिया करते थे। सूरज निकलने
के बाद भी ढीठ बने सोते रहे थे वो सब
दौर बित गया चादरे अब नहीं बिछा करती
डिब्बे जैसे कमरों में कूलर ऐसी के सामने
रात होती है और दिन गुजरते हैं।

हम वो आखरी पीढ़ी के लोग हैं।
जिन्होंने गुड़ की चाय पी है।
काफी समय तक सुबह काला या लाल
दंत मंजन या सफेद टूथ-पाइडर इस्तेमाल
किया है और कभी-कभी तो नमक से या
लकड़ी के कोयले से भी दांत साफ किये हैं
हम लोगो ने चांदनी रातों में रेडियों पर
ए बी बी की खबरें विविध भारती
आल इंडिया रेडियो, बिनाका गीत माला और
हवा महल जेसे प्रोगाम पूरी शिद्दत से सुने हैं

हम वो आखरी पीढ़ी के लोग हैं
जिन्होंने वो खूबसूरत रिश्ते और इनकी
मिठास बाटने वाले लोग देखे हैं।
जो लगातार अब कम होते चले गये।
अब तो लोग जितना पढ़ लिख रहे है
इतने ही खुदगर्ज व बेमुखि व
अकेलेपन व निराशा में खोते जा रहे है।
हम वो खुशनसीब लोग है जिन्होंने
रिश्तों की मिठास महसूस की है।

हम इस दुनिया के वे लोग है
जिन्होंने एक ऐसा अविश्वसनीय सा लगने वाला
नजारा देखा है आज के इस करोना काल
में पारिवारिक रिश्तेदारों बहुत से पति-पत्नी
बाप-बेटा भाई-बहन आदि को एक दूसरे
को छूने से भी डरते हुए देखा है।
पारिवारिक रिश्तेदारों की तो बात ही क्या करें
आज खुद आदमी को अपने हाथ से अपनी
ही नाक और मुंह को छुने से डरते हुए देख रहे हैं।

अर्थी को बिना चार कंधो के
श्मशान घाट पर जाते हुए भी देखा है
पार्थिव शरीर को दूर से ही अग्नि
दाम लगाते हुए देखा है।
हम आज के भारत की एकमात्र वह भाग्यशाली
पीढ़ी है।
जिसने अपने माँ-बाप की बात भी मानी और
अपने बच्चों की भी बात मान रहे है।
हम ही वो आखरी पीढ़ी के लोग है ।

लोकेश भारद्वाज
अधिकारी (लेखा), निगमित कार्यालय

बचपन

बचपन के दिन भी कितने अच्छे होते थे
तब दिल नहीं सिर्फ खिलौने टूटा करते थे
अब तो एक आंसू भी बर्दाश्त नहीं होता
और बचपन में जी भरकर रोया करते थे

वो क्या दिन थे
मम्मी की गोद और पापा के कंधे,
न पैसे की सोच और न लाइफ के फंडे
न कल की चिंता और न फ्यूचर के सपने,
अब कल की फिकर और अधूरे सपने
मुड़ कर देखा तो बहुत दूर हैं अपने,
मंजिलों को ढूंडते हम कहाँ खो गए
न जाने क्यूँ हम इतने बड़े हो गए

पिंकी
कनिष्ठ सहायक, बठिंडा यूनिट

प्यारी माँ, न्यारी माँ

खुशियों की पिटारी माँ,
लगती सबसे न्यारी माँ।
मेरी माँ प्यारी माँ,
दुनियाँ की सबसे न्यारी माँ।।

लोरी गाकर सुलाती है माँ,
दुनियाँ की सैर कराती माँ।
सपने मुझे दिखाती माँ,
जीवन का लक्ष्य बताती माँ।।

माना मेरे घर की माँ,
दीवारो में चंदा की सूरत है।
पर मेरे मन के मंदिर में,
बस केवल माँकी मूरत है।।

मम्मा तेरी हर बात मुझे,
वरदान से बढ़कर लगती है।
हे माँ तेरी सूरत मुझको,
भगवान से बढ़कर लगती है।।

हर घर में माँ की पूजा हो,
ऐसा संकल्प उठाती हूँ।
मैं दुनिया की हर माँ के ,
चरणों में ये शीश झुकाती हूँ।।

कान्ता
वरिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

जन्मदिवस बधाई गीत।
बधाई हो बधाई शुभ दिन की बधाई जन्मदिवस की बधाई हो।
जन्मदिवस पर देते है तुम को हम बधाई ।
जीवन का हर इक लमहा हो तुमको सुखदाई।।
मंगलमय दीप जलाओ उजियारा जग फैलाओ।
उत्तम पुरूषार्थ जगाकर, आत्मपद अपना पाओ।।
हो शंतजीव तुम चिरंजीव, शुभ घडी आज आई।
माता सुखदाई, पिता सुखदाई।।
बहन सुखदाई, सखा सुखदाई।
सद्गुण की खान बने तू, इतनी महान बने तू।।
हर कोई चाहे तुमको ऐसा इंसान बने तू ।
बलवान हो तू महान हो, करे गर्व तुझ पे अब हम ।।
दर्शन सुखदाई हो, सुमिरन सुखदाई।
तनमन सुखदाई हो, जीवन सुखदाई बधाई हो। ।
तुझमें है चंदा और तारे तुममें ही सृजनहारे ।
तू जान ले पहचान ले निज सूद बुद आदम ।।
आनंदमय जीवन तेरा, खुशीयों का हो सवेरा ।
चमके तू बन के सूरज, हर पल हो दूर अंधेरा।।
तू ज्ञान का भंडार है, रखना तू धैर्य संयम ।
ग्रह सुखदाई हो, गगन सुखदाई ।।
जल सुखदाई हो, आंगन सुखदाई हो, बधाई हो।
तुझमें ना जीना मरना, जग है केवल एक सपना।।
परमेश्वर है तेरा अपना, निष्ठा तू ऐसी रखना।
तू ध्यान कर निज स्वरूप का तू सृष्टि का उदगम ।।
मंजिल सुखदाई हो, सफर सुखदाई हो।
सब कुछ सुखदाई हो, बधाई हो बधाई हो।।
गम की धूप लगे ना तुझको, देते हम दुहाई।
ईश्वर सुखदाई हो, ऋषिवर सुखदाई हो, बधाई हो।।
बधाई हो, बधाई हो, शुभदिन की बधाई।
बधाई हो, बधाई हो, जन्मदिन की बधाई ।।

तुझे जीना होगा

इन लम्हों को बीतने दे
जो प्रलय उठा है। जीवन में
उसे थमने दें

यहाँ कुछ भी तो साबित नहीं है
फिर किस बात से अवगत नहीं
इस कठिन दौर को भी तो गुजरना होगा
उस प्रलय निमस के लिए
आज इस दुख को सहना होगा

हाँ तुझे जीना होगा
जब डूब रहा हो मन किसी अंधकार में
वृथा हो रहे हो प्रयास जीवन उबारने में
टूट रहा है। हृदय हर बार
टक्करा कर संसार पाषाण से
और चुभ रहे हो कई (प्राशी) शब्द
सीने में किसी बाण से

इस कुभित (अशात) क्षण को भी
कभी मौन होना होगा
उस संभव निमिष के लिए
आज इस हुक को सहना होगा
हाँ तुझे जीना होगा

धक कर थम रहे है? कदम
तो गैर क्या है?
हासिल होगी मंजिले भी
है। जीवन अगर तो
इसके देश क्या है?

करना है तो मुकाबला तो खुद ही से कर
रहने दे चका चौध
दुनियाँ की वही
पहले खुद को भीतर से रोशन कर
धने तिमिर से कभी तो
किरणो को फूटना होगा
उस धवल निमिष के लिए
आज इस हूक को सहना होगा
हाँ तुझे जीना होगा
कितना भी दुख वक्त चल रहा हो
उसे गुजर जाने दिजिये

रमा जोशी
वरिष्ठ सहायक, बठिंडा यूनिट

जब जीवन में मुसीबत आये

जब मुसीबत आये तो।
समझ जाइए जनाब।।
जिन्दगी हमें कुछ नया।
सिखाने वाली है।।

जिन्दगी में इतने व्यस्त हो जाओ की।
उदास होने का वक्त ही ना मिले।।

असफलता एक चुनोती है। इसे स्वीकार करो।
क्या कभी रह गई देखो और सुधार करो।।

जब तक ना सफल हो नींद चैन को त्यागो तुम।
संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम।।

कुछ किये बिना जय-जय कार नहीं होती।
कोशिश करने वालो की कभी हार नहीं होती।।

कोई इतना अमीर नहीं की।
अपना पुराना वक्त खरीद सके।।
और कोई इतना गरीब भी नहीं है।
अपना आने वाला कल बदल ना सके ।।

दौलत तो भीख माँगने पर भी मिल जाती है।
मगर इज्ज़त कमानी पड़ती है।।

मजबूरियाँ देर रात तक जगाती है।
जिम्मेदारियाँ आपको सुबह जल्दी उठा देती है।।

तस्वीर में साथ होने से ज्यादा जरूरी है।
तकलीफ में साथ होना।।

कभी फूलो की तरह मत जीना।
बन खिलौने बिखर जाओगे।।

जीना है तो पत्थर बन के जियो।
जिस दिन तरासे गये तो।।
खुदा बन जाओगे।

खुशियाँ चाहे किसी के साथ बाट लेना।।
लेकिन अपना गम को किसी भरोसे मंद ।
इंसान के साथ ही बांटना।।

बीज उत्पादन में हिल (इंडिया) लिमिटेड के योगदान के संबंध में अन्य संगठनों द्वारा की गई विशेष समीक्षा/टिप्पणियां

अर्द्ध शुष्क उष्ण कटिबंधीय अंतराष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान (आई.सी.आर.आई.एस.ए.टी.), हैदराबाद एक अंतराष्ट्रीय संगठन है और भारत में आई.सी.ए.आर. संस्थान/राज्य कृषि विश्वविद्यालय के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाली विशेषताओं के साथ नई मूंगफलियों की किस्मों की ब्रीडिंग के लिए योगदान कर रहा है। आई.सी.आर.आई.एस.ए.टी. ने भारत में किसानों को अच्छी गुणवत्ता वाले मूंगफली बीजों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड के प्रयासों की सरहाना की है। इसके अतिरिक्त, वे भारत में उच्च गुणवत्ता वाले ओलिक मूंगफली बीजों के उत्पादन के लिए बीज उत्पादन श्रृंखला का निर्माण करने के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड के साथ महत्वपूर्ण साझेदारी करने के इच्छुक है।

ICRISAT
INTERNATIONAL CROPS RESEARCH INSTITUTE FOR THE SEMI-ARID TROPICS

From: Janila, P (ICRISAT-IN) <P.Janila@cgiar.org>
Sent: Monday, May 24, 2021 2:38 PM
To: Ram Prakash Sharma <RamPrakashSharma@hotmail.co.in>
Cc: HIL HYD <hilhydmrcr@gmail.com>
Subject: Re: Regarding Spread of Groundnut variety GJG-32 through seed minikits

Dear Mr Ram Prakash,

Thank you for the message and your kind words. HIL and ICRISAT share a common goal of ensuring supply of quality seeds of new varieties to the farmers and I sincerely appreciate ICRISAT's partnership with HIL.

As we look forward to build high oleic groundnut value chains in India, seed supply of high purity remains critical. In this context, I believe ICRISAT-HIL partnership will be valuable to ensure seed supply of high oleic groundnut varieties in the country.

With best regards,

Janila

....

Ms Janila Pasupuleti, PhD
Principal Scientist (Groundnut Breeding)

&

Leader of Flagship on 'Variety on Hybrid Development' of CRP-GLDC (http://gldc.cgiar.org)

International Crops Research Institute for the Semi-Arid Tropics (ICRISAT),
Patancheru, Telangana, India, Pin code – 502 324
p.janila@cgiar.org; janilap@yahoo.com
Tel: +91-99899 30855

हिल (इंडिया) लिमिटेड ने भाकृअनुप–मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ से प्रजनक बीज उत्पादन की प्रयोजकता प्राप्त करने के साथ ही अपने बीज उत्पादन प्रदर्शन में एक और नई उपलब्धि जोड़ ली है। निदेशक, भाकृअनुप–मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ से प्राप्त पत्र प्रयोजकता को संपुष्ट करता है।

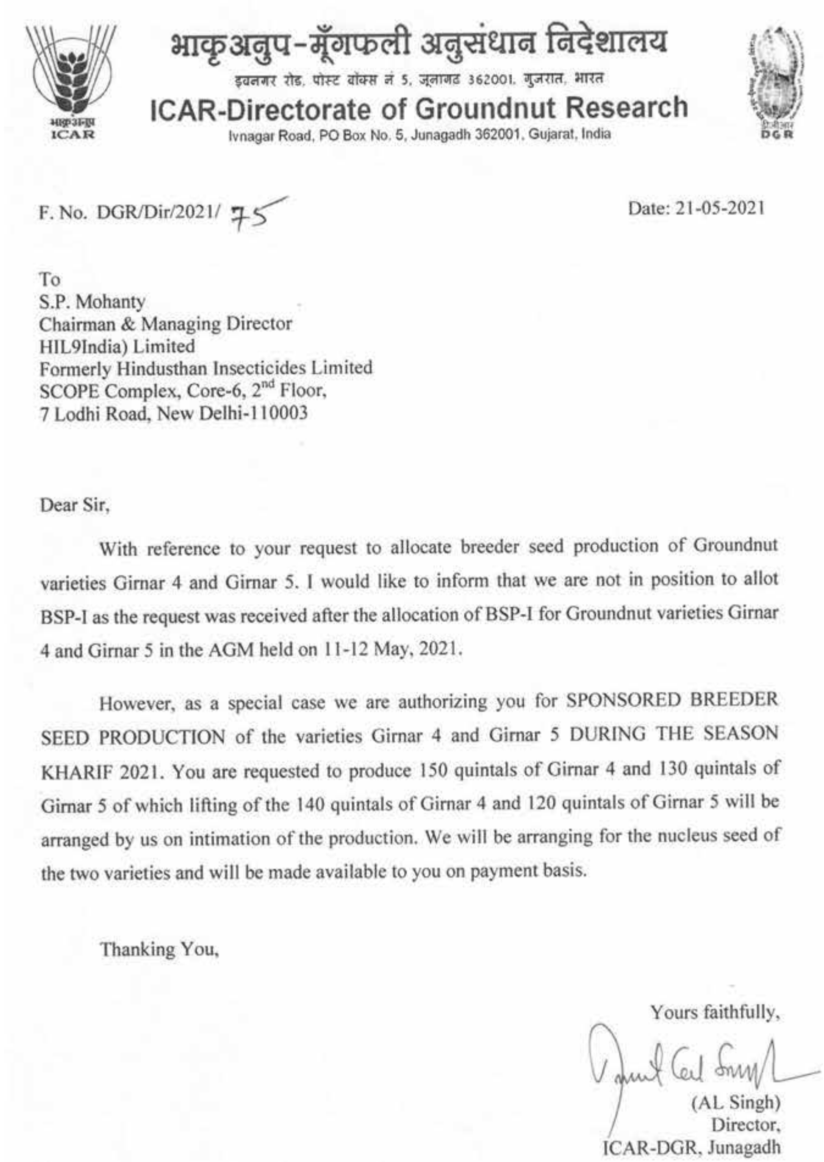

भाकृअनुप-मूँगफली अनुसंधान निदेशालय

इवनगर रोड, पोस्ट बॉक्स नं 5, जूनागढ 362001, गुजरात, भारत

ICAR-Directorate of Groundnut Research

Ivnagar Road, PO Box No. 5, Junagadh 362001, Gujarat, India

F. No. DGR/Dir/2021/ 75 | Date: 21-05-2021

To
S.P. Mohanty
Chairman & Managing Director
HIL9India) Limited
Formerly Hindusthan Insecticides Limited
SCOPE Complex, Core-6, 2nd Floor,
7 Lodhi Road, New Delhi-110003

Dear Sir,

With reference to your request to allocate breeder seed production of Groundnut varieties Girnar 4 and Girnar 5. I would like to inform that we are not in position to allot BSP-I as the request was received after the allocation of BSP-I for Groundnut varieties Girnar 4 and Girnar 5 in the AGM held on 11-12 May, 2021.

However, as a special case we are authorizing you for SPONSORED BREEDER SEED PRODUCTION of the varieties Girnar 4 and Girnar 5 DURING THE SEASON KHARIF 2021. You are requested to produce 150 quintals of Girnar 4 and 130 quintals of Girnar 5 of which lifting of the 140 quintals of Girnar 4 and 120 quintals of Girnar 5 will be arranged by us on intimation of the production. We will be arranging for the nucleus seed of the two varieties and will be made available to you on payment basis.

Thanking You,

Yours faithfully,

(AL Singh)
Director,
ICAR-DGR, Junagadh

उपलब्धि

उद्योगमंडल यूनिट की उप प्रबंधक (राजभाषा) को उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास से ''राजभाषा शब्दावली के सरलीकरण – केरल के संदर्भ में'' विषय पर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई है।

हिल (इंडिया) लिमिटेड सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2020

हिल (इंडिया) लिमिटेड द्वारा ''सतर्क भारत, समृद्ध भारत'' विषय पर 27 अक्टूबर, 2020 से 02 नवंबर, 2020 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2020 का आयोजन किया गया। श्री एस.पी. मोहन्ती, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक ने निगमित कार्यालय के सभी कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई तथा कंपनी की सभी यूनिटों और क्षेत्रीय बिक्री कार्यालयों में भी सत्यनिष्ठा की शपथ ली गई। सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2020 के दौरान प्रधान कार्यालय और यूनिटों के कर्मचारियों में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रमों जैसे निबंध लेखन, कविता लेखन, नारा लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया।

प्रधान कार्यालय

रसायनी यूनिट

बठिंडा यूनिट

उद्योगमंडल यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड गणतंत्र दिवस समारोह

अनुसंधान एवं विकास केन्द्र

हिल (इंडिया) लिमिटेड के गुरूग्राम स्थित अनुसंधान एवं विकास केन्द्र में कंपनी के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक डॉ. एस.पी. मोहन्ती की उपस्थिति में गणतंत्र दिवस 2021 समारोह का आयोजन किया गया।

उद्योगमंडल यूनिट

उद्योगमंडल यूनिट में 26 जनवरी 2021 गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान प्रधान कार्यालय से महाप्रबंधक (तकनीकी) श्री महेन्द्र सिंह और उप महाप्रबन्धक (तकनीकी) श्री एम एस अनिल उपस्थित थे। यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी संकपाल की अध्यक्षता में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

गणतंत्रता दिवस समारोह 2021 के अवसर पर झंडा फहराते एवं कार्मिकों को संबोधित करते श्री महेन्द्र सिंह, महाप्रबन्धक (तकनीकी)

बठिंडा यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की पंजाब स्थित बठिंडा यूनिट में यूनिट प्रमुख की उपस्थिति में गणतंत्र दिवस 2021 समारोह का आयोजन किया गया।

रसायनी यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की महाराष्ट्र स्थित रसायनी यूनिट में यूनिट प्रमुख की उपस्थिति में गणतंत्र दिवस 2021 समारोह का आयोजन किया गया।

साम्प्रदायिक सद्भाव

देशीय सुरक्षा दिवस

4.3.2021 देशीय सुरक्षा दिवस के अवसर पर उद्योगमंडल यूनिट के यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी संकपाल ध्वजारोहण करते हुए

कविता रचना में प्रथम और द्वितीय पुरस्कार प्राप्त डॉ विजयलक्ष्मी एस यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी संकपाल से पुरस्कार स्वीकार करते हुए

यूनिट द्वारा आयोजित सुरक्षा कविता रचना प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त श्री सलिम ए रहमान यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी संकपाल से पुरस्कार स्वीकार करते हुए

यूनिट द्वारा आयोजित सुरक्षा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त श्री मनीष जी एवं श्री रंजित यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी संकपाल से पुरस्कार स्वीकार करते हुए

꧁ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह ꧂

निगमित कार्यालय

हिल (इंडिया) लिमिटेड के निगमित कार्यालय में दिनांक 08.03.2021 को अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, निदेशक (वित्त) एवं अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में महिलाओं में जागरूकता फैलाने, सामाजिक समानता तथा महिलाओं से जुड़े विभिन्न पहलुओं/मुद्दों पर चर्चा करने के उद्देश्य से 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय के कर-कमलों से कार्यालय में कार्यरत सभी महिला कार्मिकों को वस्तुरूप में मोमेंटो भी भेंट किए गए।

उद्योगमंडल यूनिट

8 मार्च 2021 को वनिता दिवस समारोह आयोजित किया गया। विप्स की वरिष्ठ महिलाओं को यूनिट प्रमुख श्री प्रमाद डी संकपाल की कर कमलों से मेमन्टो श्रीमती कुमारी आन्टणी, मानव संसाधन विभाग को प्रदान किया गया। मेमन्टो स्वीकार करती हुई श्रीमती कुमारी आन्टणी, मानव संसाधन और प्रशासन विभाग

꧁ हिल (इंडिया) लिमिटेड उद्योगमंडल यूनिट में विश्व हिंदी दिवस 2021 का आयोजन ꧂

हिल (इंडिया) लिमिटेड उद्योग मंडल में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। 10 जनवरी, 2021 को साप्ताहित अवकाश होने के कारण अगले कार्य दिवस 11.10.2021 को विश्व हिंदी दिवस मानाया। यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी. संकपाल की अध्यक्षता में अपराह्न 2.30 बजे कैंटीन हॉल में समारोह संपन्न हुआ। उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा स्वागत किया गया तथा यूनिट प्रमुख के अध्यक्षीय भाषण के साथ कार्यक्रम आरंभ किया गया। इस अवसर पर उन्होंने हर प्रतिदिन हिन्दी भाषा के विकास और प्रगति के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी। राजभाषा और राष्ट्रभाषा विषय पर संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

इस समारोह में श्रीमती एस. जानकी, प्रबंधक (राजभाषा), आर आर ई एल (इंडिया) लिमिटेड को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। उन्होंने विश्व हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर यूनिट में विशेष कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इसके दौरान हिन्दी भाषा के विश्व की भाषा और प्रयोग एवं प्रगति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। देश–विदेशों में हिन्दी भाषा के सफलतापूर्वक विकास के प्रयत्न के संबंध में चर्चा की। भाषा के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए सरल हिन्दी का प्रयोग, विदेशी भाषा शब्दों को अपनाने की आवश्यकता पर जानकारी दी गयी। उन्होंने जोड़ दिया कि हिन्दी भाषा का विकास साहित्य के साथ राजभाषा के रूप में कार्यालयों में और राष्ट्रभाषा के रूप में देश में आगे बढ़ जाता है।

उप प्रबंध (राजभाषा) ने सभी को धन्यवाद अदा किया। सायं 5 बजे को समारोह समाप्त हुआ।

विश्व हिंदी दिवस पर कार्मिकों को संबोधित करते यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी संकपाल

संगोष्ठी का संचालन करती हुई श्रीमती जानकी एस. प्रबन्धक (राजभाषा) आर.आर.ई.एल. (इंडिया) लिमिटेड, उद्योगमंडल

हिल में राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं संगोष्ठी

राजभाषा संगोष्ठी

हिल (इंडिया) लिमिटेड के नई दिल्ली स्थित निगमित कार्यालय में हिन्दी के प्रचार–प्रसार हेतु दिनांक 18.12.2021 राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि–सह–वक्ता के रूप में उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के उपनिदेशक (कार्यान्वयन) श्री कुमार पाल शर्मा आमंत्रित किया गया था।

राजभाषा संगोष्ठी एवं तकनीकी कार्यशाला

हिल (इंडिया) लिमिटेड के नई दिल्ली स्थित निगमित कार्यालय में राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्र में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 22.03.2021 को राजभाषा संगोष्ठी एवं तकनीकी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि–सह–वक्ता के रूप में राजभाषा विभाग के पूर्व तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण जी को आमंत्रित किया गया था।

नराकास के तत्वावधान में आयोजित दोहा पाठ प्रतियोगिता

हिल (इंडिया) लिमिटेड के निगमित कार्यालय द्वारा नराकास, दिल्ली (उपक्रम–2) के तत्वावधान में दिनांक 30.03.2021 को सभी सदस्य उपक्रमों के लिए दोहा पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें विभिन्न उपक्रमों में से 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया था। इस कार्यक्रम की सभी प्रतिभागियों ने बहुत सराहना की। विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार देने के साथ–साथ सभी प्रतिभागियों को वस्तु रूप में प्रोत्साहन प्रदान किए गए।

नराकास (उपक्रम–2), दिल्ली तत्वावधान में हिल (इंडिया) लिमिटेड द्वारा आयोजित दोहा पाठ प्रतियोगिता के दौरान लिया गया समूह चित्र

कार्यक्रम की झलकियां

दोहा पाठ प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण

प्रथम पुरस्कार

द्वितीय पुरस्कार

तृतीय पुरस्कार

प्रोत्साहन पुरस्कार

प्रोत्साहन पुरस्कार

राजभाषा निरीक्षण

रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग के उपनिदेशक (राजभाषा) श्री राकेश कुमार एवं अन्य अधिकारी द्वारा हिल (इंडिया) लिमिटेड के प्रधान कार्यालय का हिन्दी की प्रगति संबंधी निरीक्षण किया गया। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा निरीक्षण दल को पुस्तक भेंट कर सम्मानित किया गया।

हिल (इंडिया) लिमिटेड, प्रधान कार्यालय द्वारा कंपनी महाराष्ट्र स्थित रसायनी यूनिट का राजभाषा की प्रगति संबंधी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान 'राष्ट्र के समर्थन में हिंदी की भूमिका' विषय पर हिंदी संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। जिसमें यूनिट प्रमुख, उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्र.), निरीक्षण अधिकारी के साथ-साथ अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

देश के विभिन्न प्रदेशों में किसानों को प्रशिक्षित करने के उद्देय से एकीकृत
हिल (इंडिया) लिमिटेड द्वारा आयोजित किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा ि

समृद्धि हेतु सुरक्षा

कीट प्रबन्धन, कीटनाशकों के विवेकपूर्ण उपयोग आदि विभिन्न विषयों पर किसाना मेलों में हिल की प्रतिभागिता और डीलरशीप मीटिंग की झलकियां।

सेवानिवृत्ति/स्वेच्छा सेवानिवृत्ति एवं त्याग पत्र के अवसर पर हिल (इंडिया) लिमिटेड परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है। (दिनांक अक्टूबर, 2020 से मार्च, 2021 तक सेवानिवृत्त/स्वेच्छा सेवानिवृत्त/त्याग पत्र अधिकारी एवं कर्मचारी)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	तैनाती स्थान
1.	श्री एस.एन. नान्दल	सहायक प्रबन्धक (प्रशासन)	निगमित कार्यालय
2.	श्रीमती शिवा शर्मा (त्याग पत्र)	अभियंता (सुचना प्रौद्योगिकी)	निगमित कार्यालय
3.	श्रीमती उपासना मिश्रा (त्याग पत्र)	विपणन अधिकारी (समन्वय)	निगमित कार्यालय
4.	श्री सुदेश कुमार	कनिष्ठ सहायक	निगमित कार्यालय
5.	श्री सग्गन राम	कनिष्ठ सहायक	निगमित कार्यालय
6.	श्री प्रकाश प्रभाकर कुलकर्णी	प्रवेक्षक (इन्स्ट्रुमेंट)	रसायनी यूनिट
7.	श्री चंद्रकांत आधार खोंडे	फिटर श्रेणी–I	रसायनी यूनिट
8.	श्री विट्ठल सदाशिव तुपे	फोरमैन फिटर	रसायनी यूनिट
9.	श्री अमृत सुदाम जुईकर	फोरमैन फिटर	रसायनी यूनिट
10.	श्री विजय तुकाराम वासनिक	रसायन प्रचालक श्रेणी– I	रसायनी यूनिट
11.	श्री मधुकर पांडुरंग महाडिक	इलेक्ट्रिशियन श्रेणी– I	रसायनी यूनिट
12.	श्री हरिश्चंद्र पंढरीनाथ सारंग	प्रचालक ग्रेड– I (वि.श्रेणी)	रसायनी यूनिट
13.	श्री विनायक मधुकर चंदन	फोरमैन फिटर	रसायनी यूनिट
14.	श्री रामचंद्र नारायण ठाकुर	फोरमैन मशीनिष्ट	रसायनी यूनिट
15.	श्री नितिन अनंत म्हात्रे	प्रचालक श्रेणी– I	रसायनी यूनिट
16.	श्री जयेंद्र वी. करड़े	प्रचालक श्रेणी– I	रसायनी यूनिट
17.	श्री ज्योत्सना चंद्रकांत कनाड़े	वरिष्ठ सहायक (वि.श्रेणी)	रसायनी यूनिट
18.	श्री दिलीप तुकाराम चेरकर	प्रचालक श्रेणी– I	रसायनी यूनिट
19.	श्री गणु जानू बरवी	प्रचालक श्रेणी– I	रसायनी यूनिट
20.	श्री विलास कृष्णा ठाकुर	प्रचालक श्रेणी– I	रसायनी यूनिट
21.	श्री अशोक महादेव सालुंके	प्लंबर श्रेणी– I	रसायनी यूनिट
22.	श्री खुशी राम	फिटर ग्रेड– I	बठिंडा यूनिट
23.	श्री राम नरेश	ऑपरेटर ग्रेड– I	बठिंडा यूनिट
24.	श्रीमती सरस्वती शर्मा	वरिष्ठ सहायक (विशेष) (ई–ग्रेड)	बठिंडा यूनिट
25.	श्री ब्रहमानन्द	फिटर ग्रेड– I	बठिंडा यूनिट
26.	श्री अंबिनाथन पिल्लै	एलएमओ	उद्योगमंडल यूनिट
27.	श्रीमती लता एस नायर	सहायक अधिकारी (क्रय)	उद्योगमंडल यूनिट
28.	श्री के डी जोर्ज	सहायक प्रबंधक (प्रशासन)	उद्योगमंडल यूनिट

29.	सुश्री रेखा के के	सहायक (विशेष श्रेणी)	उद्योगमंडल यूनिट
30.	श्री ए. चक्रवर्ती	उप विपणन प्रबन्धक	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (कोलकाता)
31.	श्री प्रहलाद राय	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (कोलकाता)
32.	श्री गोबिन्द कर्माकर	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (कोलकाता)
33.	श्री एस. मरीयप्पण	उप विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (बंगलुर)
34.	श्री मोहित कान्तिलाल बोरसानिया	सहायक प्रबन्धक विपणन	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (अहमदाबाद)
35.	श्री आनन्द कुमार सिंह	उप विपणन प्रबन्धक	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (उत्तर)
36.	श्री एम.आर. सी. रेड्डी	प्रबन्धक (बीज उत्पादन)	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (हैदराबाद)
37.	श्री बी. हुसैन	विपणन अधिकारी (एफ.टी.बी)	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (हैदराबाद)
38.	श्री ए. रमेश	उप विपणन प्रबन्धक	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (हैदराबाद)

हिल (इंडिया) लिमिटेड परिवार में शामिल होने पर निम्नलिखित नए कार्मिकों का स्वागत है।

क्र.सं.	नाम	पदनाम	तैनाती स्थान
1.	श्री महेन्द्र सिंह	महाप्रबन्धक (तकनीकि)	निगमित कार्यालय
2.	श्री सुनील गौड़	उप महा प्रबन्धक (मा.सं.एवं प्र.)	निगमित कार्यालय
3.	श्री राज नारायण चंद्र	वित्त प्रबन्धक	निगमित कार्यालय
4.	श्रीमती मधुस्मिता सस्माल	सहायक विपणन प्रबन्धक	निगमित कार्यालय
5.	श्रीमती अंकिता काबरा	अधिकारी (लेखा)	निगमित कार्यालय
6.	सुश्री रूचि बिष्ट	अधिकारी (राजभाषा)	बठिंडा यूनिट
7.	श्री के. सतीश कुमार	सहायक प्रबंधक (सिविल)	रसायनी यूनिट
8.	श्री धर्मेश बाजपेयी	अभियंता (सूचना प्रौद्योगिकी)	रसायनी यूनिट
9.	श्री सुनील कुमार त्रिपाठी	उप प्रबन्धक विपणन	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (कोलकाता)
10.	श्री सिद्धार्थ प्रकाश त्रिपाठी	सहायक विपणन प्रबन्धक	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (बेंगलुरू)

आपकी पाती

कोल इंडिया लिमिटेड

COAL INDIA LIMITED
(A Government of India Undertaking)
(A Maharatna Company)

दिनांक: 19.07.2021

सेवा में

पी. डी. सिंह

विषय: हिल (इंडिया) लिमिटेड की गृह पत्रिका 'रक्षक' के अंक-9 का प्रेषण।

महोदय,

भवदीय,

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र

Rashtriya Ispat Nigam Limited
Visakhapatnam Steel Plant
(A Government of India Undertaking)
Regional Office (North)

सेवा

हिल (इंडिया) लिमिटेड

भवदीय
दीपक कुमार सिन्हा

Atul Sobti
Director General

SCOPE

स्कोप /डीजी /2021
28 जुलाई 2021

महोदय,

हिल (इंडिया) लिमिटेड की हिंदी गृह पत्रिका 'रक्षक' के अंक- 9 की प्रति श्री पी. डी. सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मा. सं. एवं प्र.) के द्वारा प्राप्त हुई। पत्रिका भिजवाने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख व कविताएं बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

हिल (इंडिया) लिमिटेड राजभाषा हिंदी के प्रसार के लिए बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहा है।

आगामी अंको के लिए स्कोप की ओर से बहुत बहुत शुभकामनाएँ।

सादर,

भवदीय,

(अतुल सोबती)

डॉ. एस. पी. मोहन्ती
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक
हिल (इंडिया) लिमिटेड
नई दिल्ली

STANDING CONFERENCE OF PUBLIC ENTERPRISES

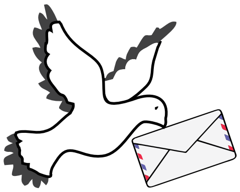

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(पूर्व में हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड)
(भारत सरकार का उद्यम)
सीआइएन यू24211डीएल1954जीओआई002377

समृद्धि हेतु सुरक्षा

PROTECT TO PROSPER

कृषि रसायन

हिलक्रॉन 36 एस एल
(मोनोक्रोटोफॉस)

हिलमाला 50 ई सी
(मैलाथियॉन)

हिलबान 50 ई सी
(क्लोरपाइरिफॉस)

हिलवॉस 76 ई सी
(क्लोरपाइरिफॉस)

हिलफेट 75 एस पी
(एसिफेट)

हिलस्टार 25 डब्ल्यू जी
(थियामेथोक्सेम 25% डब्ल्यू जी)

हिलफॉस प्लस
(प्रोफेनो + साइपर)

हिलब्लेज़ 25% एस सी
(बूप्रोफ्रेज़िन 25% एस सी)

हिलजेंट
(फिप्रोनिल जी आर)

हिलमिडा
(इमिडाक्लोप्रिड)

हिलसाइप्रिन 10 ई सी
(साइपरमेथ्रिन)

हिलसाइप्रिन 25 ई सी
(साइपरमेथ्रिन)

हिलप्रिड 20 एस पी
(एसीटेमिप्रिड)

हिलहन्टर
(क्लोपाइरिफॉस 50% + साइपरमेथ्रिन 5% ई सी)

हिलकार्टेप
(कार्टेप 4 जी आर)

हिलजाफॉस
40 ई सी (ट्राईजोफॉस)

हिलफॉस 50 ई सी
(प्रोफेनोफॉस)

हिलकार्टेप 4 जी
(कार्टेप हाइड्रोक्लोराइड)

हिलाम्बदा 5 ई सी
(लाम्बदा – साइहैलोथ्रिन)

हिलाम्बदा 2.5 ई सी
(लाम्बदा – साइहैलोथ्रिन)

खरपतवारनाशी

हिलप्रेटी 50 ई सी
(प्रेटिलाक्लोर)

हिलपेंडी 30 ई सी
(पेंडीमेथलीन)

हिलटाक्लोर
(बुटाक्लोर 50 ई सी)

त्रिनाशी 41 एस एल
(ग्लाईफोसेट)

फफूंदनाशी

हिलसल्फ 80 डब्ल्यू डी जी
(सल्फर 80% डब्ल्यूजी डी जी)

हिलथेन एम 45
(मैंकोजेब 75 डब्ल्यू पी)

हिलकॉपर 50 डब्ल्यू पी
(कॉपर ऑक्सीक्लोराइड)

हिलनेट 75 डब्ल्यू पी
(थाइफिनेट मिथाइल)

हिलजिम 50 डब्ल्यू पी
(कार्बनडेजिम)

हिलजोल पॉवर 5% एस सी
(हैक्साकोनाजोल)

हिलमिल
(मैंकोजेब 63% + मेटालेक्सिल 8%)

हिलपंच
(मैंकोजेब 63% + कार्बनडेजिम 12%)

हिलब्लास्ट 75 डब्ल्यू पी
(ट्राइसाईक्लोज़ोल)

जन स्वास्थ्य

डी.डी.टी.
मैलाथियॉन तकनीकी
मैलाथियॉन डब्ल्यू पी
एल.एल.आई.एन.

बीज

धान
गेहूँ
चना
मसूर
मूंग
उड़द
अरहर
सोयाबीन
सरसों
मूंगफली
हाब्रिड मक्का
चारा फसलें – जई, बरसीम

सब्ज़ियों के बीज

फ्रेंच बीन
ओ.पी. एवं हाइब्रिड ओकरा
धनिया
भिंडी
मूली
पालक

उर्वरक

यूरिया
एस.एस.पी.
डी.ए.पी.
एम.ओ.पी.
एन.पी.के. (19:19:19)
एन.पी.के. (13:0:45)
बेंटोनाइट सल्फर
कैल्शियम नाइट्रेट

टेक्निकल्सः मोनोक्रोटोफॉस, मैलाथियॉन, एसिफेट, मैंकोजेब, इमिडाक्लोप्रिड
बुप्रोफेज़िन, क्लोरपाइरिफॉस, पेंडीमेथलीन, ग्लाईफोसेट

कीटनाशक के सुरक्षित एवं विवकपूर्ण उपयोग पर प्रशिक्षण

हिल (इंडिया) लिमिटेड
स्कोप कॉम्पलेक्स, कोर–6, द्वितीय तल, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली – 110003 (भारत), दूरभाषः 011–24361019, 24362100
www.hil.gov.in

समृद्धि हेतु सुरक्षा

उद्देश्य

किसानों को पेस्टिसाइड्स की एक विशाल विविधता प्रदान करने के लिए उत्पाद प्रोफाइल का विस्तार करना।

कृषि समुदाय के लिए तीन क्षेत्रों अर्थात कृषि रसायन, बीज और उर्वरकों की एक पूर्ण बास्केट प्रदान करना।

दूरदर्शिता

जनस्वास्थ्य एवं फसल संरक्षण के क्षेत्र में एक अग्रणी प्रतिस्पर्द्धक बनना।

गुणवत्ता नीति

- सरकार के जन-स्वास्थ्य/फसल संरक्षण कार्यक्रमों को बल प्रदान करना।
- पेस्टिसाइड्स के उचित प्रयोग को उन्नत करना।
- कार्मिक उत्पादकता में सुधार लाना।
- कार्मिक सहभागिता को प्रोत्साहित करना।
- कार्मिकों में सुरक्षा जागरूकता बढ़ाना।

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(पूर्व में हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड)
(भारत सरकार का उद्यम)

निगमित कार्यालय

स्कोप काम्पलैक्स, कोर-6, द्वितीय मंजिल, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
दूरभाष: 24362100, 24361107, फैक्स: 24362116
ई-मेल: headoffice@hil.gov.in वेबसाइट: www.hil.gov.in

ADWIT INDIA PRIVATE LIMITED